ॐ

साहित्य-परिषद्-ग्रन्थमालाका चौथा ग्रन्थ

महावीर गेरीवाल्डी

लेखक

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति

प्रकाशक

साहित्य-परिषद गुरुकुल-विश्वविद्यालय
कांगड़ी

सम्पादक

श्री पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार

(प्रथमवार १०००) संवत् १९७८ (मूल्य १)

प्रकाशक—
साहित्य-परिषद्
गुरुकुल विश्वविद्यालय
काङ्गड़ी

मुद्रक—
दुर्गाप्रसाद
आदर्श प्रेस, सप्त
बनारस सि

ॐ

महावीर गेरीवाल्डी

विषय सूची

	विषय.	पृष्ठ संख्या
प्रस्तावना		छ-झ

पहला भाग

स्वाधीनताकी अभिलाषा

दूसरा भाग

स्वाधीनताके लिये यत्न

तीसरा भाग

स्वाधीनताकी लब्धि

निवेदन

गुरुकुल विश्वविद्यालयकी साहित्य परिषद्का नाम अब हिन्दी जगत् में अपरिचित नहीं है। उसकी ओरसे निकाली हुई साहित्य परिषद् ग्रन्थमाला की तीन पुस्तकें हिन्दी साहित्य प्रेमियोंके सन्मुख उपस्थित की जा चुकी हैं। आज हम इसी ग्रन्थमालाकी चतुर्थ पुस्तक 'महावीर गेरीबाल्डी' हिन्दी संसारके सन्मुख उपस्थित करने लगे हैं। इसके लेखक उक्त विश्वविद्यालयके योग्य स्नातक श्रीयुत पण्डित इन्द्र विद्या वाचस्पति, भू० पू० सम्पादक 'विजय', हैं। जिन महानुभावों ने *'नैपोलियन बोनापार्ट* तथा *'प्रिंस बिस्मार्क'* के जीवन चरित्रों ..पढ़ा है वे उनकी मार्मिक लेखनशैली से भली भाँति परिचित हैं। प्रस्तुत पुस्तक भी उन्हीं की लेखनी की लीला है।

इस समय जिस वेगसे हिन्दी साहित्यकी उन्नति हो रही है उसका अनुमान नहीं किया जा सकता। इस समय जहाँ अनेक उत्तम २ पुस्तकोंके अनुवाद हिन्दी भाषामें प्रकाशित हो रहे हैं। वहाँ मौलिक पुस्तकोंका निकलना भी अत्यन्त

आवश्यक है। इन बातोंको ध्यानमें रखते हुए हमने इस 'समयोपयोगी' पुस्तकको प्रकाशित किया है। आशा है कि इस पुस्तकको हिन्दी संसार अपना कर हमारा उत्साह बढ़ाएगा।

अन्तमें हम श्री पण्डित जयदेव शर्मा विद्यालंकारको हार्दिक धन्यवाद देते हैं जिन्होंने इस पुस्तकके प्रकाशित कराने में हर प्रकारकी सहायता प्रदान कर सभाको अनुगृहीत किया है।

गुरुकुल विश्वविद्यालय
काङ्गड़ी
बसन्तपञ्चमी १९७८ वि०

बंशीधर
मंत्री—
साहित्य परिषद्

प्रस्तावना

गेरीवाल्डीकी जीवनीके मिससे इटलीकी स्वाधीनताका इतिहास सुनानेके लिये किसी युक्ति या बहानेकी आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। गेरीवाल्डीकी जीवनी ही इतिहासकी स्थिर कविता है और इटलीकी स्वाधीनताका इतिहास मनुष्य जातिके उन्नति-पथका एक प्रसिद्ध पड़ाव है। जब तक लोग स्वाधीनताका आदर करेंगे, जब तक संसार वीरताको पूजाकी दृष्टिसे देखता रहेगा, तब तक लेखक भी गेरीवाल्डी और इटलीकी स्वाधीनताको कथाएं लिखकर अपनी लेखनीको पवित्र करते रहेंगे।

स्वाधीनताके गीत गाना बहुत सहल है, परन्तु उसे पाना, लुटी हुई स्वाधीनताको फिरसे हस्तगत करना, बहुत ही कठिन है। स्वाधीनताकी देवी अनगिनत बलिदान चाहती है। यह आवश्यक नहीं कि वह बलिदान एक ही ओरसे हों। दोनों ओरसे बलिदान होनेके अनन्तर ऐसा अवसर उपस्थित होता है कि यदि जाति स्वाधीनताकी प्रबल अभिलाषा रखे

तो उसे प्राप्त कर सके। गेरीवाल्डी स्वाधीनताका पुजारी था। उसने जहाँ एक ओर पूज्या देवीके चरणोंमें अपनी ओर से अनेक बलियाँ भेंटकीं, वहाँ साथ ही शत्रुके पक्षसे भी हज़ारों सीस लाकर चरणोंपर रख दिये। ऊँचा उद्देश्य हो, हृदयमें सचाई हो, स्वार्थका लेश न हो, ऐसी दशामें जो वीर नेता मातृ-भूमिकी स्वाधीनताकी वेदीपर स्वपक्ष और विपक्षकी बलियाँ चढ़ानेका सामर्थ्य रखता है, वही जातिका उद्धार कर सकता है। जिस बहादुर मुखियामें यह शक्ति है कि वह एक ललकार से अपने देशकी मुर्दा आत्माओंको सचेत कर सके, उनमेंसे जो चिड़ियाँकी शक्ति भी नहीं रखते, उन्हें वीर बनाकर भयंकर बाजोंसे भिड़ा सके, अपने प्राणोंको तृण सदृश मानकर दुनियाँ को दिखा सके कि आदर्शके लिये जोना और आदर्शके लिये मरना किसे कहते हैं, वही, बस एक वही, बहादुर मुखिया देशके शरीरपर बँधी हुई जंज़ीरोंको काट सकता है, दूसरा नहीं। गेरीवाल्डी ऐसा बहादुर मुखिया था। उसका जीवन निःस्वार्थता और बहादुरीके शास्त्रका एक आवश्यक अध्याय है। जो देश स्वाधीनताके प्यासे हैं, उनके लिये वह शीत सरोवरकी राह दिखानेका एक निर्देश स्तम्भ है, और जो देश औरोंकी स्वाधीनता छीनकर प्रमादमें पड़े हैं, उनके लिये वह 'सावधान' कर देनेका इशारा है। न अत्याचार आस्ट्रिया-ने समाप्त कर दिये हैं, और नाहीं वीरसू वसुन्धराकी कोख गेरीवाल्डीने उत्पन्न होकर रिक्त ही कर दी है। जब तक

मैटर्निच पैदा हो सकते हैं, तब तक मेज़िनी और गेरीवाल्डी भी उत्पन्न हो सकते हैं। जो लोग समझते हैं कि भूमाता वीरोंसे बाँझ हो गयी, वे गेरीवाल्डीके जीवनको पढ़ें। यदि वह स्वाधीनताके प्यासे हैं तो उन्हें आशाका जल मिलेगा, और यदि वह दूसरोंकी स्वाधीनताका कलेवा किये बैठे हैं तो उन्हें एक उपदेश और इशारा मिलेगा, जिसे समझकर वह दुर्दैवके उन थपेड़ोंसे बच सकेंगे, जिन्होंने आस्ट्रियाका मानमर्दन करके बतला दिया है कि—

अधर्मेणैधते तावत् ततो भद्राणि पश्यति।
ततः सपत्नान् जयति समूलस्तु विनश्यति॥

पापी पुरुष या देश पापके बलसे बढ़ता है, ऐश्वर्य प्राप्त करता है और शत्रुओंको भी जीत लेता है।

परन्तु अयु सांसारिक पुरुषो! मत समझो कि उसका गौरव स्थिर रहता है। आख़िर समय आता है कि उसे नीचा देखना पड़ता है और वह जड़ मूलसे नष्ट हो जाता है।

गुरुकुल कांगड़ी
मकरसंक्रान्ति १९७८ वि० } ग्रन्थकर्ता

पहला भाग

स्वाधीनताकी अभिलाषा

* ओ३म् *

पहला परिच्छेद

आदर्श

"वृत्तं हि महतां महत्" ।

महापुरुषोंके चरित भी महान् होते हैं ॥

मृत्यु और यशमें विशेष सम्बन्ध समझा जाता है। जैसे आग अनेक रंगोंकी लकड़ी आदिको जलाकर एक रंगकी राख बना देती है, ऐसे ही मृत्यु भी प्रायः भेदोंको बहुत कुछ नष्ट करके सबको एक साँचेमें ढाल देती है। बुरे आदमियोंके परिचित लोग भी एक लम्बा सांस खेंचकर कहते हैं कि 'आख़िर उसमें गुण भी तो थे ही'; 'बेचारा भला ही था'। मृत्युके पीछे कुछ समयके लिये कीर्ति टके सेर मिल जाती है, किन्तु जीवन कालमें वह आनेसे लजाती है मनिनी महिलाकी भाँति उसे प्रकाशकी दशामें किसीको वरते संकोच होता है। मृत्युके अँधेरेमें उसे सामान्य-व्यक्ति भी पा सकता है। ऐसे प्राणी

विरले ही होते हैं, जिन्हें जीवित दशामें ही कीर्ति प्राप्त हो जाती है। ऐसी जननीकी कोख धन्य है जिसका पुत्र जीता हुआ अकलङ्कित-यशका भागी बने। ऐसी जाति सौभाग्य शालिनी है, जिसे ऐसा नर-रत्न प्राप्त हो। विशेष चमकीले गुणोंसे और विशेष अनुकूल दैवसे ही ऐसा सौभाग्य मिल सकता है, अन्यथा नहीं।

जिस पुरुषरत्नका जीवन आज हम लिखने बैठे हैं, वह ऐसा ही सौभाग्य शाली व्यक्ति था। वह उन महापुरुषोंमें से था जिन्हें जीते जी शहीद होनेका सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। असीम साहस और अतुल पराक्रमके कारण इटलीके देशभक्तोंमें वह देवताकी तरह पूजा जाता था; उसके एक गम्भीर वीरगर्जनको सुनकर वे लोग भी तलवारें खेंच लेते थे जिन्होंने जन्म भर कलमके सिवाय हाथमें कुछ नहीं पकड़ा। मिट्टीके पुतलोंमें रूह फूँकना यदि किसी मनुष्यके हाथमें हो सकता है तो वह गेरीवाल्डीके हाथमें था। इस शक्तिको सहायतासे उसने जो कार्य किया उसकी कहानी कहना इस पुस्तकका एक उद्देश्य है। उसके जिन कार्योंने उसे कीर्ति दी, यश दिया, मान प्रतिष्ठा दी, जीते जी इटली-से भिन्न देशोंमें उसे देवताकी भाँति पुजवाया उन कार्यों-का सविस्तर वर्णन करनेके लिये आज हमने लेखनी उठाई है। किन्तु इतना ही उद्देश्य लेकर हम प्रवृत्त नहीं हुए। कुछ

और भी रहस्य है, जिसे हम इस जीवन चरितमें खोलना चाहते हैं। गेरीवाल्डीमें इतना साहस क्यों था? उसकी इतनी निर्भयताका कारण क्या था? कौन सी ऐसी शक्ति थी जो उसे असम्भव कार्यको सम्भव कर दिखानेके लिये प्रेरित करती थी? जब हम उसके जीवनपर विचार करते हैं तो केसरी हमें कायर प्रतीत होने लगता है—गेरीवाल्डीके जीवनमें ऐसा महत्व किस हेतु आया? इस प्रश्नके उत्तरका रहस्य खोलना भी इस जीवनीका लक्ष्य है।

गेरीवाल्डीका जीवन वस्तुतः एक आदर्श जीवनका नमूना है—आचार शास्त्रका एक सजीव अध्याय है। संसारमें अनूठे पुरुषोंका जैसा चरित होना चाहिये—और जैसा चरित इतिहासके पृष्ठोंमें इने गिने पुरुषोंका ही मिलता है गेरीवाल्डीका चरित वैसा ही है। नैपोलियन बड़ा वीर था किन्तु स्वार्थकी मात्रा उसके महत्वपर काला धब्बा लगा देती है। जो वीरता स्वार्थसे रहित है वह कहीं कहीं पायी जाती है। वह दुर्लभ है, किन्तु जहां कहीं वह मिल जाय, उस पुरुषको देवता कहना चाहिये। कृतकार्यतामें स्वार्थके उत्पन्न करनेकी बड़ी शक्ति है। जो पुरुष बड़ा निःस्वार्थ होकर कार्य क्षेत्रमें प्रविष्ट होता है, कृतकार्यता पिशाचोंके आते ही प्रायः चुपकेसे स्वार्थ और आत्मचिन्तन भी उसके अन्दर घुस आते हैं। इस स्वार्थ चोरने न जाने कितने पुरुषों-

को देवता बनते बनते असुरोंकी कोटिमें पहुँचा दिया; न जाने कितने देशभक्त नैपोलियनोंको सम्राट नैपोलियन बनाकर हत्यारे नैपोलियनके रूपमें परिवर्तित कर दिया। वे नर-रत्न वस्तुतः ईश्वरीय शक्तिसे प्रेरित होकर संसारमें आते हैं, जिनके हृदय-द्वारमें कृतकार्यताके पीछे २ स्वार्थ नहीं घुसने पाता। गेरीवाल्डी उन्हीं नर रत्नोंमें से एक है। कहते हैं कि अनाज का दाना स्वयं मर जाता है और बीसियों गेहुओं-को प्राण दान दे जाता है। इसे स्वार्थत्यागकी पराकाष्ठा कहते हैं। किन्तु क्या यह वस्तुतः पराकाष्ठा है? जब मिट्टीमें डाल दिया गया तो सिवा मरनेके गेहूंके पास चारा ही क्या है? वस्तुतः स्वार्थत्यागी है वह प्राणी जो जीना चाहे तो जी सके, किन्तु फिर भी एक ऊंचे लक्ष्यके लिये जीनेसे बारम्बार हाथ धोनेको तैयार हो। गेरीवाल्डी उसी प्रकार-का स्वार्थ त्यागी था। उसकी कृतकार्यताका यह उत्तम और उपादेय रहस्य है।

किन्तु क्या हर एक पुरुष ऐसा स्वार्थ त्यागी बन सकता है? बड़ी अच्छी शिक्षा पाया हुआ भी पुरुष अनेक यत्न करने-पर स्वार्थको सर्वथा नहीं भुला सकता। आत्माकी याद उसे बारबार तंग करती रहती है। बड़े धार्मिकके लिये भी अपने आपको भुलाना दुष्कर है। अपना आप भूल जाय इसके लिये कोई और भाव अपने आप से भी अधिक पास

और अधिक प्यारा होना चाहिये। जब तक हृदयमें अपने-से भी प्यारी एक लगन नहीं—और एक नहीं-तब तक अपने आपको भूलना असम्भव है। उसे आप लक्ष्य कहिये-उद्देश्य कहिये-या आदर्श कहिये-यदि वह सन्मुख नहीं, तो अपना आप नहीं भूलता। स्वार्थत्यागी वही पुरुष हो सकता है जो किसी दूसरे भाव या पदार्थके पीछे दीवाना हो जाय। ऐसे पुरुष-को अपनी सुधबुध नहीं रहती। गेरीवाल्डीने स्वार्थको सर्वथा तिलाञ्जलि दे रखी थी, उसका कारण यही था कि उसके सामने एक ऊंचा लक्ष्य था, एक भारी उद्देश्य था, जिसकी ओर टिकटिकी लगाए वह रात दिन आगेही बढ़ता जाता था। अपने तनकी उसे सुध न थी, धन किसे कहते हैं—यह उसे ज्ञात ही न था, यदि सहधर्मिणी उसे प्यारी थी तो इसी लिये कि वह अपने उद्देश्यसाधन में सहायक हो और योग्य सन्तान पैदा करे। गेरीवाल्डीका सर्वस्व एक ही वस्तुके अर्पण था एक ही वस्तुपर बलिदान था—और वह वस्तु थी

"इटली की स्वाधीनता।"

गेरीवाल्डी स्वाधीनता देवीका उपासक था-और मातृ-भूमिका सच्चा पुत्र था। उसने होश सँभाल कर चारों ओर नज़र दौड़ायी तो अपनी मातृभूमिको विदेशियोंके लोहेदार जूतोंके तले कुचले जाते हुए देखा। उसके शुद्ध और तेजस्वी

आत्माको यह सह्य न हो सका। उसके अन्दर प्रेम, करुणा, जोश, साहस, ईश्वर प्रेम आदि जितने गुण थे, वे सब एकही गुण,—"मातृभूमिके प्रति भक्ति" के दास हो गये। एक व्यापी-भावने अन्य सब न्याय्य गुणोंको दबा दिया, किन्तु मार कर नहीं—अपितु अपने लिये सहायक बनाकर। एक लक्ष्य और एक उद्देश्य पाकर महावीर गेरीवाल्डीकी समस्त शक्तियाँ अपने उग्ररूपके कारण असह्य हो उठीं और छोटे मोटे राजाओंका तो कहना ही क्या, अभिमानी आस्ट्रियाका साम्राज्य भी भयभीत हो काँपने लगा।

गेरीवाल्डीकी मातृभूमि-भक्ति एक कर्मण्य भक्ति थी। आलसी और प्रमादी लोगोंकी भाँति थोथी--भक्ति, स्वार्थी लोगोंकी भाँति व्यापार-भक्ति या बहुपठित लोगोंकी भाँति शाब्दिक-भक्तिका वह माननेवाला नहीं था। उसकी भक्ति आगके समान थी--जो आधेको जलाना नहीं जानती। तन मन धन—सभी कुछ उस अग्निमें भस्मसात् हो गया था—कुछ भी शेष नहीं बचा था। जो मनुष्य एक भाव या एक वस्तुके पीछे भस्मसात् हो जाता है, उसका जीवन पवित्र और प्रातःस्मरणीय हो जाता है। उसके नाम के साथ महान् शब्द न लगे, उसका जीवनचरित सीज़र और सिकन्दरके जीवनचरितोंका सा बड़ा न हो, किन्तु उसका अनुभाव, उसकी पवित्रता और उसका महत्व अनुपमेय होता है—अपूर्व

होता है। गेरीवाल्डीका चरित्र एक आदर्श--भक्त का—एक आदर्श-प्रेमी का चरित्र है। हे भारत के देशभक्तो! यूरोप-के व्यापार भक्तोंका अनुकरण छोड़कर, सच्चे भक्त गेरीवाल्डी के पदानुगामी बनो। स्वार्थसे सने हुए देश प्रेमका पाठ छोड़ कर स्वार्थत्याग--युक्त देशभक्ति की माला जपो और आराम-कुर्सीको देशभक्तिका पाठ पढ़ाना छोड़कर कार्यके मैदानमें ख़म ठोक कर आओ, तभी मातृभूमिके दुःख दूर होंगे और तभी हमारी आशाएँ पूर्ण होंगी।



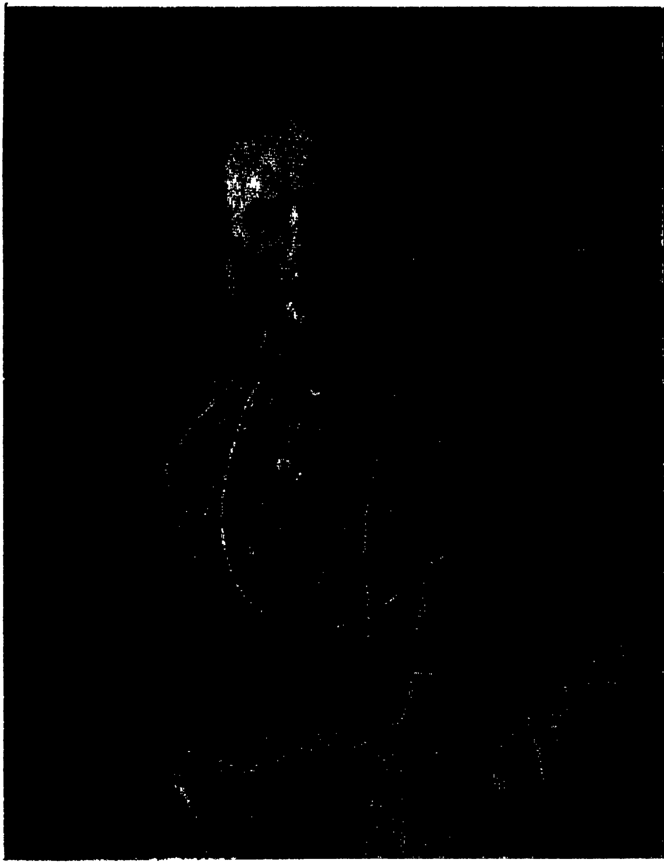
दूसरा परिच्छेद

सूर्योदय

जगनिवास प्रभु परगटे, अखिल लोक विश्राम।"

(तुलसी)

इटलीमें नाईस नामका एक नगर है, जो देशके एक छोरपर होनेके कारण कई हाथोंमें घूम चुका है। पहले वह इटालियन लोगोंके पास था, फिर उसपर टर्कीके बेड़ेने धावा किया। फ्रेंच वीरोंने उसे दो बार सर किया और नैपोलियनके पीछे वह सार्डिनियाकी रियासतके अधीन हो गया। एक विलक्षण चरित्र वाले महापुरुषकी जन्म-पुरीमें जैसी विलक्षणता होनी चाहिये, वह नाईसमें विद्यमान थी। उस नगरीमें 'डोमनिको गेरीवाल्डी नामका एक भद्र पुरुष रहता था, जो समुद्रकी यात्राओं द्वारा आजीविका किया करता था। १८०७ ईस्वीके जुलाई मासकी २२ वीं तारीखके दिन उस भद्र पुरुषके घरमें एक बालकने जन्म लिया, जिसका नाम जोज़फ़ गेरीवाल्डी रखा गया। जोज़फ़ गेरीवाल्डीकी माता बड़े सौम्यस्वभाववाली और सन्तानसे प्रेम करने वाली थी।



गेरीबाल्डी.

स्वतन्त्रताका योद्धा.

सूर्योदय

जोज़फ़ गेरी वाल्डीकी शैशवावस्थाके विषयमें अधिक ज्ञात नहीं है। इतना ही पता लगता है कि वह बड़ा फुर्तीला और चतुर बालक था। जब वह बड़ा हुआ और चढ़ते चाँदकी तरह उसकी शरीर-शोभा बढ़ने लगी, तब माता पिताने उसे पाठशाला भेजा। उन लोगोंकी इच्छा थी कि किसी प्रतिष्ठित आजीविका के योग्य बने। वे उसे पादरी या डाक्टर या वकील बनाना चाहते थे। किन्तु बालकका दिमाग़ उन तन्तुओंसे नहीं बना था, जो पुस्तकोंके पन्नोंमें फैल सकें। पढ़ने लिखनेमें उसका मन बिल्कुल नहीं लगता था। उसके अध्यापक उससे प्रेम करते थे—किन्तु इस लिये नहीं कि वह पढ़ने लिखनेमें चतुर था। अध्यापकोंके प्रेमका कारण उसका उत्तम स्वभाव था। न पढ़ता लिखता हुआ भी वह कई अध्यापकोंका लाडला था। यह कह सकते हैं कि पाठशालाके घण्टोंका उसके जीवनपर कोई प्रभाव नहीं था—और था भी तो बहुत ही थोड़ा। उसने अपने जीवन में जो महान् कार्य किये, उनके लिये यदि वह पाठशालाको धन्यवाद न देता, तो कोई अकृतज्ञता न होती। वह अपनी इच्छासे कभी स्कूल न जाता था, माताको खेद न हो, इसीलिये श्रेणीमें जा बैठता था। जब खेलने कूदनेकी इच्छा प्रबल हो उठती थी, तब अध्यापककी आँख बचाकर भाग निकलता था और हरे हरे खेतों और घने जंगलोंमें घूमने-

का और समुद्रकी छातीपर सैर करनेका आनन्द लूटता उठाता था। एक वार स्कूलकी बैठकसे तंग आकर, तीन सैलाने साथियोंके साथ गेरीवाल्डी भाग निकला और बन्दर-गाहपर बँधी हुई एक छोटी सी नौका उड़ाकर समुद्र यात्रा-के लिये चल पड़ा। इन मौजी बालकोंने समझा कि इन्हें देखने वाला कोई नहीं है। किन्तु एक पादरीने इन्हें रवाना होते हुए देख लिया और पीछा किया। नये नाविकोंका दल पकड़ा गया। इस अपराधपर गेरीवाल्डीको कुछ ताड़ना भी हुई और उसे पादरीका यह काम बुरा भी लगा। पीछेसे गेरीवाल्डी कहा करता था कि " शायद एक · इसी घटनाके कारण मेरे मनमें पादरी लोगोंके लिये इतना कम प्रेम है "

समुद्रसे गेरीवाल्डीका स्वाभाविक प्रेम था। पिताके संस्कार पुत्रमें प्रबलतया विद्यमान थे। वह कहा करता था कि " मैं जल जन्तु ही उत्पन्न हुआ हूं। जलसे उसे कभी भय नहीं था। तैरने और तैर कर डूबते हुओंको बचानेकी उस-की कथाएं प्रसिद्ध हैं। जब कभी वह केवल आठ वर्षका था, एक बार उसने एक धोबिनको जलमें डूबते देखा, देखते ही वह उसे बचानेके लिये लपका, और अपने यत्नमें कृतकार्य हुआ। गेरीवाल्डी बाल्यावस्थासे ही दयावान् था—दूसरे-का कष्ट देख कर उपेक्षा नहीं कर सकता था। जहाँ किसी दूसरेकी नौका भँवर में देखता था, वहाँ पानीमें कूद पड़ना

उसके लिये स्वाभाविक था। यह नैसर्गिक सहानुभूतिका भाव ही उसका सबसे बड़ा गुण और महत्वका प्रेरक कारण था। दीनों, दरिद्रों, रोगियों या पापियोंको देख कर वह घृणा नहीं करता था, और न उदासीन होकर ही बैठ जाता था। परमात्माके एक सच्चे पुत्रकी भाँति वह उनके कष्टोंको दूर करना चाहता था—'उसके लिये स्वयं अनेक कष्ट सहनेको भी तैयार रहता था।'

स्कूलसे भाग कर गेरीबाल्डी समुद्रमें चक्कर लगाता, घोड़ेकी सवारी करता या तलवारका अभ्यास करता था। इन तीनों कलाओंमें वह ख़ूब निपुणता प्राप्त कर रहा था। तलवार चलानेमें वह बड़ा निपुण हो गया था। उसका चित्त जैसा सरल था, उसके सिद्धान्त वैसे ही सरल थे। तलवार चलानेके वह केवल दो पेंच जानता था। एक, अपने सिरपर दूसरेकी तलवार न आने देना और दूसरा, दूसरेके सिरपर इतने ज़ोरसे तलवार मारना कि उसके दो टुकड़े हो जायँ। तीसरे पेंचकी न उसे आवश्यकता थी और न वह उसे जानना ही चाहता था।

इसी प्रकार स्कूलमेंसे भागते, शरारतें करते, दीन दुखियों-के दुख हरते और समुद्रकी सैरें करते २ उसकी बाल्यावस्था व्यतीत हो गई और जब जीवनके क्षेत्रमें प्रवेश करनेका

समय आया। पिताने पुत्रको वकील या पादरी बनानेके सपने त्याग दिये थे, इस लिये कार्यका चुनाव पुत्रकी प्रवृत्तियोंको देख कर ही किया गया। पुत्रकी प्रवृत्तियाँ पढ़ने या कलम घिसनेकी ओर निर्देश नहीं करती थीं। पादरी या वकील बनना उसे सर्वथा असम्भव प्रतीत होता था। यदि उस भूमण्डलके महापुरुषोंके जीवनोंपर दृष्टि डालते हैं तो एक विलक्षण बात पाते हैं। महत्वकी लताका मूल पाठशालाओं में कम मिलता है। शिवाजी अपना नाम भी नहीं लिख सकता था, नैपोलियन श्रेणीमें प्रथम नहीं रहता था, लार्ड क्लाइव बाल्यावस्थामें पत्थरके ढेलेकी भाँति जड़ समझा जाता था। कर्मण्य महापुरुषोंने पाठशालाओंसे अधिक लाभ नहीं उठाया। इससे यह सिद्ध नहीं करना चाहिये कि संसारके लिये पाठशालाओंका उपयोग नहीं; इसका तात्पर्य इतना ही है कि हमारे कृत्रिम साधनोंके अतिरिक्त भी ऐसे साधन विद्यमान हैं, जो जगत्के चक्रको चलाते हैं। परमात्माकी इच्छा और पूर्वजन्मके संस्कारोंकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। यह शक्तियाँ बनावटी शक्तियोंसे ऊपर हैं और उन्हें भी रास्ते लगानेवाली हैं। इटलीके लिये एक बन्धन काटनेवालेका भेजना भगवानको अभीष्ट था, फिर स्कूलोंको कौन पूछता है। अध्यापककी सम्मतिमें जड़ मूर्ख होता हुआ भी महान् जीव महत्वको पा ही लेता है। यह ऐसा

इतिहास सिद्ध सत्य है कि पाठशालाओंके अध्यापक इसे जान कर बहुत प्रसन्न नहीं होंगे।

अस्तु ! गेरीवाल्डीके लिये समुद्र ही कर्मक्षेत्र निश्चित किया गया। अपने पिताके साथ उसने एक बन्दरगाहसे दूसरे बन्दरगाह तक कई यात्राएँकी। इन यात्राओंसे पूर्व गेरीवाल्डीकी आन्तरिक शक्तियाँ तो विकास पा रही थीं, किन्तु अभी उसका दृष्टि-क्षेत्र विस्तृत नहीं हुआ था। संसार कहाँको जा रहा है ? मातृभूमिकी क्या दशा है ? दुख दर्द कहां बसते हैं ? अभी तक न यह प्रश्न उठे थे और न इनका उत्तर ही मिला था। गेरीवाल्डीका हृदय अभी तक शीशेकी भाँति साफ़ था। उसमें प्रतिकृतिके लिये स्थान तो बहुत था, किन्तु वह स्थान रिक्त था। साधारण पुरुषोंके हृदय-दर्पणका रिक्त-स्थान जीवनकी साधारण दैनिक बातों से ही भर जाता है, फिर असली चित्रोंके लिये स्थान नहीं रहता। जबतक जीवनको बनाने वाले महान्-पदार्थ सामने नहीं आये, तबतक गेरीवाल्डीके हृदय-दर्पणका मुख ढका रहा, जहाँ वे पदार्थ सामने आये आवरण हट गया और स्वच्छ हृदय ने उच्चभावोंके सूर्यकी प्रतिकृति क्षणभरमें ले ली। अपनी दूसरी यात्रामें गेरीवाल्डी रोम गया। रोमको देखते ही गेरी-वाल्डीके हृदयमें "यह मेरी चीज़ है" इस प्रकारका भाव उग आया। उसके चित्तमें यह भाव घूमने लगा कि "हो न हो इस

पादरियोंके कुचले हुए रोमका किसी प्रकार बचाव करना चाहिये" ज्यों ज्यों वह इटलीके नगरोंमें घूमने लगा, त्यों त्यों उसकी आँखोंके सामने एक पराधीन-जातिके कष्ट और बन्धन के करुण-चित्र आने लगे। उसे प्रतीत होने लगा कि उसकी जाति किसी भारसे दब रही है, किसी आगमें जल रही है। शुद्ध-हृदय पर पराधीन-इटलीकी दुर्दशाके चिन्होंने गहरा प्रभाव करना आरम्भ किया। उसका प्रेमी और सहानुभूति युक्त-हृदय इटालियनोंके आँसुओंपर आँसू बहाने लगा और साथही अपने आप से पूंछने लगा कि "मैं क्या करूं"। प्रश्नका उत्तर देनेके लिये गेरीवाल्डीके सामने परमात्माके एक दूसरे दूतकी मूर्ति दिखाई दी—पाठको! वह मूर्ति कौन सी थी?

तीसरा परिच्छेद

मेज़िनी ।

"रत्नं समागच्छतु काञ्चनेन"

हीरा सोनेका संयोग हुआ ।

गेरीबाल्डीकी छोटी सी आँखोंने जिस समय माताकी गोदमें पहली सूर्यकी किरणें देखीं, उस समय इटालियन देवीकी गोदमें पड़ा एक दो वर्षका बालक देशभक्तिके घूँट पी रहा था। माता पिताने उस बालकका नाम जोज़फ़ मेज़िनी रखा था। वह बालक कोंपलकी अवस्थामें भी बड़ा तेज़ और समझदार समझा जाता था। अन्य बालक जिस अवस्थामें अक्षराभ्यास प्रारम्भ करते हैं, मेज़िनी उससे कुछ पूर्व ही अक्षर उठाने लगा था। ज्यों ज्यों उसकी आयु बढ़ने लगी, त्यों त्यों उसकी शक्तियाँ विकास पाने लगीं। उसका कोमल और बढ़िया

हृदय संसारके उत्तम २ प्रभावोंसे प्रभावित होने लगा। मेज़िनीके पिताके पुस्तकालयमें पुस्तकोंके पीछे छिपाकर कुछ पुराने पेम्फ़लेट रखे हुए थे। मेज़िनीने और पुस्तकें देखते २ उनपर दृष्टि डाली। देखनेपर ज्ञात हुआ कि वे पेम्फ़लेट फ़ान्स-राज्यक्रान्तिके विषयके हैं। कोमल-हृदय-बालकने बड़ी उत्सुकतासे उन्हें पढ़ा और अपने भावी-जीवन-प्रासादके लिये ईंट गारा इकट्ठा करना आरम्भ किया।

सोलह वर्षका मेज़िनी एक दिन अपनी माताके साथ गिरजेसे लौट रहा था, सामने एक लम्बा, किन्तु कुछ कष्ट-पीड़ित सा व्यक्ति आता दिखाई दिया। पास आनेपर उसने मेज़िनीकी माताके सामने अपनी टोपी फैला दी और "प्रवासी देशभक्तोंके लिये" भिक्षा माँगी। १८२१में इटलीके देशभक्तोंने राज्यक्रान्तिका झंडा खड़ा किया था, किन्तु वह सँभल न सका, और झंडा खड़ा करनेवाले हाथोंमें जंज़ीरें पड़ गयीं। जो देशभक्त भाग सके वे भाग गये। उन भागे हुए देशभक्तोंकी सहायताके लिये यह चन्दा किया जा रहा था। न जाने क्यों-उस लम्बे आदमीकी वह दीन-मूर्ति और वे करुणा-जनक-शब्द नवयुवकके हृदयमें धँस गये। इटलीके देशभक्तोंकी यह दशा! वे घरमें भी न रह सकें! वे अपने देशको स्वाधीन करनेके लिये बोल भी न सकें! यह सब विचार थे, जो नवयुवकके चित्तमें घूमने लगे। जैसे गर्म मोमपर लगी हुई ज़रा सी

चोट भी अपना चिन्ह छोड़ जाती है, ऐसेही यौवनकी गर्मीसे नरम हुए स्वभावतः कोमल हृदयपर इस दृश्यने गहरा आघात किया—मेज़िनी दिलही दिलमें इटलीके दुःखोंकी निवृत्तिके उपाय सोचने लगा।

प्रतिदिन उसका हृदय अशान्त होने लगा। ज्यों ज्यों वह अपनी मातृभूमिकी दशापर दृष्टि डालने लगा, उसके हृदयसे लहूकी गर्म आहें निकलने लगीं। वह इटली—किसी दिन जिसकी राजधानीसे निकली हुई आज्ञाके सामने छत्रधारियों-के छत्र झुक जाते थे, जिसके सेनापतियोंके घोड़ोंकी टाप नदियों और समुद्रोंको लाँघकर तूफ़ान मचाती थीं, जिससे निकली हुई पोप-आज्ञाके सामने चक्रवर्तियोंके चक्र गिर जाते थे, जिसके गर्भमें पले हुए कवियोंकी वीणाने रोतोंको हँसा दिया था और हँसतोंको रुला दिया था—वह इटली—जननीसे बढ़कर जननी, इटली मेज़िनीको अत्यन्त दीन-हीन पराधीन-दशामें पड़ी हुई दिखाई दी। नैपोलियन बोनापार्टने इटली-को जो स्वाधीनता दी थी, उसे स्वयं ही छीन लिया था, किन्तु उसने टूटी फूटी इटलीको जो एकता दी थी, उसका नाश करनेका भार नैपोलियनके शत्रुओंने लिया। वीनाकी सन्धिने इटलीका कुछ भाग तो आस्ट्रियाको देदिया, और कुछ भाग कई छोटे २ राजाओंको बाँट दिया। वे राजा नामके स्वतन्त्र होते हुए भी वस्तुतः आस्ट्रियाकी राजधानीमें अँगुलीपर

नाचने वाले थे। आस्ट्रियाके राज-सचिव मेटर्निचके हाथमें सारे देशकी बागडोर थी। कोई छोटा मोटा राजा भूलकर भी प्रजाका अधिक हितचिन्तन न कर सकता था। जहाँ मेटर्निचको ज्ञात हुआ कि किसी राजाको उदारताकी बीमारी हुई कि उसने अपनी सेनाके हाथों तीव्र दवा भेज दी। उदार राजाका रोग क्षणभरमें शान्त हो जाता था और प्रजापर नये सिरेसे अत्याचार होने लगते थे।

इस पराधीनताके तले इटलीके देश-भक्तोंकी हड्डियाँ चूर-चूर होरही थीं। जिस नवयुवकके मनमें थोड़ा सा भी स्वाधीनताका संचार हुआ, पुलिसने झट उसकी गर्दन नाप ली! जिस राजाने " श्रद्धया देयम् ", " अश्रद्धया देयम् ", " श्रिया देयम् " मेंसे किसी उपदेशको भी उचित न समझ कर "भिया देयम् " के अनुसार प्रजाकी अशान्तिसे डरकर ही कोई सुधार करना चाहा, अत्याचार और पराधीनता-प्रिय आस्ट्रियाने झट उसे तलवार दिखा दी। पराधीनता हटाने और स्वाधीनता पानेके लिये इटलीके देशभक्तोंने एक गुप्तसभा बनायी थी, जिसका नाम 'कार्बोनरी' रखा गया था। इस सभाकी गुप्तता प्रसिद्ध थी—इतनी प्रसिद्ध थी कि वह स्वयं गुप्त होगई थी। सरकार इस सभा को जानती थी, प्रजा इस सभा को जानती थी और यूरोपके सभी दरबारों में इस सभाके सभ्योंकी सूचियाँ पड़ी रहती थीं। इस सभाने लोगोंमें स्वाधीन-भाव फैलाने-

का कार्य भी बहुत किया था। गुप्त-रीतिसे राजद्रोह और क्रान्तिके भाव फैलाना, नवयुवकोंको स्वाधीनताकी शिक्षा देना, छिपे हुए बड़े २ राज कर्मचारियोंको मरवाना—यह सब इस सभाके कार्य थे। देशकी दीनदशा देखकर मेज़िनीका हृदय स्वभावसे इस गुप्त सभाकी ओर झुका, और वह कार्बोनरीका सभासद बन गया।

किन्तु शीघ्रही उसे इस सभाकी निर्बलताओं का पता लगने लगा। उसने देखा कि यह सभा बहुत विस्तृत और पुरानी होगयी है। इसकी देह इतनी भारी होगयी है कि वह शीघ्र हिल नहीं सकती, इसकी अवस्था इतनी बड़ी होगयी है कि अब खूनमें पूरा जोश नहीं रहा। यह सब सोचकर उसने एक नयी सभा स्थापित करनेका यत्न किया—इस सभाका नाम 'युवक इटली' रखा गया। इस सभाका उद्देश्य इटलीके युवकोंको ईश्वरमें विश्वास, इटलीमें श्रद्धा और कर्मण्यता-की उपादेयता सिखाना था। मेज़िनीके लेखों और मौखिक उपदेशोंने इटलीके नवयुवकोंको शीघ्रही उसकी ओर झुका-दिया। उसका आदर्श आचार, अटल विश्वास और मोहने-वाला नयनयुगल देखकर युवकोंका हृदय प्रेम और भक्तिसे भर जाता था। 'युवक इटली' नामकी सभामें सैकड़ों और हज़ारों नवयुवक अपना नाम लिखाने लगे। युवकोंको 'युवक इटली' में प्रविष्ट होना गौरव और सम्मानका कारण प्रतीत होने लगा।

यह सभा एक प्रकारसे गुप्त-सभा ही थी, इसकी सारी कार्य-वाही संसारके नयनगोचर होने नहीं दी जाती थी, तो भी काबौनरीकी भाँति यह गुप्तता में अपनी कृतकृत्यता मानने वाली न थी। काबौनरीके गुप्त-जलमें सड़ाँद पैदा होगयी थी, इसे इस लिये गुप्त रखा गयाथा कि बाहरके बुरे प्रभावोंसे इसमें सड़ाँद पैदा न हो।

'युवक-इटली' के साथ नवयुवक मेज़िनीका नाम भी इटली-के कोने कोनेमें प्रसिद्धि पाने लगा। यह सभा मेज़िनीके कीर्ति-सौरभके लिये प्रभात-वायु का कार्य करने लगी। उसका नाम देशके भक्तोंमें आशा, उत्साह और अटल मातृभूमिकी भक्तिका प्रतिनिधि होगया। उसके लेखोंसे, उसके प्रभावसे और विचारशीलतासे घबराकर राज्याधिकारियोंने मेज़िनीको तंग करना आरम्भ किया, किन्तु इस बलात्कार का परिणाम उलटाही हुआ। सरकारने मेज़िनीको किलेमें बन्द कर दिया और उसका यश और प्रभाव बन्धन तोड़कर चारों दिशाओं में भाग निकला। शासक लोगोंने उसके लेख छापनेवाले समाचार पत्र बन्द कर दिये, तो बीसियों गुप्तमार्गोंसे होकर उसके देशभक्तिपूर्ण लेख नदीप्रवाहोंकी भाँति दिग्दिगन्तरोंमें फैलने लगे। मेज़िनीके गुण-सुवर्णपर सरकारके अत्याचारोंने आगका काम किया—वह और भी चमकने लगा। वह चमक फैलती गयी। और नवयुवक इटलीको जीवनकी चमक

पृष्ठ संख्या
३३



पुरुषोत्तम मेज़िनी

दिखाने लगी। जिज्ञासु-भावसे इधर उधर देखते हुए गेरी-वाल्डीने आँख उठायी, चमक को देखा, मानो प्यासेको जल मिल गया। ज्योतिसे ज्योति मिलगयी—और भगवानकी अद्भुत सृष्टिका चमत्कार प्रारम्भ हुआ।

चौथा परिच्छेद

कार्य-क्षेत्रमें प्रवेश

'साहसे श्री निवसति'

साहसमें श्रीका निवास है।

मेज़िनी अपने देशमें परदेशी होकर बाहर भाग गया था और फ्रांसके मार्सेल्स नामक समुद्रतट-वर्ती नगरमें बैठकर 'युवक-इटली' नामक पत्रद्वारा इटलीके नवयुवकोंमें स्वाधीनताकी प्रबल चाह पैदा कर रहा था। सुदूरवर्ती नगरसे मेज़िनी द्वारा फेंकी हुई चिनगारियाँ इटालियन युवकोंके हृदयोंमें स्वाधीनताकी आग जला रही थीं। 'युवक-इटली' नामका पत्र सुदर्शन-चक्रकी भाँति यूरोप-के नगर २ पर घूम रहा था, उससे जहाँ २ युवा हृदयोंमें स्वा-नताकी सत्ता बैठ गयी थी, वहाँ २ मुकुटधारी नरेशोंके सिंहा-ोल रहे थे। उस चक्रका केन्द्रभूत एक कृशकाय नवयुवक लके एक कोनेमें अपने तीन मित्रोंके साथ बैठा हुआ

घोर तपस्या कर रहा था। खानेको अन्न नहीं है—पहरनेको वस्त्र नहीं है—पाँव बूटके टूटे हुए तलेके रास्ते धरणीको चूम रहा है, तो भी वह तपस्वी स्वाधीनतासे भरे हुए लेख लिख रहा है, छाप रहा है, बंडल बाँध रहा है और पोस्ट-आफ़िसमें डाल रहा है। चेहरेपर किसी भाँतिकी खिझलाहट नहीं। ऊपरसे देखनेमें युवकके समान सुन्दर आकृतिवाला युवक यूरोपमें कोई ही मिले।।मुँहपर वह मुस्कराहट है जो कर्तव्य-पालनसे ही उत्पन्न होती है, किन्तु हृदयमें घुसकर देखो तो आँसू और आगके ख़ज़ाने भरे पड़े हैं। इटलीकी दीन पराधीन दशा-पर निरन्तर आँसू बह रहे हैं और अत्याचारियों और अत्या-चारोंको भस्मसात् करनेके लिये असह्य दावानल जल रहा है। पापका दाह करनेवाले उस भयानक कालानलका अन्त दिखाई नहीं देता। जिसकी छोटी देहमें अनन्त कालानल समा रहा था—आओ पाठक! हम सब मिलकर उस देशभक्त तपस्वी युवा मेज़िनीके चरणोंमें प्रणाम करें।

हम आज प्रणाम करते हैं, उस दिन सारे इटलीका युवक-मण्डल उसके सामने सिर झुका रहा था, उसके वचन पर अपने तन, प्राण न्योछावर कर रहा था। जैसे चुम्बक लोहेको खेंचता है, इसी भाँति मेज़िनीका नाम जोशीले नौजवानोंको अपनी ओर आकृष्ट करता था—लोहेके समान दृढ़ इच्छा और दृढ़पराक्रम रखनेवाला नवयुवा गेरीवाल्डी भी यदि

उसी चुम्बककी ओर खिंच गया तो आश्चर्य ही क्या था? प्यासा वहीं पहुँचता है जहाँ तालाब हो, भूखा वहीं जाता है जहां अन्न मिले। दैव और भावनाका प्रेरा हुआ गेरीवाल्डी भी उस जगह पहुँच गया, जहाँ उसकी इच्छाएँ पूरी करने का सामान मौजूद था, जहाँ शिष्यको मन्त्रका उपदेश करनेवाला गुरु तैयार बैठा था।

गेरीवाल्डीने मेज़िनीसे मिलते ही उसे विचारोंमें अपना गुरु माना और मेज़िनीने गेरीवाल्डीको देखते ही उसे अपनी भुजा समझ कर स्वीकार किया। चिरकाल तक गुरु शिष्य मिलते जुलते और विचारोंका परिपाक करते रहे। गेरीवाल्डी देशकी दुर्दशाकी कहानी और उसकी निवृत्तिके उपायोंकी फक्किकाएँ सुनाता रहा। उसके हृदयमें दृढ़ विश्वास होता गया कि प्रत्येक इटालियन नवयुवकका कर्तव्य है कि वह मातृभूमिकी स्वाधीनताके लिये यत्न करे, उस यत्न में यदि विघ्न आये तो उनकी पर्वा न करे—माताका कष्ट छुड़ाते हुए यदि गलेमें फाँसी चढ़े तो उसे फूलोंकी मालाके समान समझे, यदि बन्दूक की गोली शरीरमें विश्राम करने आये तो प्रेमीके भेजे प्रसादकी भाँति उसे स्वीकार करे, यदि देश निकाला हो तो माताके व्याज-कोपकी भाँति उसे कुछ कालके लिये समझ कर निश्चयसे विचलित न हो। प्रति दिन तपस्वीसे वर्तालाप करते हुए गेरीवाल्डीके अन्तरात्मामें भी

स्वाधीनताकी भयंकर आग जल उठी। उसका हृदय माताकी सेवामें बलिदान होनेको उतावला होने लगा। गेरीवाल्डीके भीतर भरी हुई शक्तियाँ विकास पानेके लिये मार्ग ढूँढने लगीं। घटना चक्रके प्रभावसे गेरीवाल्डीकी इच्छा पूर्ण हुई।

इटालियन क्रांतिके इतिहासमें १८३१ का साल विशेषतया स्मरणीय रहेगा। यह क्रान्तिकी सबलता और निर्बलता-दोनोंके दिखाने वाला था। नवयुवक-हृदयोंको क्रान्ति अपनी ओर जिस प्रबलतासे खेंचती है, १८३१ में उसका अभ्यास भली प्रकार दिखाई दे गया और साथ ही यह ज्ञात हो गया कि एक ऐसी जातिमें जो अभी उन स्वार्थत्यागोंके लिये तैयार नहीं जो क्रान्तिकी सफलताके लिये प्रारम्भिक शर्तें हैं, क्रान्ति को कृतकार्यता नहीं प्राप्त हो सकती।

इटलीकी राजनैतिक शतरंजके दो मुहरे बदल गये। रोममें एक कम-अत्याचारी पोपके स्थानमें अधिक अत्याचारी पोपका अभिषेक हुआ और 'पीडमौंट' की राजगद्दी-पर एक पुराने ढर्रेके राजाके स्थानमें नयी ज्योतिसे युक्त राजा आरूढ़ हुआ। इस नये राजाका नाम 'चार्लस-एलबर्ट' था। युवराज होनेकी दशामें 'चार्लस-एलबर्ट' क्रान्तिकारियोंका सहायक समझा जाता था और उसके विचार वस्तुतः उदार थे। अब वह राजगद्दीपर बैठा, देश भरके देशभक्तोंकी आशाएँ लहलहा उठीं। वे लोग इटलीके लिये नए युगकी

प्रतीक्षा करने लगे। इन आशाओं और प्रतीक्षाओंको प्रबल वाक्यके समूहके रूपमें लाकर मेज़िनीने चार्लस-एलबर्टके नाम एक लम्बा पत्र लिखा, जिसमें राजाको उत्साह, साहस और देश-भक्ति का आदेश किया और अपनी आशाएँ प्रकाशित की।

इन्हीं परिवर्तनोंके साथ इटलीके युवकोंके मनोंमें भी परिवर्तन हो रहे थे। मेज़िनीके 'युवक-इटली' नामक पत्रने उनमें बिजली सी फैला दी थी, सूखे घासमें एक चिनगारी सी फूँक दी थी। वे क्रियाके लिये और स्वयं जल कर औरों को जला डालनेके लिये उतारू हो रहे थे। मेज़िनी जानता था कि अभी क्रान्तिका दिन दूर है, किन्तु उसके भड़काये हुए युवक नहीं जानते थे। वे क्रान्तिके प्यासे थे और उस प्यासको अपने या दूसरोंके ख़ूनसे बुझाना चाहते थे। विना चाहे, दिलमें थोड़ा बहुत चिन्तित होते हुए मेज़िनीको देशभक्त युवकोंके दबावसे क्रान्तिका झण्डा खड़ा करना पड़ा।

जनोवासे क्रान्तिकी सेनाएँ रवाना हुईं। इन सेनाओंका सेनापति 'रामीरनो' को बनाया गया। मेज़िनीकी सम्मतिमें यह चुनाव अच्छा नहीं था, किन्तु मेज़िनीको अपने अनुयायियोंका अनुयायी बनना पड़ा। संसारके कार्यक्षेत्रमें प्रायः ऐसा ही होता है। जो नेता हैं वे अपने अनुयायियोंके अनुगामी बन जाते हैं; अन्यथा उनका नेतृत्व ही ख़तरेमें पड़ जाता है। कमान प्रत्यञ्चाको अपने साथ तभी रख सकता है यदि उसके खेंचे

आनेपर स्वयं भी खिँच जाय, अन्यथा दोनोंका साथ टूट जायगा। ऐसी ही दशा नर समाजमें होती है। क्रान्तियोंमें जो भयंकर दशाएँ उत्पन्न होती हैं, उनके लिये यह घटनाही कारण होती है। क्रान्तिके नेता जनताको भड़का देते हैं। भड़ककर जनता उनके हाथोंमें नहीं रहती—प्राय: नेताओं-को ही जनताके हाथकी कठपुतली बनना पड़ता है। धन्य हैं वे जो उस समय भी अपनत्वको न छोड़कर अनुयायियोंके अनुयायी नहीं बनते, वे या तो विकट दशामें भी असली नेता बन जाते हैं, या अपने आपको कर्तव्यकी आगमें आहुति बना-देते हैं। ऐसे लोग धन्य हैं।

रामोरनो कोई बड़ा साहसी और प्रतिभाशाली सेनापति न था। अपनी शिथिलतासे उसने प्रारम्भमें ही काम बिगाड़ लिया। आक्रमण पीडमौंटपर होनेवाला था। उस देशमें क्रान्तिकी सेनाएं प्रविष्ट हों, इससे पूर्वही वहाँके राज्याधिका-रियोंको बू आगयी। फल यह हुआ कि देशभक्तोंकी सेनाको उलटे पाँव भागना पड़ा। मेज़िनी बन्दूक़ कन्धेपर लिये हमेशा सेनाके साथ रहता था, इस भागाभागीमें बीमार होगया और बेहोशीकी हालतमें वापस लाया गया। गेरीवाल्डीको इस आक्रमणके सम्बन्धमें दो काम मिले थे। उसे एक छोटेसे जाहाज़का कप्तान बनाया गया था और साथही जनोवाकी सरकारी फ़ौजोंमें अशान्ति फैलानेका काम सौंपा गया था।

जनोवामें उसे अधिक सफलता नहीं मिली। कारण वही शिथिलता थी। वहाँ आनेपर गेरीवाल्डीको पता लगा कि अधिकारियोंको पहिलेसेही सूचना मिल चुकी है और गेरीवाल्डीके नाम वारंट निकल चुका है। गेरीवाल्डीका जीवन-क्षेत्रमें प्रवेश होगया—और हुआ भी वारंटके साथ। एक प्रबल-योद्धाका इस प्रकारसे संसारमें प्रवेश उचितही था।

पहली क्रान्तिका इतनाही फल हुआ। उसे भारी असफलताका मुँह देखना पड़ा। ऐसा क्यों हुआ? जाति तैयार नहीं थी। कच्चे घड़ेमें पानी भरनेसे परिणाम अच्छा न होगा और लकड़ीकी कुल्हाड़ीसे लकड़ी नहीं कट सकती। विना तयारीके क्रान्तिकी सफलता असम्भव है।

राजदण्डका अधिकारी होकर गेरीवाल्डो जेनोवासे भाग निकला।



भाग-दौड़ ।

"अरक्षितं तिष्ठति दैव रक्षितम्"

करे खानाबदोशों की, खुदाही खाकसामानी ।

महापुरुषों की प्रतिभा नगरों और ग्रामोंमें नहीं, अपितु जंगलोंमें जागती है। जो महान्-आत्मा स्वयं ही जंगलोंमें चले जाते हैं, उनपर प्रकृतिको किसी प्रकारका अत्याचार नहीं करना पड़ता। दयानन्द और बुद्ध वृक्षों और पक्षियोंसे, नदी और नालोंसे, परमात्माके अटल नियमोंका पाठ पढ़ने स्वयंही चले गये थे। उन पर प्रकृतिको बलात्कार नहीं करना पड़ा। किन्तु जिन महान्-आत्माओं की स्वाभाविक इच्छा आबादी छोड़नेकी नहीं होती, प्रकृति उन्हें बाधित कर देती है, अवस्थाएँ उनके पाँव उखाड़ देती हैं, और जैसे वायुके वेग से उठाया तिनका स्वयं ही विस्तृत आकाशका भ्रमण करने लगता है, इसी प्रकार वे महान्-आत्मा भी प्रकृति और अव-

त्र्याओंके धक्केसे प्रेरित होकर जगदीश्वरकी अनुपम सुहावनी वाटिकामें स्फूर्ति पानेके लिये विचरने लगता है।

सोना तपानेसे चमकता है। विपत्तिमें असली और नकली मित्रकी पहिचान होती है। असली घोड़ा विकट मार्गमें पहिचाना जाता है। महापुरुष भी विपत्तिमें आकर गुण दिखाता है। संकटकी परीक्षामें पड़ कर महापुरुषोंके गुण प्रकाशित और विकसित होते हैं। उनकी असलियत बढ़ियासे बढ़िया होने लगती है। गुणोंका विकास हो, प्रतिभाका प्रकाश हो और आलस्य या कुण्ठताका विनाश हो—इस उद्देश्यसे प्रकृति-अध्यापिका महापुरुषों को घरबारसे जुदा करती है, माताके सुखपर्यंकसे जुदा करती है, और नित नए संकटोंमें डालती है। मुहम्मद स्वयं घर छोड़ कर नहीं गया, उसे भागना पड़ा। मेजिनीको राजदण्डके भयसे घरही नहीं जन्मभूमि भी त्यागनी पड़ी। गेरीवाल्डी भी अब अपना नियमित जीवन बिता चुका। अब वह कार्यक्षेत्रमें प्रवेश करता है। उसके जीवन-नाटक का दूसरा कार्य-मय अङ्कका पहला पर्दा उठतेही हम क्या देखते हैं? उसके नाम वारंट जारी है, चारों ओर वह राजपुरुषोंसे घिर रहा है, उसे निश्चय है कि पकड़े जाते ही मुझे गोलीका शिकार होना पड़ेगा।

गेरीवाल्डीको शीघ्रही ज्ञात हो गया कि उसके चारों ओर मनुष्योंका जाल बिछ रहा है और सामान्य दशाओंमें उस

जालसे बचना कठिन है। यदि गेरीवाल्डी कोई सामान्य व्यक्ति होता तो किस प्रकार विचार करता। "मेरा उद्देश्य क्रान्तिमें सहायता करना था। उस कार्यमें औरोंके दोषसे अकृत कार्यता हुई। मेरा कोई दोष नहीं। अब मैं अपनी जानको खतरेमें क्यों डालूं और नीति भी तो यही कहती है कि इस समय हथियार रख दो, शत्रुका साथ दो, मीठी २ बातें कर लो, क्षमा माँग लो और फिर समयपर देखा जायगा।" साधारण-पुरुष इसी प्रकार विचार करता, किन्तु गेरीवाल्डीका हृदय और मस्तक उस मसालेसे नहीं बना था जिसमें भय और कायर नीतिकी चोट असर कर सके। उनकी रचना पक्के फौलाद-से हुई थी। उसने इस प्रकार सोचा होगा—"देशके शत्रुओं-को जीतना मेरा धर्म है, पहले यत्नमें असफलता हुई, क्या इससे अपनी हत्या कर दूं? क्या अत्याचारीसे डर जाऊं? नहीं—ऐसा न होगा।" ऐसे हो विचार उस समय गेरीवाल्डीके चित्तमें उत्पन्न हुए होंगे।

अपने आपको चारों ओरसे घिरता देखकर गेरीवाल्डी भाग निकलनेका ढंग ढूंढने लगा। पास ही एक मालीका घर था, उसीमें हमारा नायक घुस गया। मालिन बेचारी भली थी, गेरीवाल्डीकी कथा सुनकर उसे दया आगयी, वह गेरी-वाल्डीको एक कमरेमें ले गयी और उसे एक ग्रामीणका वेष पहना दिया। सायंकालके लगभग आठ बजे उसी वेषमें वह

घरसे निकला और बड़ी लापरवाहीसे पहाड़ोंकी ओर चल पड़ा। नये वेषमें उसे कोई भी पहचान न सका। अगले दस दिन पहाड़ोमें ही कटे। नगरों या ग्रामोंको बचाता और पग-डंडियोंसे होता हुआ वह अपनी जन्म भूमिकी ओर चलता रहा। जहाँ भोजन मिल गया, कर लिया नहीं तो निराहार ही सो रहा; बस, इसी प्रकार दुःखमय जीवन बिताता हुआ वह नाइस नगरके पास जा पहुँचा।

जन्मपुरीके पास पहुँच कर उसकी एक इच्छा माताके दर्शनोंकी हुई, किन्तु साथही विचार उत्पन्न हुआ कि कहीं माता घबरा न जाय, या अपने ऊपर ही बन्धन न पड़ जायँ। बस, कर्तव्य-परायण राही, घरकी माया ममता छोड़ नदीको तैरकर पार हो गया। उसने दूसरे किनारे आकर फ़्रांसीसी राजकर्मचारीसे भेंटकी तथा अपना नाम धाम और जनोवासे भागनेका कारण साफ़ साफ़ बतला दिया। गेरीवाल्डीने आशा यह की थी कि फ़्रांसीसी राजकर्मचारी उसकी कहानी सुन सहानुभूति प्रकाशित करेगा, किन्तु वहाँ लेनेके देने पड़ गये 'चौबेजी गये थे छब्बे बनने, रह गये दूबे।' उस राजकर्मचारी-ने गेरीवाल्डीको कैदी बना लिया और कहा कि पेरिससे आज्ञा आने तक उसे कैदमें रहना पड़ेगा। कहीं क्रान्तिकारी भगोड़ा फिर भी न भाग निकले, इसलिये उसे एक कमरेमें बन्द करवा दिया, जिसमें पन्द्रह फ़ीटकी ऊँचाईपर केवल एक

खिड़की थी। भला, १५ फ़ीटकी ऊँचाईसे कूद कर भागेगा ? क़ैद करनेवालोंने यही समझा होगा। उन लोगोंका दूर आना था कि अन्दरसे दीवारपर चढ़कर गेरीवाल्डी खिड़कीमें पहुँचा, उसने अपने ईश्वरको याद किया और बाहर मैदानमें कूद गया।

दूसरे दिन कई मीलका सफ़र करके हमारा नायक एक ग्राम में पहुँचा। १८ घंटेका भूखा था, पेट-पूजा करनेका स्थान ढूंढने लगा। एक घरमें एक जोड़ा भोजनका आनन्द लेता दिखाई दिया, बिना संकोचके राही घरमें घुस गया, और घर-के मालिकको अपनी भूखकी गाथा कह सुनायी। गृहस्वामीने भी खुले हृदय तथा खुली बाहुओंसे उसका स्वागत किया। भोजन हुआ, गेरीवाल्डी मारे प्रसन्नताके फूला नहीं समाता था। गृहस्वामीकी अतिशय प्रसन्नतापर उसे आश्चर्य हुआ और उसने कारण पूँछा। गेरीवाल्डीका शुद्ध हृदय एक दम उबल पड़ा। उसने हँसते हँसते अपनी सारी कथा कह सुनायी और अन्तमें फ़्रांसीसी करागारसे छूटनेकी प्रसन्नतापर खूब तालियाँ बजायी। अब तो क्षणभरमें गृहस्वामीकी त्यौरी बदल गयी। शुद्ध आकाशमें मानो काले मेघकी रेखा दिखायी दी। दुर्दिन होगया। गेरीवाल्डीने आश्चर्यसे पूँछा कि 'माजरा क्या है ?' गृहपतिने उत्तर दिया कि 'जो बात तुमने अभी स्वीकार की है, उसके कारण मेरा कर्तव्य है कि 'मैं तुम्हें फिर गिरिफ़्तार करूँ'

इस अचानक वज्रपातसे क्या गेरीवाल्डी डर गया ? बिस्मार्क-की तरह गेरीवाल्डीका सिद्धान्त था कि "पृथ्वीपर ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जिससे मुझे भय हो, मैं केवल ईश्वरसे डरता हूँ"। ऐसा निडर गेरीवाल्डी एक गाँवके गृहस्वामीसे क्या डरने लगा था। उत्तरमें गेरीवाल्डीने कहा "बहुत अच्छा, तब मुझे गिरिफ़्तार करलो, किन्तु अभी समय बहुत है, गिरिफ़्तारीका समयभी आ जायगा मुझे पेट भरके खा लेने दो, चाहे मुझे दोहरी क़ीमत देनी पड़े।" भोजन समाप्त हुआ, शराब उड़ने लगी। गाँवके बहुतसे और भी युवक इस पान-लीलामें सम्मिलित हो गये। पान-लीलाके साथ गान-लीला होने लगी। गृहपति, राजनीतिक-राही और शेष सारी मण्डली कैद और कैदोंकी बातें भूल गये। प्रातःकाल वही गृहस्वामी अपने अतिथिको छः मील दूर तक छोड़ने गया।

शेष यात्रा निर्विघ्न समाप्त करके गेरीवाल्डी मार्सेल्समें पहुँच गया। उस समय सरकारकी ओरसे उसके नाम मृत्यु का फ़रमान निकल चुका था। अपना नाम पहले पहल समाचार पत्रोंमें देखकर उसे आश्चर्य हुआ। अबसे उसे अपने आपको अधिक छिपानेकी आवश्यकता हुई, इसलिये उसने अपना नाम 'मुसापेन' रख लिया।

'जिन ढूंढा तिन पाइयाँ'। भौंरेको हर एक वाटिकामें मधु मिल जाता है, और दार्शनिक बुद्धिवाला पुरुष हर स्थानमें

प्रकृतिके अटल-सिद्धान्त ढूंढ लेता है। जिसने सेवाका व्रत धारण किया है, वह राह जाता भी सेवाका अवसर प्राप्त कर लेता है। मार्सेल्समें गेरीवाल्डीके सिरपर मौतका सुदर्शनचक्र घूम रहा था, तो भी मनुष्य-सेवाके व्रतोने अपना व्रत न छोड़ा। उन दिनों मार्सेल्समें हैज़ेका रोग बड़े ज़ोरोंपर था। हैज़ा भी ऐसा वैसा नहीं—बड़ा मुहलिक। जिसे बिमारी हुई, वह यम-का ग्रास हुआ। कायर लोग इस भयानक-रोगके भयसे घर छोड़कर भाग रहे थे। भयने प्रेमको जीत लिया था। पिता अपने बीमार पुत्रको चारपाई पर छटपटाते छोड़कर भाग निकलता था और माँ अपनी रोगी बेटीका प्रेम-बन्धन तोड़ खिसक जाती थी। बन्धुभाव नष्ट होगया था। कोई किसीका नहीं था। गेरीवाल्डी यद्यपि चाहता था कि शीघ्र कहीं भागकर बे-ख़तरे होजाय, किन्तु दीनोंकी गुहारने उसे न हिलने दिया। उसने अपने एक और मित्रके साथ मिलकर दीन दुखियोंकी सेवाका कार्य अपने कन्धोंपर लिया। सादियाँ हमें बतलाती हैं कि अपने जीवनकी पर्वाह न करके उसने बीमारोंकी माता और पितासे अधिक सेवा की।

जो हृदय दैवी भावोंसे युक्त हैं, जिनके अन्दर वस्तुतः ईश्वरभक्ति और अतएव देशभक्ति अपने विशुद्धरूप से विद्य-मान है, उनके प्रेमकी सीमा नहीं होती और उनकी सहानु-भूतिकी मात्रा अपरिमित होती है। वे अत्याचारग्रस्तको

देख यह विचार नहीं करते कि यह मेरा है या दूसरेका है। वे जहाँकहीं दु:ख और कष्ट देखते हैं, अत्याचार और अनर्थ देखते हैं, उसके निवारणार्थ पिल पड़ते हैं। जो प्रेम या सेवाव्रत 'मैं और मेरे' पर विचार करता है, वह असली नहीं, नकली है। अत्यन्त निकट सम्बन्धसे अपनोंकी सहायता करना मनुष्यता है, मनुष्य मात्रकी सहायताके लिये कटिबद्ध रहना महत्व है और प्राणि मात्रको—मनुष्य पशु पक्षी और कीट पतङ्ग तकको-अपनी सहानुभूतिका पात्र बनाना ऋषित्व है। महत्व और ऋषित्वका प्राणदायक विस्तृत वायुमण्डल 'ममता' के संकुचित खोलमें नहीं समा सकता। गेरीवाल्डी उसी विस्तृत वायुमण्डलमें उड़ान लगाता था, उसी विशुद्ध वायुमण्डल में साँस लेता था।

'तारामैत्रक चक्षूराग, प्रसिद्ध है। आँखें चार हुईं और प्रेमकी फाँसी पड़ गयी। यह प्रेमप्रसाद सबको नहीं मिलता—केवल स्वच्छ हृदय मनुष्य ही इसके अधिकारी होते हैं। इन्हीं दिनों गेरीवाल्डीको एक ऐसा देशभक्त मित्र मिला, जो इस प्रेमका अधिकारी था। उसका नाम पीट्रोकोली रोस्सटी था। दोनों एक दूसरेको नहीं जानते थे। केवल एक दूसरेका उन्होंने नाम सुन रखा था। गेरीवाल्डी इस मिलापका यों वर्णन करता है—" मुझे उसके खोजनेका परिश्रम नहीं करना पड़ा। परिचित होनेके लिये हमें एक दूसरेकी परख नहीं करनी

पड़ी। हम अकस्मात् एक दूसरेके पाससे गुज़रे, एक दूसरे-को देखा और प्रेमालाप होगया। एक मुसकान! हाथके एक दबावके साथ जीवन भरके लिये हम भाई होगये" यह निर्व्याज प्रेम स्फटिक सदृश स्वच्छ हृदय वालोंको ही प्राप्त होता है।

छठां परिच्छेद

दक्षिण अमेरिकामें युद्ध

अब नाटकका पर्दा बदलता है। गेरीवाल्डीकी अपरिमित—सहानुभूति उसे सुविस्तीर्ण जल राशिके पार पहुँचा देती है। जहाँ कष्ट है वहाँ कष्टका निवारक योद्धा पहुँच जाता है, जहां पराधीनता है, वहाँ पराधीनताका शत्रु गेरीवाल्डी पहुँच जाता है। जो लोग अपनी जातिकी स्वतन्त्रता चाहते हैं और साथ ही दूसरी जातियोंको पाँव तले रौंदते हैं, वे वस्तुतः निर्लेप, स्वार्थको निर्लेप परार्थके नामसे पुकारते हैं। वे संकुचित आत्मरक्षाको उदार स्वाधीनताका नाम देते हैं। जो जातियाँ या पुरुष दूसरी जाति या पुरुषकी स्वाधीनताको कुचल सकते हैं, वे स्वाधीनताका नाम न लें तो अच्छा है। उनके मुखमें आकर स्वाधीनता का पवित्र शब्द कलुषित हो जाता है। जब दूसरा शक्तिशाली पुरुष उनके माथेपर तमंचा रखता है, तो वे स्वाधीनताके नामकी मुहारनी शुरू कर देते हैं, किन्तु

यह भूल जाते हैं कि उसी समय उनका बायाँ हाथ एक और व्यक्तिके माथेपर तमंचा कसे हुए है' ऐसे लोग स्वाधीनताके पवित्र नामकी रोटी खाते हैं और उसके आधारपर अपना जीवन निर्वाह करते हैं। किन्तु जो व्यक्ति वस्तुतः स्वाधीनताका प्रेमी है वह किसी व्यक्तिपर या किसी जातिपर पराधीनताकी शृङ्खला देख नहीं सकता, स्वच्छन्द वायु प्रवाहकी भाँति उसकी सहानुभूति, दूरीकी पर्वाह नहीं करती, भगवान् भास्करकी किरणोंकी नाईं उनकी दया और प्रेमकी किरणें हर पदार्थको समान रीतिसे जीवन प्रदान करती हैं। जो व्यक्तियां या जातियाँ वस्तुतः स्वाधीनतासे प्रेम रखती हैं, वे उपनिवेश या अधीन देश रखनेका शौक छोड़ देती हैं। जिनके हृदयमें स्वाधीनताका देवतुल्य भाव वस्तुतः रम गया है, स्वाधीनता ही जिनकी उपास्य देवी है, उनका तन मन और धन उसीके अर्पण हो जाता है। परिवार जाति या देशके बन्धन भी उन्हें बाँध नहीं सकते। महामेघमें लोटती हुई विद्युल्लताकी भाँति उनकी भुजा एकही मारमें योजनोंका सफर पार कर जाती है, और पराधीनताके बन्धन से छूटनेकी इच्छा रखनेवाले मनुष्योंको अभयदान और साहाय्यप्रदान करती है।

गेरीवाल्डी उन्हीं लोगोंमें से था। मार्सेल्समें रहते हुए उसने सुना कि अमेरिकाके दक्षिणमें एक छोटी सी 'रियो-

ग्राण्डे' नामक रियासत स्वतन्त्रताके लिये ब्राज़ीलके शासकों-से युद्धकर रही है। ब्राज़ील—दैत्यके सामने 'रियोग्राण्डे' की रिपब्लिक केवल वामनकी हैसियत रखती थी। गेरी-वालल्डीका स्वाधीनता-प्रेमी हृदय सहानुभूतिसे प्रेरित होकर उसी ओर खिंच गया। एक छोटासा जहाज़ खरीदा गया, उसका नाम गुरुके नामपर 'मेज़िनी' रखा गया और शीघ्रही मार्सेल्लसे इस छोटेसे अमर-सैन्यका प्रस्थान हुआ।

साहसीका वीर चरित्र विलक्षण घटनाओंसे भरा हुआ होना चाहिये। नहीं तो साहसीका साहस पक्का नहीं होता। यदि बीचमें छोटी २ चोटोंसे वह पक्का न हो जाय, तो असली भयानक चोट आनेपर मिट्टीके घड़ेकी भाँति वह चूरचूर हो जायगा। इस यात्रामें भी गेरीवाल्डीके साथ दो ऐसी ही घटनाएं हुईं। एकमें उसके अतुल साहसने काम दिया, दूसरीमें दैवने सहायता दी। पहली घटना यों हुई—अपने लक्ष्य स्थानपर पहुँचनेसे पूर्व गेरीवाल्डीको अपना जहाज एक स्थानपर ठहराना पड़ा। उसका विचार था कि कुछ आराम करके पूरी तैयारीके साथ आगे चला जाय। किन्तु गेरीवाल्डीका नाम क्रान्तिकारियोंकी सूचीमें आ चुका था और यह भी ज्ञात हो गया था कि वह ब्राज़ीलसे लड़ने आया है। थोड़े ही दिनों पीछे उसे वहाँसे चल देनेका

इशारा कर दिया गया। जिस बन्दरगाहपर जहाज़ ठहरा था, वहांके एक धनिकसे कुछ रुपये वसूल करने थे। जब धनिकने सुना कि गेरीवाल्डीको भाग जानेकी आज्ञा हुई है तब वह आनाकानी करने लगा। कूच करनेकी रात निकट आ गयी आज्ञाके कारण गेरीवाल्डीको नगरमें जानेसे भय था क्या किया जाय ? गेरीवाल्डीने साहसका अवलम्ब लिया। रात होते ही किनारेपर पहुँचा। ऊपरसे नीचे तक अपने आपको लम्बे कपड़ेसे ढक लिया। दोनो जेबोंमें दो पिस्तौलें डाल लीं और धनिकके घरकी ओर चल दिया। धनिक महाशय तो यह समझ कर कि जहाज़ अबतक बन्दरगाहसे छूट चुका होगा, अपने द्वार पर खड़े हवा खा रहे थे। इतनेमें गेरीवाल्डीकी लम्बी मूर्ति सामने दिखायी दी। उसके छिपे हुए देहको भी धनिकने पहचान लिया और भाग जानेका इशारा किया। किन्तु भागना कैसा ? गेरीवाल्डी न इधर हुआ न उधर, सीधा धनिकके पास पहुँचा और उसके माथेपर तमंचा रख दिया। धनिक कहने लगा 'अच्छा बातचीत कर लो' माथेपर तमंचा रखेही रखे गेरीवाल्डी इतना ही कहता रहाः—'मेरा धन' आखिर धनिकको कुछ न सूझी, चुपकेसे गिनकर धन गेरीवाल्डीके हाथमें दे दिया। कुछ समय बाद जहाज़ बन्दरगाहसे रवाना हुआ। दूसरी घटाना यों हुईः—गेरीवाल्डीका जहाज़ मार्गमें शत्रुके दो जहाज़ोंसे भिड़ पड़ा। खूब युद्ध

हुआ। सिपाही एक दूसरेके जहाजोंपर चढ़कर युद्ध करने लगे। अन्तको जीत गेरीवाल्डीकी रही। शत्रुके जहाज पीठ दिखा कर भाग निकले, किन्तु वे हमारे नायकको घायल कर गये। गोली गेरीवाल्डीकी गर्दनके किनारेमें घुस गई। देरतक वह मूर्छित दशामें रहा, मूर्छा टूटनेपर भी रोगसे मुक्त न हुआ। तब जहाजको बन्दरगाहपर डेरा डालना पड़ा। पासही नगरमें अस्पताल था, वहाँ उसका पूरी तरह इलाज हुआ। डाक्टरने गलेसे गोली निकाल दी और धीरे धीरे गेरीवाल्डी चंगा होकर चलने फिरने लगा।

सावधान होकर गेरीवाल्डीने देखा तो अपने आपको फिर बन्दी पाया। क्रान्तिकारी और ब्राज़ीलके शत्रुको दक्षिण अमरीकामें कौन आश्रय देता। जहाँ गेरीवाल्डी ठहरा हुआ था, वह भी एक छोटीसी रिपब्लिक थी, किन्तु रियोग्राण्डेकी रिपब्लिकके साथ उसकी मिताई न थी। अपनेको फिर क़ैदी देखकर गेरीवाल्डी भाग निकलनेके उपाय सोचने लगा। सोचते २ आख़िर ढंग निकल आया। अभीतक वह केवल नज़रबन्द था, हथकड़ियोंका क़ैदी नहीं बना था। एक मित्रको मिलनेके बहाने वह कुछ दूर गया, वहाँ कुछ मित्रोंके यत्नसे उसे एक घोड़ा और एक पथदर्शक मिलगया। अवसर ताक कर वह भाग निकला। दूरतक भाग गया। पथदर्शकने अच्छी सहायाता की। कोई भी विघ्न उपस्थित न हुआ। आगे एक नदी

थी। पथदर्शक उससे पार होनेका मार्ग ढूंढने गया और गेरीवाल्डी घोड़ेकी पीठ परसे उतर, कुछ दूर जाकर, आराम करने के लिये लेट गया। कुछ देर होगयी और पथदर्शक न लौटा। कुछ उतावला होकर गेरीवाल्डी उठने लगा कि इतनेमें एक गोली सनसनाती हुई पाससे निकल गयी। उसने लौट कर देखा तो घुड़सवारोंका एक दस्ता किरचें तानें हुए उसकी ओर दौड़ा आ रहा है। अब भागनेकी चेष्टा करना भी व्यर्थ था। गेरीवाल्डी पकड़ा गया और उस नगरके गवर्नरके सामने पेश किया गया। शासक कुछ तेज़ स्वभावका आदमी था, गेरीवाल्डीसे पूछने लगा कि 'तुम्हें भागनेमें किस किस ने सहायता दी?' गेरीवाल्डीने भागनेके लिये अपने सिवा किसीको भी उत्तरदाता न ठहराया। बहुत पूछा गया, किन्तु उसने किसीका भी नाम न लिया। तब तो उसके दोनों हाथ पीठकी ओर बाँध कर उसे छतसे लटका दिया गया। क्रूर शासकने उसे कोड़ेसे मारा और फिर वही प्रश्न पूछा। वीर केसरीके हाथ बँधे हुए थे। वह शासकको विनयका पाठ पढ़ानेमें अशक्त था, खूब उबल उठा, किन्तु हाथ पाँव बँधे हुए थे। और कुछ न हो सका तो गेरीवाल्डीने घृणासे शासकके मुँहपर थूक दिया।

इसके पीछे गेरीवाल्डीपर बड़े अत्याचार हुए। उसे इसी भयंकर दशामें घण्टों तक टाँग रखा गया। और भी सब तरह उसे खूब तंग किया गया। किन्तु उस शूरवीरके

मुखसे दूसरे साथीका नाम न निकला। अन्तको शासककी हार हुई। उसे ऐसा ज्ञात होने लगा कि गेरीवाल्डीके साथ अत्याचर करनेमें वह अपने अधिकारोंको पार कर गया है।

ऊपरसे आज्ञा आयी और गेरीवाल्डी बन्धन-मुक्त कर दिया गया। कुछ दिन इधर उधर बिता कर गेरीवाल्डी रियोग्राण्डेकी रियासतमें पहुँचा, और आते ही उसकी सेनामें मिल गया। एक ओर ब्राज़ीलका बड़ा राज्य, दूसरी ओर एक छोटी सी रियासत। भला प्रतिद्वन्द्विता कैसी? किन्तु इससे गेरीवाल्डी-को मतलबही क्या? रियोग्राण्डेको स्वाधीनताका अधिकार है, ब्राज़ील उसमें बाधक है, गेरीवाल्डीका कर्त्तव्य है कि वह छोटेकी सहायता करे।

इन दिनोंकी एक विशेष घटना है, जिसने गेरीवाल्डीके जीवनमें एक भारी और आवश्यक परिवर्तन किया। वह परि-वर्तन हर एक प्राणीके जीवनमें आता है, किन्तु जिस ढंगसे हमारे नायकने यह परिवर्तन किया, वह नया था, अनूठा था। रिपब्लिकके सभापतिकी दो लड़कियाँ थीं। युद्धके प्रसङ्गसे घूमते घामते गेरीवाल्डीको उनसे मिलनेका अवसर मिला। वह अभी तक कभी स्त्रियोंके संगमें न आया था, और अबलाके आकर्षण-बलको नहीं जानता था। दो सुन्दरी और गुणवती युवतियोंके संगने उसके चित्तमें एक उत्कट अभिलाषा जमा दी। एक दम उसके मनमें विचार उत्पन्न हुआ कि 'मुझे भी

विवाह करना चाहिये ' एक आवेश पूर्ण-हृदयमें विचार उत्पन्न होना क्रियाकी आवश्यक भूमिका होती है। गेरीबाल्डीका विचार हुआ और वह घरसे बाहर घूमने चल पड़ा।

जहाज़पर खड़ा होकर वह उमंगोंकी बागें छोड़ कर आँखें दौड़ाने लगा। वे आँखें सामान्य आखें नहीं थीं, क्रियाकी कवितासे भरी हुई आखें थीं। समुद्रके तटपर एक पहाड़ी थी। दृष्टि दौड़ते २ पहाड़ीपर पड़ी। देखा, तो वहाँ तीन चार युवती कन्याएं घूम रही थीं। उनमेंसे एक पर नायककी दृष्टि जा पड़ी। उसके अन्तःकरणने कहा—'यही सुन्दरी मेरी प्राणेश्वरी होगी।' जहाज़ किनारेपर लगाकर गेरीबाल्डी गाँव के पास पहुँचा। इतनी देरमें कन्याएँ अपने २ घरों को चली गयी थीं। अब उस प्राणेश्वरीको कहाँ ढूँढा जाय, न जाने वह किस घरकी चाँदनी थी। घर घर ढूंढना अनुचित था, तो भी गेरीबाल्डी गाँवमें चक्कर लगाने लगा। एक द्वारपर एक महाशय खड़े थे जो गेरीबाल्डीके पूर्व-परिचित थे। उन्होंने गेरीवाल्डीको घरमें बुला लिया और आतिथ्य किया। आतिथ्य करनेके लिये गृहपतिने कन्याको बुलाया। दैवयोग देखिये-वही कन्या गेरीवाल्डीको जहाज़परसे दिखायी दी थी, उसे ही उसने आँखोंकी जयमाल पहनायी थी।

पिताकी आँख बचाकर मिलना कठिन कार्य न था। दूसरे दिन वहाँ न गेरीवाल्डी था—न वह कन्या। कन्याका नाम

एनीटा था। एनीटाको गेरीबाल्डीने इतना ही कहा 'तू मेरी है' और वह उसकी हो गयी। दोनों प्रेमी भुजामें भुजा दिये घरसे बाहर हो गये। यही एनीटा जगत्प्रसिद्ध एनीटा है। जब तक चाँदका नाम रहेगा तब तक चाँदनीके गुण गाये जायँगे। जब तक इतिहासमें गेरीबाल्डीका नाम है, तब तक एनीटा भी पुजेगी। गेरीबाल्डीके साथ एनीटाने भी दीनोंके दुःख हरनेके लिये, और स्वाधीनताकी रक्षा करनेके लिये अपना लहू बहाया था, और जानको खतरेमें डाला था।

जिस छोटी सी रियासतकी रक्षाके लिये गेरीबाल्डी कटिबद्ध हुआ था, उसके जंगी बेड़ेमें पूरे तीन छोटे २ जहाज़ थे। इन तीनोंके द्वारा वह ब्रज़ीलके समुद्रमें प्रवास करना चाहता था। इस छोटे से बेड़ेका सेनापतित्व गेरीबाल्डीको सौंपा गया। गेरीबाल्डीने इस अद्भुत असम-युद्धको असाधारण-योग्यतासे किया। कई शिकार मारे, कई जहाजोंको तोड़ा फोड़ा और कई वार शत्रुके चंगुलसे बचकर निकल गया। एकबार अकस्मात् उसके जंगी बेड़ेके तीनों जहाज़ तितर-बितर होगए। वह अकेला ही अपना जहाज़ लिये, एक छोटे से बन्दरगाहपर पहुँच, साथियोंको आराम देने लगा। इस अवस्थामें उसे सन्देह हुआ कि शत्रु उसपर आक्रमण करेगा। वहीं एक ऊँची भूमिपर अपने जहाज़की तोप लगाकर उसने किला सा तैयार कर लिया और आक्रमणकी प्रतीक्षा करने

लगा। छोटे से जहाज़के मुट्ठीभर आदमी किनारेपर रक्षाके लिये तैनात किये गए। शीघ्र ही गेरीवाल्डीके सन्देह सच्चे साबित हुए। कई जहाज़ ब्राज़ीलका झंडा फहराते हुए आते दिखाई दिये। युद्ध आरम्भ हो गया। उधर कई तोपें, इधर केवल एक तोप। युद्ध बहुत असमान था, परन्तु गेरीवाल्डी का साहस एकको सवा लाख बना देता था। हर एक योद्धा शेरकी भाँति लड़ने लगा। सभी साहससे लड़ रहे थे, किन्तु उन सबके बीच एक स्त्री थी, जो साहसकी देवी बन रही थी, जिसके निर्भय-साहससे वीरोंके हृदय उत्साहित हो रहे थे। वह स्त्री एनिटा थी। गेरीवाल्डीने उसे जुदा रहनेके लिये बहुत समझाया, किन्तु वह कहाँ मानती थी। जहाँ पति है वहाँ पतिकी प्यारी होगी। समुद्रकी उत्ताल तरंगोंमें, तोपके भयंकर गोलोंमें और आपत्तिके कठोर कुठाराघातोंमें भी साथ रहकर पतिका साथ देनेके कारण ही एनिटाका नाम आज इतिहास-प्रसिद्ध हो रहा है। वह वस्तुतः गेरीवाल्डीके लिये गृहिणी, मन्त्री, उपसेनापति और सेविका—यह सब कुछ थी। युद्धमें परमात्मा गेरीवाल्डीका सहायक था। इस युद्धके एक दृश्यका वह स्वयं यों वर्णन करता है:—"जब एनीटा, हाथ में तलवार लिये, जहाज़पर योद्धाओंको उत्साहित कर रही थी, एक तोपका गोला आया, और दो आदमियोंके साथ एनिटाको गिरा गया। मैं उसे मरी हुई पानेकी आशंकासे

झपका, किन्तु उससे पूर्वही वह सुरक्षित दशामें उठ खड़ी हुई। दोनों आदमी मर गए। मैंने तब उससे नीचे चले जाने की प्रार्थना की। उसने उत्तर दिया—'हाँ मैं जाऊँ!' किन्तु उन कायर लोगोंको नीचेसे ऊपर निकालनेको जाऊँगी जो जान बचानेके लिये वहाँ जा छिपे हैं" ऐसाही उसने किया भी। शत्रुके जहाज़ोंको निराश लौटना पड़ा।

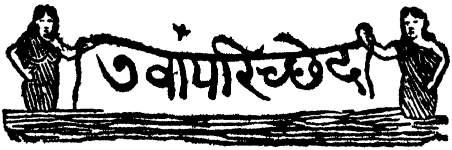
इसके कुछ दिनों बाद एक और युद्ध हुआ। उसमें भी एनिटाने ऐसी ही वीरता दिखायी थी। गेरीवाल्डीके साथ काम करनेवाले शेष दोनों सेनापति मर गये। जहाज़से किनारे घर आने जानेके लिये कोई दूत न रहा। यह काम एनिटाने अपने ऊपर लिया। उधरसे शत्रुके गोले दनादन बरस रहे थे, और एनिटा एक खुली किश्तीमें बराबर जहाज़से किनारे और किनारेसे जहाज़पर आती जाती रही। जिस परमात्मा ने गेरीवाल्डीको अभयदान दे रखा था, उसीने एनिटा पर रक्षाका हाथ रख छोड़ा था।

इसी प्रकार युद्धका क्रम या अक्रम जारी रहा, क्योंकि बड़ी सेनासे मुट्ठी भर सेनाका युद्ध तभी चल सकता है यदि वह बहुत ही अक्रम हो। कभी २ तो गेरीवाल्डी केवल पन्द्रह सोलह सिपाहियोंका ही सेनापति रह जाता था। फिर भी कुछ न कुछ करता ही जाता था। इसी बीच गेरीवाल्डीको ज्ञान हुआ कि उसे अपना घर बनाना चाहिये। एनिटा ने गर्भ

धारण किया था और उसके लिये विश्राम आवश्यक था। एक गाँवमें किसी किसानका घर खाली पड़ा था, बस वहीं डेरे डाले गए। यथा समय एनिटाने एक बालक उत्पन्न किया। कुछ दिन गेरीवाल्डीको बच्चे और उसकी माताकी आवश्यकताओंके पूरा करनेकी ही चिन्ता रही। वह घोड़ेपर सवार हो दूर दूर चला जाता और आखेट आदि द्वारा कुछ कमा लाता था। जिस रिपब्लिकके लिये वह लड़ रहा था, वह इतनी निर्धन थी कि उससे कुछ माँगना या लेना उदारनायक को उचित नहीं प्रतीत होता था।

अवस्थाओंने उसे इस आरामसे अधिक दिन न बैठने दिया। शत्रु आ गया और इस नये परिवारको भागना पड़ा। कई दिन तो माताको बच्चा गोदमें लिये ही लिये घोड़ेकी पीठ पर बिताने पड़ें। किन्तु अब इस दशामें एनिटाका निरन्तर पतिके साथ रहना असम्भव था। पतिको फिर रणक्षेत्रमें जाना पड़ा, और एनिटाको उसके एक मित्रके पास ठहरना पड़ा।

छोटे छोटे युद्धोंको हम छोड़ देते हैं। नमूनेके तौरपर अगले परिच्छेदमें एक युद्धका वृत्तान्त पाठकोंको सुनाते हैं, जिससे उन्हें ज्ञात हो जायगा कि गेरीवाल्डी किस प्रकारका युद्ध करनेवाला था।



सेन अण्टोनियाका युद्ध ।

"क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे"

महापुरुषोंकी क्रियासिद्धि पौरुष से होती है, साधनों से नहीं ।

युद्धमें लाखोंकी गिनती नहीं होती थी, सेनापति मोटरकारोंमें नहीं घूमते थे । तलवार और बन्दूक़का, साहस और बलका युद्ध था, और सामान्य सैनिकोंकी भाँति सेनापति भी अपनी टाँगोंको थकाता था । गेरीवाल्डीने इधर उधरसे कई सौ इटालियन इकट्ठे किये थे, और उनका नाम इटालियन-दल रखा था । अपने इटालियन-दल और कुछ एक अन्य सिपाहियोंके साथ हमारा चरित-नायक शत्रुके सहस्रों सैनिकोंकी सेनाके दाँत खट्टे करता चला जाता था । शत्रु इस अनूठे वीरकी चालोंसे तङ्ग था । न कहीं डेरा, न आराम । राजपूत-केसरी प्रतापकी भाँति आज पहाड़के नीचे डेरा है तो कल चोटीपर । वह भी डेरा काहेका था, क्षण भरकी स्थिति

थी। रात दिन घूमना, शत्रुसे बचना, और बेख़बर पाकर उस पर टूट पड़ना और इसी बीचमें स्वाधीनताके झंडेको छातीसे चिपकाए रखना, बस, गेरीबाल्डीका यही जीवन, यही प्राण और यही निःश्वासप्रश्वास था।

सैन अण्टोनियाके पास शत्रुके प्रसिद्ध सेनापति अर्गिवसा की ३५०० घुड़सवार ८०० पैदल सेना गेरीवाल्डीके मुट्ठी भर दलका दमन करनेके लिये एकत्र थी। बीचमें नदी बह रही थी, दोनों ओर दोनों सेनाएँ पड़ी थीं। अब भी श्रीगणेश गेरी-वाल्डीने ही किया। कुछ थोड़ेसे साथियोंके साथ शत्रुके अनजाने ही उसने नदी पार की और विपक्षी-दलके अगले हिस्सेपर धावा कर दिया। अर्गिवसाके आदमी भाग निकले। विजेताको उनके घोड़े मिल गये। जीतका इनाम घोड़ोंके रूपमें लेकर विजेता लौट आया।

इस युद्धका समाचार सुन चारों ओरसे गेरीवाल्डीके सहायक इकट्ठे होने लगे। एक सेनापति मैडिना ५०० सिपा-हियोंको लिये सामनेसे इटालियन-दलका बल बढ़ानेके लिये आ रहा था। गेरीवाल्डीने आगे जाकर उससे भेंट करने-का निश्चय किया। केवल दो सौ सिपाहियोंको साथ ले वह निश्चित समयपर आगे बढ़ा। सेनामें जो कुछ घायल थे, उनका अध्यक्ष देश-भक्त अञ्जोनी बनाया गया था, वह पीछे ही रहा।

कुछ घण्टों तक गेरीवाल्डी आगे बढ़ता रहा। उसे ज्ञात न हुआ कि शत्रुके एक दलने उसे देख लिया है। वह चौकन्ना होकर बढ़ रहा था और शत्रुका एक १५०० सिपाहियोंका दल उसे घेरनेके लिये आ रहा था। एक दूसरेको देखनेमें देर नहीं लगी, स्थान खुला था, उसमें छिपना कठिन था, और भागना असम्भव था। भागना गेरीवाल्डीके युद्ध शास्त्रमें लिखा भी नहीं था। शत्रु उसपर आक्रमण करे, इसकी अपेक्षा शत्रु पर आक्रमण करना अधिक उपयोगी समझ कर अपने दो सौ सिपाहियोंके साथ गेरीवाल्डी घूमा और शत्रुके अग्रगन्ता घुड़सवारोंपर टूट पड़ा। शत्रुदलका अगला भाग पहली चोटमें भाग निकला।

अगला भाग तो भाग गया, परन्तु शत्रुका मुख्य-दल पीछे आ रहा था। गेरीवाल्डीने ख़तरा देख लिया। इटालियन-दलके एक सिपाहीके लिये शत्रुके पास छः सिपाही थे। असमानता स्पष्ट ही थी, और देशभक्त दलके लिये बड़ी भयावनी होती यदि उसका मुखिया गेरीवाल्डी न होता। वह गेरीवाल्डी, जो केवल परमात्मासे डरना जानता था, १५०० सिपाहियोंकी क्या पर्वाह करता था। अपने मुट्ठी भर सैनिकों को उसने यों सम्बोधन किया:—

"शत्रुकी संख्या बहुत अधिक है, हम थोड़े हैं। यह और भी अच्छा है। हम जितने ही कम होंगे, युद्ध हमारे लिये

उतनाही अधिक कीर्तिकर होगा। शान्त रहो। जब तक दुश्मन पास न आवे, गोली मत चलाओ, जब वह पास आ जाय तब किर्चका वार करो"।

वीरता-युक्त शब्दोंने वीरोंके हृदयोंमें बिजली का संचार कर दिया। 'युद्धमें जीतेंगे या मरेंगे' की दृढ़-प्रतिज्ञासे सब वीरोंकी जिह्वाएँ फड़क उठीं, और वे बढ़ते हुए शत्रुकी प्रतीक्षा करने लगे। शत्रुके सिपाहियोंने लगभग ६० गज़की दूरीसे गोलियाँ चलायीं। समय देख कर इटालियन दलने भी प्रचण्ड आक्रमण किया। पहले ही आक्रमणमें शत्रुका सेनापति मर गया। मंगलाचरण अच्छा हुआ। गेरीवाल्डी भूखे शेरकी भाँति गर्ज कर अपने सूरमाओंके आगे हुआ और अदम्य-बल से संग्रामके बीचोबीच जा कूदा।

अचानक गेरीवाल्डीका घोड़ा थकने लगा। न जाने उसे गोली लगी, वह बैठ गया। गेरीवाल्डीको भी भूमि पर गिरना पड़ा। ऐसे पेचीदा समयमें सेनापतिका गिरना अमंगल होता है। गेरीवाल्डी को चिन्ता हुई कि कहीं इटालियन-दल उसे मरा हुआ न समझ ले। अपने फेंटेमें से पिस्तोल निकाल उसने आकाशमें दाग़ दी। यह उसके जीवित होनेका पर्याप्त प्रमाण था। वह थाम लिया गया और इटालियन-दल और भी अधिक भयंकर पराक्रमसे प्रतिपक्षी-दल का मर्दन करने लगा।

शत्रुके पैर उखड़ गये। उखड़े तो सही, पर फिर सँभल गये। कहाँ २००, कहाँ १५००। कहाँ तक सामना होता। इटालियन-दल फिर घिरने लगा, और फिर दुगुने साहससे युद्ध करने लगा। रण भेरी देर तक गरजती रही, तलवारें और संगीनें चिरकाल तक भिड़ती रहीं, आखिर दोनों दल थक गये। अपनी छोटी संख्याको कम होता देख गेरीवाल्डीने पीछे लौटनेका निश्चय किया था। इटालियन-दल पीछे हटने लगा। पीछे हटना क्या था मानो विजय-यात्रा थी। इटालियन-दलके तथा उनके सहायकोंके सब घायल या मरे हुओं को साथ उठाये हुए, जातीय-वीरताके विजय-गीत गाते हुए गेरीवाल्डीका मुट्ठी भर सैन्य पीछेको लौटने लगा। शत्रुमें न पीछा करनेकी शक्ति थी और न रास्ता रोकनेका सामर्थ्य। सातगुने दुश्मनने इस सिंह-सैन्यको लौटते देख कर भगवानके धन्यवाद किये। चाहे जीत कर, चाहे हार कर मैदान अपने हाथ देखकर शत्रु आनन्दसे पूर्ण हो गया और गेरीवाल्डीके दलको आँखोंकी ओट होते ही थकान उतारनेकी तय्यारी करने लगा। घोड़ोंकी काठियाँ उतर गयीं, सिपाहियोंके हथियार धरा-शायी हो गये और सन्तरियोंकी देख रेख भी ढीली हो गयी।

किन्तु गेरीवाल्डीको आराम नहीं था। जहाँ स्वाधीनता की रक्षा सामने है, वहाँ विश्राम या आलस्य कहाँ। इधर

शत्रुकी आँख लगी, उधर गेरीवाल्डीकी सेना सन्नद्ध होने लगी। गर्मियोंके मध्यान्हकी आँधीकी तरह वह थोड़ी सी सेना सोये हुए शत्रुपर जा पड़ी। जब तक भयका नक्कारा गूँजता, गेरीवाल्डीका दल शत्रुकी सेनाको पार कर गया। गेरीवाल्डी चाहता तो यहीं दुश्मनको दण्ड दे देता। पर उसने इसकी अपेक्षा बढ़िया ढंग निकाला। उसके सिपाही शत्रु सैन्यको पारकर, एक टीलेके पास रास्तेके दोनों ओर घासमें छिप रहे। थोड़ी देरमें शत्रुने सावधान होकर इटालियन दलका पीछा किया। पीछा करनेवाले सवार ज्योंही टीलेके पास पहुँचे कि दोनों ओरसे गोलियोंकी बाढ़ने स्वागत किया। उस स्वागतको जिनोंने पाया, सबने पृथ्वीका आलिंगन किया। रातका समय, और गोलियोंका विलक्षण स्वागत शत्रुके दिल और पैर साथ ही उखड़ गये। उसकी सेनामें भांजड़ पड़ गयी। मैदान गेरीवाल्डीके हाथ रहा। उसके दो सौ सिपाहियोंके सामने सातगुने शत्रु पीठ दिखाकर भाग निकले। संख्यापर प्रतिभाकी विजय हुई। इस घटनापर गेरीवाल्डीने कहा था कि "मैं अपने सारे साथियोंपर और कुछ २ अपनेपर भी अभिमान करने लगा था" ये शब्द उसकी निरभिमानताको और भी अधिक सूचित करते हैं।

इधर अञ्ज़ोनीकी कहानी सुनिये। उसकी रक्षामें रोगी दल दिया गया था, और रक्षक लोग बहुत ही थोड़े थे। अब

उधर गेरीबाल्डीके सिपाही शत्रुसे विजय श्री छीन रहे थे, उसी समय एक छोटा सा विरोधी दल वहाँ आ पहुँचा। विरोधी दल छोटा था, परन्तु रोगी मण्डलके लिये पर्याप्त था। विरोधी दलके नेताने अञ्जोनीके पास दूत भेजकर कहलाया कि 'हमलोग आ गए हैं, आपलोग स्वयं ही अपने हथियार रख दें।' अञ्जोनीने जो उसका उत्तर दिया, उसने मामला तय कर दिया। उत्तर यह था कि "इटालियन लोग हथियार रखना नहीं जानते। जाओ, नहीं तो यद्यपि तुम बहुत हो तो भी मैं तुम्हारा ख़ातमा कर दूँगा। जब तक मेरे पास एक आदमी भी रहेगा, हम लड़ते रहेंगे। और यदि मैं अकेला रह गया तो मैं बारूद में आग लगाकर तुम्हें और अपने आप को जला दूँगा।" इस धमकीसे डरकर विरोधी दल नौ दो ग्यारह हो गया।

इस युद्धमें बड़ी २ सेनाएँ न थीं, किन्तु थोड़ी सेनाओंके साथ गेरीबाल्डीने जो काम किया, वह किसी बड़े से बड़े सेनापतिके साहसिक कार्यसे छोटा न था। प्रतिभाशाली सिपाहीके सिवाय कोई इस असमानता और कठिनतासे पार नहीं पा सकता था। पार पाना भी ऐसा वैसा नहीं, सातगुने शत्रुके दम और पैर उखाड़ देना, और मैदानके स्वामी बन जाना। और यह सब कुछ अपने लिये नहीं—अपनी नौकरी के लिये नहीं, अपने देशके लिये भी नहीं, अपितु स्वाधी-

नताके लिये, एक छोटी और निर्बल जातिकी सहायता के लिये।

इस घटनासे गेरीवाल्डीका यश चारों ओर फैल गया। रिपब्लिकने उसके प्रति धन्यवादका प्रस्ताव स्वीकार किया। अन्यदेशोंके वासी, जो वहाँ निवास करते थे, उसके दर्शनों से अपनी आखोंको पवित्र करने लगे। वह रिपब्लिककी राजधानी मौण्टवीडियोमें आया तो जनताने उसका असाधारण अभिनन्दन किया। यहाँ फ्राँसके कुछ जहाज़ आये हुए थे, उनके अध्यक्षने गेरीवाल्डीको लिखित बधाई दी। लिखित बधाईको पर्याप्त न समझ कर वह स्वयं ही मिलनेके लिये आया। गेरीवाल्डीके घर आकर उसने जो कुछ देखा, उससे महाराज चन्द्रगुप्तके मंत्री चाणक्यका दृश्य याद आ जाता है।

फ्रेंच-सेनापति सायंकालके समय उससे मिलने आया। पहले स्थान ढूँढ़नाही कठिन था। घर ऐसे ग़रीब भाग में था कि शायद निर्धनसे निर्धन सिपाही भी उधर न रहता, ख़ैर, घर तो मिल गया। दरवाज़ा खुला पड़ा था। देखनेपर प्रतीत हुआ कि वह बंद हो ही नहीं सकता। उसमें साँकल है ही नहीं। द्वार रात दिन खुला रहता था। वर्षा और हवा अन्दर खुला प्रवेश करते थे। फ्रेंच-सेनापतिने अन्दर नज़र दौड़ायी तो भयानक अँधेरा पाया। ख़ैर, फिर भी वह अन्दर घुस गया।

दूसरा भाग

स्वाधीनताके लिये यत्न

पहला परिच्छेद

इटलीमें जागृति

" अभ्युत्थितोऽरुणपुरस्सर एकतोऽर्कः ।"

(कालिदास)

एक ओरसे अरुणको सारथी बनाये सूर्यका उदय हुआ ।

यदि किसी देशकी अवस्था क्रान्तिको बुलाने वाली हो सकती है तो वह उस समय इटलीकी थी । अपने समयमें इंग्लैंएडके प्रसिद्ध कवि बायरनने इटलीको देखकर यह आशागीत गाया था :—

" ओह ! ये लुच्चे नरपति ! ये लोग एक बार हार जायँ, तो अब भी इटलीका उद्धार और संसारका भला होना सम्भव है । यदि वह देश एक बार स्वाधीन हो जाय—उस इच्छाकी पूर्ति करने और युगोंके दृश्य बुझानेके लिये कौनसी चीज़ बहुत बड़ी हो सकती है—हमें आशा करने दो । वे सहस्रों सालों तक आशा करते रहे हैं । यदि इटली स्वतन्त्र हो जाय, तो यह पर्वाह नहीं कि कौन और क्या बलिदान होता है, यह एक महान् उद्देश्य है, यह राजनीतिका सारस्वत रस है । "

महावीर गेरीवाल्डी

देशोंका निद्रा त्यागकर आखें खोलना, जातियोंका राष्ट्र बनकर अपने पाँवपर खड़ा होना, राष्ट्रोंका पराधीनताकी बेड़ियाँ तोड़कर स्वतन्त्र हो जाना, सचमुच राजनीतिका सारस्वत रस है, सामाजिक जीवनका महाकाव्य है। यदि जातियोंकी स्वतन्त्रताके काव्य पवित्र न करें, तो संसारके लम्पट और लोभी राजाओं और राज्योंकी कथाएँ इतिहास को अस्पृश्य बना दें, उसका पढ़ना भी पाप हो जाय। पराधीनतामय अन्धेरे जगत्में स्वाधीनता ही सूर्य किरणकी भाँति स्वयं चमकती और अन्योंको चमकाती है, वही सूखे इतिहासके अस्थि पंजरमें रुधिर और मज्जाका संचार करती है। बायरनने इटलीको पस्त पड़ा देख कर उसी स्वाधीनता देवीका आह्वान किया था। बायरन ही नहीं, जो भी मनस्वी उज्वल ऐतिह्य वाले इटली देशकी दशा पर दृष्टिपात करता था, वह हठात् उसके मोक्षके लिये परमात्मासे प्रार्थना किये बिना नहीं रहता था।

एक देश था, जिसका पुराना इतिहास सुवर्णीय अक्षरोंमें लिखा हुआ था। जहाँ एक ओर उसके इतिहासको बड़े बड़े दिग्विजयी-योद्धाओंके नाम पवित्र कर रहे थे, वहाँ दूसरी ओर दिगन्त-विस्तृत-कीर्ति-शाली वक्ताओं और शासकोंकी लम्बी कथाएँ उसके पृष्ठोंको उज्ज्वल कर रही थीं। किसी दिन उस देशके शासकोंकी अँगुलीपर संसार नाचता था और

दृष्टिके सामने नरसिंहोंकी गर्दनें झुक जाती थीं। वही देश समयके प्रभावसे पराधीन हो गया। एक विदेशी जातिने उसके अधिकारों और स्वत्वोंको पददलित कर दिया। इटली की चारदीवारीकी हद्दमें स्वतन्त्रताका नाम लेना अपराध हो गया, स्वतन्त्रताके गुण गाना पाप समझा जाने लगा और उसके दर्शनके लिये यत्न करना ऐसा भारी पातक बतलाया गया कि जिसका कोई प्रायश्चित ही नहीं। स्वतन्त्र भाव लिये पुस्तक और समाचारपत्र की कौन कहे, ऐसे विचार करना भी आपत्ति-जनक था, जिनमें स्वतन्त्रताकी बू भी आती हो। देशभक्त लोग मारे ख़ुफ़िया पुलिसके तङ्ग थे। छाया मनुष्यका साथ छोड़ दे, ख़ुफ़िया पुलिसके देवता जातिभक्तोंका साथ न छोड़ते थे। नवयुवकोंका क़दम २ पर निरीक्षणकी ज़ंजीरों-से बाँधकर असन्तुष्ट होनेके लिये बाधित किया जाता था।

केवल राजनीतिक परतन्त्रता ही बस थी, किन्तु वहाँ तो बस का नाम न था। इटली वासियोंके दिमाग़ भी दास हो रहे थे, विदेशी ढंगपर सोचते और विदेशी भाषासे जिह्वाको कलङ्कित करते थे। मानसिक दासता सब प्रकारकी दासताओं की जड़ होती है। इटलीमें वह पूरे ज़ोरसे विद्यमान थी।

किन्तु विधाताको अब कुछ और ही अभीष्ट था। ग्रीष्म-ऋतुमें वर्षा और वर्षामें कड़ी धूप लाना जिस अद्भुत खिला-

ड़ीके बायें हाथका खेल है, उसकी धरोहर-पुस्तकमें इटली का ऋण-हिसाब समाप्त हो चुकनेको था। भगवानके ऐसे दूत आ रहे थे, जो इटली-वासियोंको स्वतन्त्रताका सन्देश सुना रहे थे। उन दूतोंमेंसे पहला, जिसने इटालियन-वीणा-की तार हिलायी, महाकवि अल्फ़ायरी था। अंधेरी रातमें पहली दियेकी बत्ती अल्फ़ायरीने ही जगायी। इस महाकविने डैएटेके समयसे सोयी हुई सरस्वतीको जगा दिया, और मरे हुए साहित्यमें नयी रूह फूँक दी। इटलीके मनपर स्वभावतः काव्य और नाटकका बहुत प्रभाव पड़ता है, मनोभाव उस पर गहरी चोट करते हैं। अल्फ़ायरी भी नाटक-लेखक था। उसने दर्जनसे अधिक दुःखान्त-नाटक लिखे हैं। उनमेंसे कइयोंका नाम ही स्वाधीनता-नाटक है। वस्तुतः अल्फ़ायरी की सब रचनाएँ स्वाधीनताके उपदेशोंसे, स्वाधीनताके गुणों से और स्वाधीनताके संगीतोंसे भरी पड़ी हैं। उनमें स्वाधी-नताका यहाँतक प्रवेश है कि ढाँचेमें भी पुराने अलंकार-शास्त्र के नियमोंपर ध्यान नहीं दिया गया। रचनामें भी रिवाजके बन्धनोंको तोड़ दिया गया है। अल्फ़ायरीके नाटकोंमें हम एक नयी इटली-माताको सुन्दर वेषभूषासे युक्त होकर समा-धिस्थलसे उठता हुआ देखते हैं, और आते हुए प्रभावका आशागीत सा सुनते हैं। यह महाकवि स्वाधीनताका प्रथम सन्देशहर था।

दूसरे सन्देशहरका नाम मन्ज़ोनी था। और दृष्टियोंसे यह लेखक अल्फ़ायरीसे बहुत कुछ विपरीत था, उसका अपवाद था। अल्फ़ायरीके आचरण यदि बहुत गर्हणीय नहीं तो स्तुतियोग्य भी नहीं थे। मन्ज़ोनी बड़ा शुद्धाचारी और मुनिवृत्ति था। जहाँ अल्फ़ायरी स्त्रियोंके पीछे भागता था, लोकलज्जाके भयसे अपने आपको चारपाइयोंसे बाँधता था, और अब तक भी कोई नहीं जानता कि जिस कौण्टेस आव्-अल्बनीके साथ वह लगभग बीस साल तक रहा, वह उसकी कौन थी; वहाँ मन्ज़ोनी प्राणेश्वरीका पति था, उत्तम गृहस्थी था और धार्मिक-जीवनका आदर्श था। दोनोंमें यह भेद था, किन्तु इटलीके प्रति दोनोंकी वृत्ति अभिन्न थी। अल्फ़ायरीकी भाँति मन्ज़ोनीको भी इटलीके इतिहासपर विश्वास था, इस लिये भविष्यपर श्रद्धा थी। वह भी इटलीको स्वाधीन और समृद्धिशाली देखना चाहता था। वह भी मातृभूमिकी रुकी हुई उन्नतिपर आठ आँसू बहाता था। उसके काव्य खण्ड और उपन्यास गिनतीमें कम हैं, किन्तु महत्वशाली हैं। उनमें प्रतिभा, शुद्धता और देशभक्तिका अनमोल मेल है, देशमें मन्-ज़ोनीके लिये श्रद्धा थी और उसके ग्रन्थोंके लिये आदरका अतिशय था। इटली देश पहले महान् था, अब वह स्वाधीन होकर फिर महान् हो सकता है—ये भाव हैं, जो मन्ज़ोनीके ग्रन्थोंमें ओतप्रोत पाये जाते हैं-इन्हें जनतामें फैलानेके कारण वह इटलीके रचयिताओंमें से माना जाता है।

इन तथा इनके समानधर्मा अन्य कवियों तथा लेखकोंसे उपजाई आकर क्रान्तिकी ज्वाला इधर उधर घूम रही थी, पहले और पीछेकी अन्य घटनाएँ उसकी सहायकारिणी हुईं। नैपोलियनने इटलीको जीतकर स्वतन्त्र कर दिया। चाहे वह स्वयं उसका मुखिया बन गया, किन्तु इटलीको एक बार स्वाधीन होनेका स्वाद चखा गया। इस स्वादने इटालियन लोगोंके चित्तोंमें असन्तोषकी ज्वालाको और ज़ोरसे चला दिया। कुछ दिनोंकी एकता और स्वाधीनताके पीछे जब वायनाकी सन्धिसभाका सर्व-दाही प्रस्ताव हुआ, तब इटलीको फिर आस्ट्रियाके अधीन होना पड़ा। जो केसरी एकबार निर्जन वनमें स्वच्छन्द विहार कर चुका हो वह सहजही कठ-घरमें बन्द नहीं किया जा सकता। ये नयी बेड़ियाँ इटलीके अङ्ग प्रत्यङ्गमें चुभने लगीं। आस्ट्रियाका शासन इटलीवासियोंको प्रतिदिन भारीसे भारी प्रतीत होने लगा।

उस समय इटलीकी कई भागोंमें बँटा हुआ था और हर एक भागके शासक अत्याचार, अनुदार विचार और अमानुष व्यवहारमें एक दूसरेको मात करनेके यत्नमें लगे हुए थे। इटलीके सारे भागोंकी एक ही दशा थी। *लम्बार्डी* और *वेनिस*का शासन अनुदार अत्याचारियोंके सर्दार आस्ट्रियाके प्रधान मन्त्री *मैटर्निच*के प्रतिनिधि ही करते थे। *मैटर्निच*का नाम ही इस बातको प्रमाणित कर देता है कि *लम्बार्डी* और

वेनिसके वासी फूलोंकी सेजपर नहीं सोते थे। *नेपल्स* और *सिसिली* नामको स्वतन्त्र थे, परन्तु यह जानकर सन्देह दूर हो जाते हैं कि वहाँ स्पेनसे आया हुआ राज परिवार राज्य करता था, और जिस समयका हम वर्णन कर रहे हैं, उस समय वहाँ फर्डिनएडका राज्य था, जिसकी क्रूरतामें धोखेबाज़ीका पैवन्द लगा हुआ था। इटलीकी दशा ऐसी गिर गयी थी कि *टस्कनी*को हम केवल इस लिये सुखी प्रान्त कहते हैं कि वहाँका ग्राण्डड्यूक सैकड़ोंको एकदम गोलियोंका शिकार नहीं बनाता था। सुख और चैन तो वहाँ भी न थे। यही हालत और छोटे छोटे प्रान्तोंकी थी।

दो प्रान्त थे, जिनपर निराश इटलीवासियोंकी दृष्टि आशा सहित पड़ती थी। उनमेंसे पहला रोम था। रोममें चिरकालसे पोपका राज्य चला आता था। केवल एक नगर ही नहीं, इर्द गिर्दका बहुत सा भाग भी पोपकी ही जागीरमें गिना जाता था। पोप रोमन-कैथोलिक ईसाइयोंका गुरु था, किन्तु धार्मिक प्रधानतासे उसकी राजनीतिक-प्रधानतामें क्षति नहीं आती थी। भेद इतना ही था कि जहाँ अन्य नरपति केवल शासन सम्बन्धी अधिकारोंके बलपर ही प्रजाको कष्ट दे सकते थे, वहाँ रोमका पोप शासन और धर्म, दोनोंके नाम अपनी पालनीय प्रजाका लहू चूस सकता था। केवल लौकिक स्वामियोंकी अधीनतामें रहनेवालोंकी अपेक्षा लौकिक-

धार्मिक-स्वामियोंकी प्रजाको अधिक दुःख भोगने पड़ते थे। इतना होते हुए भी एक बात थी। रोमका पोप आस्ट्रियाके नीचे नहीं था। उसके लिये मेटर्निचकी अँगुलीपर नाचना आवश्यक नहीं था। उसकी धार्मिक स्थिति उसे आस्ट्रियाकी वशंवदतासे ऊँचा उठा देती थी। इस लिये अन्य छोटे २ शासकोंकी अपेक्षा, रोमका शासक, यदि चाहता तो, अपने राज्यमें अधिक सुधार कर सकता था। वह चाहता तो अपने धार्मिक-महत्वके बलपर सारे देशको स्वाधीनताका अमृत पान करा सकता था। यह सुख-सपना पहले पहल प्रसिद्ध दार्शनिक गयोबर्टीने देखा था।

गयोबर्टी बड़ा भारी दार्शनिक था, उसने दर्शनों पर बहुतसी पुस्तकें लिखी हैं। वे सभी पुस्तकें अपने २ विषयोंका विवेचन इटलीके विशेष सम्बन्धसे करती हैं। उसकी जो सबसे बड़ी पुस्तक है, उसमें इटलीके भविष्यपर संसारका भविष्य अवलम्बित बताया है। गयोबर्टीका सपना यह था कि रोमके पोपकी प्रधानतामें इटली देश फिर एकबार स्वतन्त्र और एक इटली हो जाय।

इटलीके विचारकोंमें एक और बड़ा दल था, जिसकी सम्मति थी कि पोप इस भारी बोझके योग्य नहीं है। जब तक पोपको साम्प्रदायिक पक्षपातका संचारी रोग लगा हुआ है, तब तक उसे राजनीतिक प्रधानता देना केवल भूल ही

नहीं, बल्कि अपराध है। पोपका गौरव धार्मिक कल्पनापर स्थित है, इस लिये ऐसा समय आना कठिन है, जब रोमकी गद्दी पर धार्मिक, पक्षपात हीन पोप बैठे। ऐसी युक्तिशृङ्खलासे वे इस परिणामपर पहुँचते थे कि एकता और स्वाधीनताका केन्द्र रोमसे अन्यत्र ढूढना चाहिये।

रोमसे उठकर उनकी निराशामिश्रित आशा भरी दृष्टि सार्डीनियापर जा पड़ती थी। सार्डीनियाका वर्तमान राजवंश यद्यपि फ्रांससे आया था, तो भी भारतवर्षके राजपूतोंकी भाँति अपने नये घरका सच्चा गृह स्वामी बन गया था। इटलीके समस्त प्रान्तोंमेंसे सार्डीनियाका शासन ही 'उत्तम' कहा जा सकता था। वहाँके तत्कालीन राजा चार्लस एलबर्टके विलक्षण व्यक्तित्व से लोग बहुतसी आशाएँ रखते थे। आशाकी गम्भीरताके साथ प्रायः आशंकाएँ भी निवास किया करती हैं। चार्लस एल्बर्टकी निश्चित देशभक्ति आशा उपजाती थी, तो उसका अस्थिर स्वभाव आशंका। उसकी नैसर्गिक नित्य उदारतापर इटालियन देशभक्त जातिकी उम्मीदें बाँधते थे तो उसकी भयजनित अनित्य अनुदारताके झोंके उनके चित्तोंको कँपा देते थे। तो भी अभीष्ट आशा अनिष्ट-आशंकाको दबा देती थी। जोशीले मनका स्वभाव ही ऐसा है। वह चाही हुई चीज़की उत्कट कामनामें, अनचाही वस्तुको आँखोंसे ओझल कर देता है। चार्लस एल्बर्टके

सिंहासनारूढ़ होनेके समय मेज़िनीने उसके नाम एक लम्बा चिट्ठा लिखा था, जिसमें देश-भक्ति, मनुष्यता, स्वार्थ, लोभ, और भय, इन सभी निमित्तोंको उसके सामने रखते हुए देशभक्तने दोलायमान राजाको स्वाधीनताके मार्गपर स्थिर होनेका आदेश किया था। चार्लस एल्बर्ट हृदयसे सच्चा मातृ-भूमि का भक्त था, किन्तु उसके अन्दर प्रायः युद्ध हुआ करता था। देशभक्तिसे परिणाम भीरुताका, साहससे आशंकाका और नैसर्गिक उदारतासे सामयिक अनुदारता का। इन्हीं भावात्म युद्धोंके झमेलेमें पड़कर वह यत्न करता हुआ भी कृतकार्य नहीं हो पाता था। जयलक्ष्मी संशयात्माको कभी नहीं वरती। जो पर्वतके समान स्थिर हो कर क़दम आगे ही आगे बढ़ाता जाय, जयलक्ष्मी भी उसीका साथ देती है।

इटलीके देशभक्तोंमें इन दो दलोंके अतिरिक्त एक और भी दल था। क्रान्तिका संचालक बल इसी दलका था। वह दल न पोपका मुँह देखता था, न चार्लस एल्बर्ट का, वह प्रजातन्त्र राज्यका पक्षपाती था। मेज़िनी उसका नेता था। मेज़िनीक मूलमन्त्र 'परमात्मा और प्रजा' था, और उसकी सम्मति थी कि इटलीका उद्धार प्रजातन्त्र राज्य द्वारा ही होगा। प्रजा ही अपना हित देख सकती है, और लोग उसे धोखा भी दे सकते हैं। मेज़िनीकी सम्मति थी कि इटलीका भला न पोपसे होगा, न चार्लस एल्बर्टसे। उसका सितारा न रोममें

चमकेगा न सार्डीनियामें। इटलीही इटलीका उद्धार करेगा और इटलीमें ही इटलीका सितारा चमकेगा।

इसी दलकी शक्तियाँ क्रान्तिकी ज्वालाको भड़काने वाली हुईं। फ्रांसमें १८४८ ई० में जो परिवर्तन आये, उन्होंने इटलीके देशभक्तोंपर गहरा प्रभाव डाला। क्रान्तिकी ज्वाला यूरोपके एक ओरसे दूसरे छोर तक पहुँच गयी। इटालियन वीरोंके हृदयोंमें भी दावानल भड़क उठा। इटलीमें भी क्रान्तिका भयंकर तूफ़ान अपने करतब दिखलाने लगा।

दूसरा परिच्छेद

ज्वाला जागी।

"अदृष्टपूर्वमभवत् लोकोद्धाराय किंचन"

लोकोद्धारके लिये कुछ अद्भुत ही दृश्य उपस्थित हुआ।

गेरीवाल्डीने दक्षिण अफ़्रीकामें जो कार्य किया, वह उसके इतिहासमें सुवर्णाक्षरोंमें ही नहीं, मोतियों के अक्षरोंमें लिखा जाने योग्य है। अपने देशकी स्वाधीनताके लिये लड़ना मनुष्यका कार्य है। जो उसके लिये भी प्राणार्पण नहीं करता, वह पशुके समान है। किन्तु किसी दूसरे देशमें स्वाधीनता देवीका आधिपत्य स्थापित करनेके लिये अपनी आहुति देनेको उद्यत होना देवताओंके योग्य है। गेरीवाल्डी मनुष्य नहीं देव था।

देव कार्य समाप्त हो गया। शत्रुओंके दलोंको पराजित करके मुनि तुल्य सेनापति अपनी सहधर्मिणी सहित निर्धनता और सादगीके दिन बिताने लगा। काम तो किया, पर प्यास न बुझी। इन सब दिनोंमें गेरीवाल्डीका शरीर दक्षिण अफ़्रीकामें डोलता था, किन्तु मन इटलीके नगरोंपर मँडरा

रहा था। उसका उदारताजन्य स्नेह दक्षिण अफ्रीकामें भी था, किन्तु नैसर्गिक प्रेम बारंबार उसे जन्मभूमिकी ओर खेंचता था। इटलीकी प्रजाके कष्ट-क्रन्दन अपरोक्ष-रीतिसे निरन्तर उसके कानोंमें पड़ रहे थे। इधरका कार्य समाप्त होते ही दिलमें प्यारी मातृभूमिकी धुन बल पूर्वक जागने लगी, रात दिन इटलीकी माला घूमने लगी।

इन्हीं दिनों कुछ ऐसी घटनाएँ भी उपस्थित हुईं, जिन्होंने गेरीवाल्डी और उसके देशभक्त दलके हृदयोंमें आशाका संचार कर दिया। इटलीके गम्भीर अँधियारीसे आवृत आकाशमें दो एक ऐसी किरणें दिखायी दीं, जिन्हें देखकर देशभक्तोंके हृदय उमड़ उठे। अमावसकी रातमें छोटासा तारा भी धन्य होता है, घोर मेघावृत नभोमण्डलमें क्षणप्रभा भी सौभाग्यसे आती है। बेचारा राही राह भूलकर तारा और क्षणप्रभाको ही सूर्यसे बढ़कर मानने लगता है। इटलीके देशभक्तोंने भी छोटे २ चिन्हों को देखकर बड़ी २ सम्भावनाएं बाँधनी प्रारम्भ कर दीं।

पीडमौण्टके राजा चार्लस एल्बर्टने अपने राज्यमें कई आवश्यक समाज सुधार किये। प्रजाको अपने प्रतिनिधियों द्वारा राजकाजमें हिस्सा लेनेका अधिकार कोई छोटा अधिकार नहीं था। प्रजाका हाथ शासनमें होनेसे जैसे भी सुधार हुआ करते हैं, उनका उपक्रम देखकर पन्थाई मठका महन्त

आस्ट्रिया घबरा उठा, और घबराकर इधर उधर हाथ पांव पटकने लगा, और बस न चलता देखकर उसने पोखमौएट-को व्यापार रोकनेकी धमकी दी। चार्लस एल्बर्टकी सरकारने उस धमकीका उचित उत्तर दिया। इटालियन लोगोंके हृदय जोशसे उछलने लगे। आस्ट्रियाका सामना करनेवाला प्रान्त भी इटलीमें विद्यमान है, यह विचार ही उन्हें प्रसन्न करनेके लिये पर्याप्त था। इटालियन लोग सोचने लगे—"हम आस्ट्रियाके सामने ऐसे अनाड़ी बालक हो नहीं हैं। हम उसकी धमकीका उत्तर धमकीसे भी दे सकते हैं" चारों ओर "शाबाश चार्लस एल्बर्ट!" का साधुवाद गूंजने लगा।

इधर रोमकी कथा सुनिये। रोमके पहले पोपका देहान्त हो गया और उसके स्थानपर नया पोप चुना गया। उसका नाम 'नवम पायस' रखा गया। इस नये पोपका पूर्व जीवन साहसिक जीवन था। वह फूलोंमें नहीं पला था। उसने संकुचित धार्मिक स्थितिमें ही अपना जीवन नहीं बिताया था। उसने कई पापड़ बेले थे और समय २ पर ऐसी २ सम्मतियां प्रकाशित कर चुका था, जिनसे लोग उसे उदार देश भक्त समझने लगे थे। उसके पोप होनेकी लोगोंको आशा भी नहीं थी—किन्तु अनहानी होगयी! नवम पायस पोप चुना गया। उसके प्रभावका समाचार सुनकर संकुचित विचारोंके साथ मैटर्निचने कहा था कि—"हम पोपके सिवाय और सब

बातोंके लिये तय्यार थे, लोगोंके आशाकुसुम खिलने लगे, सारे देशकी टकटकी रोमपर लग गयी। नये पोपके पहले कार्योंने लोगोंकी आशाओंको और भी बढ़ा दिया। चुनावके थोड़े दिन पीछे ही रोममें राजनीतिक-क्षमाकी घोषणा कर दी गयी। घोषणाका तात्पर्य यह था—

'राजनीतिक सम्मतियों या पिछले राजनीतिक कार्योंके लिये पोपके राज्यमें किसी व्यक्तिको भी दण्डित न किया जायगा। जिस इटलीमें स्वाधीनता का साँस लेना भी दुष्कर था, उसके एक प्रान्तमें राजनीतिक क्षमाका नियम होजाना विष-मरुस्थलमें अमृत-नदीके समान था। यह समाचार चारों ओर फैल गये, और समुद्र पार करके गेरीवाल्डीके कानों तक भी पहुँच गये। प्यासेको पानी मिल गया, भूखोंको अन्नकी प्राप्ति हुई। गेरीवाल्डीने अपने छोटेसे दलके साथ मातृ भूमि-की ओर पयान करनेकी ठान ली।

जिस रिपब्लिकको गेरीवाल्डीने शत्रुके शिकंजेसे बचाया था, वह उसे छोड़नेके लिये उद्यत नहीं थी। उसके जानेके मार्गमें कई रुकावटें डाली गयी, धनका मिलना कठिन हो गया, आनेवाले जहाज़ोंने अपना किराया बहुत बढ़ा दिया, और भी कई विघ्न उपस्थित किये गये, पर वे इटालियन-वीर जिन्हें सैन अएटोनियोमें सातगुने शत्रु न रोक सके थे, कहाँ रुकने

वाले थे। सब विघ्न बाधाओंको पछाड़ कर वीर-दल इटलीकी ओर रवाना हुआ।

मातृभूमिकी ओर चलते हुए इस साहसिक दलकी आशा-तन्तुका आधार नया पोप था। उन्होंने आते २ लोगोंसे नवम पायसके चुनावका समाचार सुनकर आशा बाँधी थी, राजनीतिक क्षमाकी घोषणा सुनकर आनन्दके आँसू बहाये थे। अंजानी और गेरीवाल्डीने मिलकर एक प्रार्थनापत्र नवीन पोपके नाम लिखा था; जिसमें "स्वाधीनताके अवतार-भूत" पोपका अभिनन्दन किया था, और उसके चरणोंमें अपना तन मन धन अर्पण करनेका संकल्प प्रकट किया था। बड़े ज़ोरदार शब्दोंमें इटालियन दलने पोपमें तथा देशमें अपना भक्ति भाव प्रकट किया था, और लिखा था कि "हम लोग आपके सिंहासनके चरणोंमें अपना सर्वस्व भेंट करते हैं। उन्हें आशा थी कि स्वाधीनता बरसाने वाला पोप स्वाधीनताके सैनिकोंकी सेवासे अवश्य लाभ उठाएगा। गेरीवाल्डीके दल को मार्गमें तीन मास लगे। इन तीन महीनोंमें रोमनगरीमें तो मानो शताब्दी बीत गयी। थोड़े दिन तक पोपने उदारतासे स्वाधीनताके नये से नये गुच्छे उपहार स्वरूप दिये, किन्तु समझदार लोग प्रारम्भसे ही सन्देह करते थे। पोप तभी कोई उदार कार्य करता था, जब प्रजाकी सम्मतिका दबाव असह्य हो जाता था। प्रजा सभाएँ करती थीं, शोर-

शोर मचाती थी, बारम्बार डेपुटेशन भेजती थी, तब पोप एक सुधार कर देता था, शासकके लिये इससे बढ़कर कोई भयंकर बात नहीं। प्रजाको यह निश्चय हो जाना कि उनका राजा स्वयं सुधार न करेगा, और हलचलके दबावसे सब कुछ करेगा, राजाके लिये बड़ा हानिकारक है। प्रजा नित नया जमाव करती रहेगी, नित नई हलचल मचाती रहेगी। प्रजाकी माँगकी सीमा न रहेगी। कभी न कभी ऐसा समय आएगा जब प्रजाकी इच्छा पूरी करना राजा को या शासकको असम्भव जँचेगा। उसकी दुर्बल आत्मा काँप जायगी। तब प्रजाका रोष-सागर उमड़ पड़ेगा। प्रजाको यह अभ्यास हो गया है कि ज़ोरसे आवाज़ देकर अभीष्ट कार्य कराले। जब कार्य न होगा तब अशान्ति असह्य हो जायगी। जो शासक स्वयं तो उदारता दिखानेमें संकोच करता है, और प्रजाके कोलाहल करनेपर उदार बन जाता है, वह अपनी निर्बलताकी स्वयं दुहाई देता है। शासकको चाहिये कि स्वयं ही उदार रहे, प्रजाकी आवश्यकताओंको समझे और प्रजाको यह विश्वास न होने दे कि "हमारा राजा या शासक स्वयं उदार नहीं है, उसे हमारा दबावही उदार बनाता है।" अन्यथा राजा या शासकके जीवनकी घड़ियाँ समयकी धरोहर-पुस्तकमें गिन ली जाती हैं, और शीघ्र ही आय-व्यय बराबर करके हिसाब चुका दिया जाता है।

पोपकी ऐसी ही दशा हुई। कुछ महीनों तक पोप स्वाधीनताका देव बना रहा। शीघ्र ही उसका हाथ खिंचने लगा। प्रजाके हलचल मचानेपर फिर उसे उदारताका भगवाँ वेष धारण करना पड़ा था, कागको हंस बनना पड़ा था। पर यह बनावटी बाना कितने दिन चल सकता था। शीघ्र ही पोपके साथ अनुदारता और अत्याचारका सम्बन्ध जुड़ने लगा। गेरीवाल्डीका दल जिस समय इटलीमें पहुँचा, उस समय तक काग अपने काले रूपमें प्रकट हो चुका था, पोपका उदार-खोल उतर गया था। इटालियन दलके ,अर्पणपत्रका कोई उत्तर भी न मिला था। इस लिये गेरीवाल्डीने बनावटी सूर्यको छोड़, पीडमौएटके असली सूर्यकी ओर मुँह किया, रोमका मार्ग छोड़ टूरिनका रास्ता लिया।

उस समय पीडमौएटका सितारा चमक रहा था। समस्त इटलीबासियोंका हृदय चार्लस एल्बर्टकी देशभक्तिपर भरोसा किये बैठा था। चार्लस एल्बर्ट उस समय सारे देशकी आशालताका आधार बना हुआ था। गेरीवाल्डी मातृभूमिकी सेवामें अपना सर्वस्व-बलिहार करनेका संकल्प कर चुका था, वह केवल उस वेदीकी ढूँढमें था, जहाँ तन मन धनकी आहुति दे सके। साथ ही उसे उस ऋत्विक्की भी ढूँढ थी, जो मातृभूमिकी यज्ञकी पूर्ति करे। उसी ऋत्विक्की खोजमें पहले वह पोपकी शरण गया, वहाँसे निराश होकर वह चार्लस एल्बर्टके

पास पहुँचा। दैव-दुर्योग कि वहाँ भी उसे निराश होना पड़ा। वहाँ भी गेरीवाल्डीको यह ज्ञात हुआ कि सारे संसारमें देश भक्ति ही उच्च और शुद्ध स्वरूपमें विद्यमान नहीं है। वह जब चार्लस एल्बर्टके पास गया, तब आशाओंसे भरा हुआ था, किन्तु सांसारिक-समृद्धि प्रायः विवेक-शक्तिको कुण्ठित कर लेती है। चार्लस एल्बर्टने बड़ी सर्दी दिखायी, उपेक्षाका व्यवहार किया और गेरीवाल्डीको निराश करके भेज दिया। अज्ञान जौहरीने सच्चे रत्नको न पहिचाना और झूँठा समझ कर फेंक दिया। गेरीवाल्डीको चार्लस एल्बर्टसे भारी निराशा हुई, किन्तु इससे मातृभूमिकी सेवामें सर्वस्व अर्पण करनेका उसका संकल्प और भी दृढ़ हो गया। राजभवनसे निराश निकले हुए गेरीवाल्डीको मिलानके देसे समाचार सुनाई दिये, जिन्होंने उसकी क्षणिक उदासीको क्षणभरमें ही नष्ट कर दिया।

देशोंके इतिहासमें ऐसे समय आते हैं जब वहाँके वासियोंमें परिवर्तन सा आजाता है। न जाने कैसे एक बिजली सी चल जाती है, जो कायरोंको बाँकुरा वीर, दुकानदारोंको सिपाही, पादरियोंको आल्हा गाने वाला और निर्बल कायोंको भीमसेन बना देती है। जिनसे कोई लकड़ी उठानेकी भी आशा न रखता था, वे कन्धेपर बन्दूकें धरे फिरते हैं, जो बारह घंटे सोते और फिर भी उनींदा होनेकी शिकायत करते थे, वे रातों जागकर फौज़का पहरा देते हैं। ऐसे समय प्रायः

आते रहते हैं। जातियोंके इतिहासमें वे पवित्र समझे जाते हैं। इटलीके इतिहासमें वही समय आगया था। ऐसे समयमें ही समुद्रके तलमें पड़े हुए मोती तहपर आ जाया करते हैं और उनपर जमी हुई काई धुल जाया करती है। एक एक सिपाहीको सेनापति बनाना ऐसे ही समयोंके हाथमें होता है।

यूरोप वृक्षपर जड़मूलसे हिला देनेवाले कुल्हाड़ेका पहला वार फ्रांसमें हुआ। ऐसा प्रायः होता ही आया था। चिरकालसे फ्रांस यूरोपका मर्मस्थल बना हुआ था। २४ फ़रवरी १८४८ के दिन फ्रांसकी राजगद्दीपरसे उस *लूई फ़िलिप* को गिरा दिया गया था। जो कुछ वर्ष पूर्व आदर पूर्वक राज-तिलकसे सम्मानित किया गया था। एक सिंहासन हिलनेसे समस्त यूरोपमें कँपकँपी फैल गयी। बर्लिनमें क्रान्तिकी ज्वाला जल उठी, और तो क्या, अनुदारताके मठ वायनामें भी ज़बरदस्त धक्का पहुँचा और अत्याचारके लाटपादरी *मैटर्निच* को राज-धानी छोड़कर भागना पड़ा। मैटर्निचके अधःपात और वायनाके जागनेसे क्रान्तिके प्रवाहको रोकने वाले सबसे बड़े बन्द काट दिये। चारोंओर जागृतिकी आहट पहुँचने लगी।

इटलीके इतिहासमें 'मिलान' का नाम स्मरणीय रहेगा। उसने इस नयी क्रान्तिकी चिनगारीको सबसे पहले लगाया। १३ मार्चको मिलानके बाज़ारोंमें संयुक्त स्वाधीन इटलीकी

झंडियाँ घूमने लगीं, नगरवासियोंने मिलकर स्वाधीन मिलान की घोषणा दे दी। उस समय मिलानमें स्वाधीनताकी घोषणा देना सहल काम नहीं था। आस्ट्रियाके अत्याचारोंका गढ़, *'लम्बार्डी'* था, मिलान उसका मुख्य नगर था। उस समय मिलानमें आस्ट्रियाके लगभग बीस हज़ार सिपाही विद्यमान थे और पुराना अनुभवी प्रसिद्ध सेनापति 'रैटज़्की' उनका नेता था। इस सेना और इस सेनापतिकी उपस्थितिमें नगर वासियोंका स्वतन्त्र इटलीकी घोषणा देना वस्तुतः उस परम साहसका कार्य था, जो शुभ उद्देश्योंपर दृढ़ रहने वालोंको जगदीश्वरकी कृपासे प्राप्त होता है। मिलानके पाँच दिन प्रसिद्ध हैं। रैटज़्की नहीं जानता था, मिलानवासी भी नहीं जानते थे, कि घर द्वारके किन कोनोंमेंसे जातीय सिपाही निकल रहे हैं। जिन्होंने कभी तलवारका एक हाथ नहीं फिराया था, वे पुराने खिलाड़ियोंकी भाँति जानपर खेल रहे थे। क्रान्तिका भली प्रकार आरम्भ १८ मार्चको हुआ, और २२ मार्चको रैटज़्की अपनी सेनाओंको लेकर मिलानसे भाग निकला। पुरानी शिक्षित सेनाका साहस न हुआ कि स्वाधीनताके मदसे मस्त जातीय शेरोंका सामना कर सके।

मिलान एक नगर था, आस्ट्रियाका विस्तृत साम्राज्य था। बिना सहायताके एक नगर कब तक ठहर सकता था। वहाँकी सामयिक सरकारने सहायताके लिये पोप और चार्लस

एल्बर्टसे प्रार्थना की। पोपकी ओरसे जो उत्तर मिला उसने कागपरसे हंसके पर उतार दिये। लोगोंको ज्ञात हो गया कि इस साम्प्रदायिक पादरीसे स्वाधीनता पानेकी आशा वैसी ही है जैसी खारी समुद्रसे शहद पानेकी आशा। पोपने साफ़ इनकार कर दिया।

चार्लस एल्बर्ट पहले तो कुछ देर दोलायमान रहा, किन्तु आख़िर मार्च की २५ तारीखको उसके पाँच हज़ार सिपाहियों ने आस्ट्रियाकी सीमामें प्रवेश किया।

गेरीवाल्डी मिलानके उत्थानका समाचार सुनतेही उधर-को रवाना हुआ। स्वाधीन नगरीमें स्वाधीनताके दूतका शानदार स्वागत हुआ। स्वाधीनताका मुनि मेज़िनी पहलेसे ही वहाँ पहुँचा हुआ था और सेनामें ध्वजा उठानेका कार्य करने लगा था। मिलानके अधिकारियोंने गेरीवाल्डीकी सहा-यताको धन्यवाद सहित स्वीकार किया और उसे स्वयंसेवकों की सेना तय्यार करनेका अधिकार दिया। देखते ही देखते गेरीवाल्डीने देशभक्त इटालियन नौजवानोंका एक अच्छा समूह इकट्ठा कर लिया, और पीडमौण्ट से बढ़ती हुई सेनाओं की सहायताके लिये प्रयाण किया।

उस समय सारे इटली देशमें एकही शब्द था। सारे देशवासी एक ही रंगमें मस्त थे। वह रंग आशाका सुहावना रंग था। हरेक इटालियन दूसरेसे यही कहता था कि " वह

दिन आ गया, जिसकी वर्षोंसे अभिलाषा थी" नगर अपने आप चार्लस एल्बर्टको निमन्त्रण दे रहे थे, पोपके हटाते हटाते भी रोम की सेनाएँ मिलानकी सहायताके लिये रवाना की गयी थीं, कोई नगर और ग्राम नहीं था जहाँसे स्वयंसेवकोंका समूह देशके शत्रुसे लड़नेके लिये न चल दिया हो।

कार्य प्रारम्भ तो बड़ी कृतकार्यतासे हुआ, किन्तु आगे कई रुकावटें आने लगीं। पोपने ठीक मौक़ेपर कोरा जवाब दे दिया, चार्लस एल्बर्टने कई बार अनुचित बिलम्बसे अपना काम बिगाड़ लिया, और मिलानमें इस प्रश्नपर झगड़ा होने लगा कि नगरीको पीडमौएटके साथ मिला दिया जाय या जुदा प्रजातन्त्र राज्य स्थापित किया जाय। भयके समयमें ऐसे विवाद हानिकारक हुआ करते हैं। बहुत झगड़ेके बाद मिलानकी सामयिक सरकारने यही निश्चत किया कि नगरको पीडमौएटके साथ मिला दिया जाय। किन्तु तब तक अपनी भूलोंसे चार्लस एल्बर्ट विजयके अवसर खो बैठा था। प्रेम और युद्धमें समय ही सब कुछ है। समय चूकते ही हृदय और शत्रुके जीतनेका अवसर जाता रहता है। शीघ्र ही रैटज़्की को पर्याप्त सहायता मिल गयी, उधर वायनामें भी क्रान्तिकी समाप्ति हो गयी और पाँच मासके पीछे ६ अगस्तको चार्लस एल्बर्टने अपनी हार मान ली।

यह हार क्यों हुई? जोशकी कमी नहीं थी, स्वार्थ-त्याग

की कमी नहीं थी। फिर कृतकार्यता क्यों न हुई? इसके मुख्यतया तीन कारण थे। चार्लस एल्बर्ट भलामानस था, परन्तु समयको नहीं पहचानता था। जो समयको नहीं पहचान सकता था, वह सेनापति बननेके अयोग्य था। अस्थिर-मति पुरुष कभी युद्धमें विजय नहीं पाया करते। चार्लस एल्बर्टको विश्वास था कि पोप उसकी सहायता करेगा। किन्तु ठीक समयपर आकर रोमके अध्यक्षने उसे सूखा उत्तर दे दिया और इटैलियनोंके हृदय तोड़ दिये। तीसरा कारण यह था कि अभी तक इटलीवासियोंने एकताका पाठ पूरी तरह नहीं पढ़ा था। देश-भक्तिके नामपर तो एक होना सीखा था, परन्तु क्रियाक्षेत्रमें जैसी विचार और यत्नकी एकता चाहिये वह इटलीवासियोंने नहीं सीखी थी। बस, इन्हीं तीन कारणोंसे क्रान्तिका यह परिच्छेद सुखान्त नहीं हुआ।

चार्लस एल्बर्टके हार माननेपर गेरीबाल्डीको भी आज्ञा हुई कि वह स्वयं-सेवक-दलको लौटा लाए। गेरीबाल्डीके दलको रणक्षेत्रमें आये अभी अधिक समय न हुआ था, तो भी उसने कई वीरताके कार्य किये थे। थोड़ी सी संख्यामें होते हुए भी शत्रुको कई जगह कठिनाईमें डाला था। इतना शीघ्र युद्ध समाप्त होनेका समाचार सुनकर गेरीबाल्डीको बड़ा दुःख हुआ। उसका हृदय नहीं हारा था उसकी तो

प्यास अभी चमकी ही थी। चार्लस-एल्बर्ट या मिलान-सरकारकी आज्ञाकी कोई पर्वाह न करके वह बहुत दिनों तक आस्ट्रियन सेनाओंसे लड़ता रहा। थोड़ेसे आदमियोंकी सहायतासे नगरोंपर छापे मारता रहा, और अपने सुरक्षित निकल जानेके मार्ग निकालता रहा। आस्ट्रियन सेना उसका बलपूर्वक पीछा कर रही थी। वह पीडमौण्टकी ओर लौटने लगा तो उसे ज्ञात हुआ कि पराजयकी आज्ञा न माननेके कारण उसका वहाँ जाना आज्ञासे बन्द कर दिया गया है, उसने अपना रास्ता बदल लिया। कम होते साथियोंको दिलासा देता हुआ, और बढ़ते हुए शत्रुओंका सामना करता हुआ वह स्विट्ज़रलैण्डकी सीमाके पास पहुँच गया। अब उसके पास न तो गोला बारूद था न खाने पीनेका सामान, किन्तु हाँ, उसके पास अजित और अजेय आत्मा अवश्य थी, उसीके भरोसे अनेक कष्ट सह कर वह असहाय युद्ध करता रहा। अन्तको लड़ना व्यर्थ समझ कर, साथियोंको फिर कभी मिलनेकी आशा दिला कर उसने दलको तितर बितर कर दिया और स्वयं थकी माँदी और निराहार अवस्थामें स्विट्ज़रलैण्डकी सीमामें पहुँच गया।

तीसरा परिच्छेद

वेनिसका पिता

"स पिता, पितरस्तेषां केवलं जन्महेतवः ।"

(कालिदास)

उनके पिता तो केवल जन्मके हेतु थे, वास्तविक पिता वही था ।

सन् १८४८ के मार्च मासकी १७ वीं तारीख़ थी। वेनिस नामके प्रसिद्ध नगरके निवासी समुद्र तटपर खड़े हुए, आनेवाले जहाज़की प्रतीक्षामें थे। जहाज़ बन्दरगाह ट्रीस्टे से आरहा था और आस्ट्रियाके समाचार ला रहा था। जनता समाचार सुननेके लिये उत्सुक खड़ी थी। इतनेमें एक जहाज़ दूरसे आता दिखाई दिया। लोगोंकी उत्सुकता बढ़ने लगी। जहाज़ पास आया और उसपरसे एक फ्रांसीसी व्यापारीने चिल्लाकर कहा "वायनामें राज्य पलट गया। इटलीकी स्वाधीनता स्वीकार की गयी। प्रेसको स्वतन्त्रा मिलगयी। जातीय रक्षक-सेनाको अधिकार प्राप्त होगया।" ये शब्द जनताके लिये पर्याप्त थे। जन-समूह

वहाँसे दौड़ता हुआ आस्ट्रियन शासकके द्वारपर पहुँचा। वहाँ जाकर सबने कहा 'मैनिन'' और 'रोमेसियो' को बन्दी-गृहसे छोड़ दो'' शासक आस्ट्रियन था, इन दो देशभक्त इटालियनोंको कैसे छोड़ता। वह बेचारा सोच-विचारमें पड़ गया। द्वारपरसे औरभी ज़ोरसे शब्द आने लगा—'छोड़ दो, छोड़ दो' शासकका नाम कौएट पाफ़ी था। उसका चित्त उसे जवाब देने लगा। शोर और भी बढ़ने लगा। पाफ़ी डर गया और यह कहते हुए कि—'मैं वह कार्य करता हूँ, जो मुझे नहीं करना चाहिये'' दोनों कैदियोंके छोड़नेकी आज्ञा दे दी।

आँख झपकनेमें विलम्ब लगता है, वह जन-समूह उससे भी पूर्व बन्दीगृहकी ओर बह चला। वहाँ जाकर दोनों देशभक्तोंको छुड़ा लेना कुछ मिनटोंका ही काम था। मैनिन और रोमेसियो बाहर आये; उन्हें देखकर लोगोंकी खुशीका पारावार न रहा। इनदोनोंको प्रेमपूर्ण जोशीले युवकोंने कन्धोंपर उठा लिया। मैनिन इतने दिनोंके कारागृह-वाससे निर्बल और पीला हो रहा था। लोगोंने उसे ऊँचा उठा लिया, और कुछ कहनेकी प्रार्थना की। चारों ओरसे 'कुछ कहिये' 'कुछ कहिये का शोर मच गया। इस निर्बल दशामें देशभक्तको कुछ बोलना पड़ा। उसने कहा:—

"मैं नहीं जानता कि मुझे किन महान् कारणोंसे स्वाधीनता मिली है, किन्तु इतना मुझे प्रतीत हो रहा है कि बीते

हुए कुछ महीनोंमें राष्ट्रीयभाव और देशभक्तिकी ज्वाला बहुत तीव्र हो गयी है। किन्तु यह मत भूलो कि सच्ची और स्थिर स्वाधीनता प्रबन्धपर ही आश्रित रह सकती है। और यदि तुम उसके योग्य बनना चाहते हो तो प्रबन्धके रक्षक बनो" क्षणभर ठहरकर उसने फिर कहा:—"किन्तु भगवानके निर्देशसे ऐसे समय आते हैं, जब राज्यक्रान्ति केवल अधिकार ही नहीं, कर्तव्य भी हो जाता है।"

लोगोंने मैनिनके शब्दोंको ऐसे सुना जैसे भक्तलोग अपने पूज्यदेवकी वाणी सुनते हैं। पाठक महोदय! आप प्रश्न करेंगे, 'वेनिसके निवासी जिसके इतने भक्त हैं वह मैनिन कौन है।' अच्छा, इस अद्भुत देशभक्त की पूर्व-गाथा सुनिये।

डैनियल मैनिन एक ऐसे यहूदी पिताका पुत्र था, जिसने ईसाई-मत स्वीकार कर लिया था। लड़कपनसे ही उसकी बुद्धिकी तीव्रता लोगोंको आश्चर्यमें डालती थी। १७ सालकी आयुमें वह ग्रेजुएट होकर 'डाक्टर आव् ला' अर्थात् राजनियमों का आचार्य भी बन गया। ठीक उमरका होकर उसने वकालत प्रारम्भ की और बड़ा नाम पाया। उसका स्वास्थ्य पहलेसे ही अच्छा नहीं था। शरीर दुबला पतला था, किन्तु माथा विशाल था, आँखें ओजस्विनी और भावपूर्ण थीं, ओंठ कोमलतायुक्त-दृढ़ताको लिये हुए थे। युवक वकीलके चित्तमें देशभक्तिकी अग्नि बड़े ज़ोरसे धधक रही थी। जब कोई ऐसा

मुक़द्दमा सामने आता, जिसमें किसी इटालियनको आस्ट्रियन शासकोंसे शिकायत होती तो मैनिन झट उसे अपने हाथमें लेता और फिर ऐसी योग्यता और निर्भयतासे निबाहता कि देखनेवाले वाह वाहकी ध्वनिसे आकाश गुँजा देते थे।

धीरे धीरे मैनिन प्रसिद्धि पाने लगा। इटलीके और विशेषतया वेनिसके लोग उसे अपना रक्षक मानने लगे। इसी समय सारे देशमें जातीय-जागृतिका उफान आया, और नवयुवक कानोंमें स्वाधीनताकी वीणा बजने लगी। उस समय मैनिनके साथ देशभक्त कवि टोमेसियोने मिलकर एक आवेदन पत्र बनाया जिसमें इटालियन प्रजाकी शिकायतोंका पूरा ब्योरा लिखकर प्रकाशित किया। अन्य विदेशी शासकोंकी भाँति आस्ट्रियन शासक भी छुईमुईकी भाँति कोमलांग बने हुए थे। ज़रा सी चोट उन पर गहरा प्रभाव करती थी। गिरा हुआ तिनका उनकी काया पर वज्रका सा आघात करता था। उनकी त्वचा अनुभवशील हो गयी थी। इस आवेदन पत्रमें उन्हें राजद्रोह और गुप्त मन्त्रणाकी बू आने लगी। बस, हुक्म हुआ, और दोनों देशभक्त गहरे कारागारमें डाल दिये गये।

जोशमें भरे हुए वेनीशियन-जनसमूहने इसी जोड़ेको कारागारसे मुक्त कराया था। मैनिनका आदेश सुन कर अपने २ घरोंको चले गये और मैनिन लोगोंके उभरे हुए जोश

का दिव्य-दृश्य देखता हुआ भविष्यकी चिन्तामें मग्न हो गया। आगे क्या करना चाहिये, स्वाधीनताकी प्राप्ति कैसे करनी चाहिये, इसपर रातभर विचार करनेके पीछे उसने निश्चय किया, और दूसरे ही दिनसे कार्य प्रारम्भ हुआ।

मैनिनने वेनिसके आस्ट्रियन-शासकको कहला भेजा कि नगरकी रक्षाके लिये नगरवासियोंका एक रक्षक-दल तय्यार करो। शासक पहले दिन मैनिनकी शक्ति देख चुका था, वह उसके विरुद्धाचरण करनेसे डर गया, और दो सौ नागरिकों की भर्तीकी आज्ञा दे दी। आज्ञासे तात्पर्य था, संख्या अनपेक्षित थी। एकदम तीन हज़ार नागरिक भर्ती हो गये। आस्ट्रियन शासक इस नदीके प्रवाहको न रोक सका। आन की आनमें इटालियन नौजवानोंकी एक राष्ट्रीय सेना तय्यार हो गयी, और हुई भी आस्ट्रियन शासकके हुक्मसे। दैवकी गति विचित्र है। सारे रक्षक दलको बुला कर मैनिनने कहा "आप लोगोंमेंसे जो सर्वथा मेरा कहना माननेको उद्यत नहीं, वे जा सकते हैं" तीन हज़ारमेंसे कोई भी नहीं गया।

संक्रामक रोगकी भाँति असन्तोषका रोग भी फैलने लगा। सेनामें जितने इटालियन थे वे भी धीरे धीरे क्रान्तिकारियोंकी ओर आने लगे। बैरकोंमें सिपाहियोंको इटालियन देशभक्तों पर गोली चलानेकी आज्ञा दी गयी तो उन्होंने आज्ञा देनेवालों-को ही बन्दूकका निशाना बनाया।

ऐसी दशा देखकर आस्ट्रियन कर्मचारियोंके दिल दहलने लगे। उधर बाहरसे सहायता देने वाली आस्ट्रियन सेना आ पहुँची। सन्देह हुआ कि शायद वेनिसपर शीघ्र ही गोला-बारी प्रारम्भ होगी। मैनिन और उसके साथी विचार करने लगे कि उस दशामें क्या करना होगा? मैनिनको ईश्वरीय ज्ञान हुआ, एक दम स्फूर्ति हुई। सरकारी गोदाममें गोला बारूद बहुत है पर उसे लावे कौन? बिल्लीके गलेमें घंटी बाँधे कौन? मैनिनने निश्चय किया कि सरकारी गोदाम लूटना ही होगा। उसने नागरिक-सेनाके सेनापतिसे पछा। वह प्रस्तावकी भयंकरतासे इतना विस्मित हुआ कि जिह्वा भी न चला सका। औरोंने भी सन्तोष-दायक उत्तर नहीं दिया। केवल एक सेनापतिने अपना बटैलियन मैनिनके सपुर्द किया, बस, वही बस था। मैनिनने अपनी तलवार म्यानसे निकाली, अपने जवान सोलह-सालके लड़के को बुलाया और केवल दो सौ सिपाहियोंके साथ गोदामपर धावा बोल दिया।

वहां मामला पहले ही तय्यार था। सिपाही हरदम बलवा करनेको तय्यार थे। मैनिनके जाते ही गोदामके अध्यक्षने चाबी उसके हाथमें दे दी। गोदामसे निकाल कर हथियार वेनिस-निवासियोंको बाँट दिये गये।

इस कार्यसे मैनिन वेनिस-वासियोंके लिये और भी

अधिक प्रिय होगया। उसने सारे नगरवासियोंको चौकमें इकट्ठा किया और वेनिसमें प्रजातन्त्र-शासनके स्थापित होने-की घोषणा दी। वह दृश्य सचमुच दिव्य था। बूढ़े प्रौढ़ और बालक सब एक दूसरेसे गले मिल रहे थे, और प्रसन्नता से आँसू बहा रहे थे। 'अहा! क्या हमारा सुख-सपना पूरा हो गया? क्या सचमुच हमारे पिता मैनिनने हमें स्वतन्त्र कर दिया? हमारे अहोभाग्य है।' ऐसी बातें करते हुए नर नारी आनन्दमें मग्न होने लगे।

शीघ्र ही वेनिसमें रहने वाली आस्ट्रियन सेनाने और आस्ट्रियन अधिकारियोंने हथियार रख दिये। वेनिस पचास सालके पीछे स्वतन्त्र होगया।

स्वतन्त्रता पा लेना सहज है, परन्तु उसकी रक्षा कर लेना कठिन है। एक लघुकाय नगर आस्ट्रियन-साम्राज्यकी शक्तिके सामने कब तक खड़ा रह सकता था। किन्तु जो कुछ एक मनुष्य और एक नगरके लिये सम्भव और साधारण दशाओं-में असम्भव था, वह मैनिन और वेनिसने किया। वेनिसने शीघ्र ही अपने पिता मैनिनको नगरका एक मात्र रक्षक बना दिया। मैनिनने नगरकी रक्षाके लिये जो कुछ आवश्यक समझा, नगर-वासियोंने सिर झुकाकर स्वीकार किया। जो स्वार्थत्याग उस समय उन स्वाधीनताके प्यासोंने दिखाया, उसे पढ़कर रोमाञ्च खड़े हो आते हैं। लोगोंने पुश्तोंके गड़े

हुए ख़ज़ाने ओढ़ कर मैनिनके पैरोंपर रख दिये। स्त्रियोंने अपने प्यारे आभूषणोंकी भेंटसे नगरके पिताकी आराधनाकी कि वेनिसकी रक्षामें धनकी न्यूनता रुकावट न डाले। बूढ़े जवान और बालक, सब रात और दिन साधारण मज़दूरों और सिपाहियोंकी भाँति काम करते रहे।

मैनिनने अपना कुछ भी बचा नहीं रखा। उसका स्वास्थ्य पहलेसे ख़राब था, किन्तु इस समय दिनों तक उसे सोना और खाना नसीब नहीं होता था। दिन और रात उसे यही चिन्ता थी, कि वेनिसकी स्वाधीनताकी रक्षा कैसे की जाय। शारीरिक या मानसिक कष्ट उस समय उसके लिये आनन्द-समान हो रहे थे। इतने बड़े शत्रुका अकेले सामना करना कठिन जान मेनिनने सहायकोंकी खोजमें दृष्टि दौड़ायी। फ्रांस पीडमौंट या रोम जिधर आँख उठायं, उधर ही अनिच्छा, कायरता या देशद्रोहके लक्षण दृष्टिगोचर हुए। किसीने हाथका सहारा देनेका साहस न किया। उधर मिलानके स्वाधीनता-युद्धका जो परिणाम निकला, उसे हम जान चुके हैं। अन्य प्रान्तोंके इटालियन देशभक्तोंने अवश्य ही यथाशक्य स्वयं सेवक बन कर सहायता दी। किन्तु वह बहुत थोड़ी थी। एक अकेला नगर चतुर्दिक-चुम्बी आस्ट्रियन-साम्राज्य-को जितनी देर तक रोक सकता था, रोके रहा।

किन्तु यह बड़ा कठिन कार्य था। शत्रुकी सेनाएँ रात दिन

नगरकी दीवारोंके बाहर जमा हो रही थीं। उधर चार्लस एल्बर्ट फिर आस्ट्रियासे पराजित हो चुका था। नगरमें अन्नकी कमी हो रही थी, प्लेग और महामारीके यमदूत घरोंमें घूमने लगे थे, और हर दम डर था कि तोपोंके गोले घरोंको बरबाद करने लगेंगे। वेनिसनिवासी केवल एक पिता मैनिन-पर विश्वास किये, उसे सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् माने हुए स्वाधीनताकी रक्षाके लिये डटे हुए थे। वे समझते थे कि हमारा मैनिन अब तक जीता है, हम हार नहीं सकते। जब नगर निवासियोंमें ज़राभी अशान्ति फैलती थी, मैनिन उनके सामने आता था, और आकर दो चार उत्साहके वाक्य कह देता था। बस जनताका सन्तोष हो जाता था।

आख़िर बाहरसे गोले पड़ने प्रारम्भ हुए। घर जलने लगे जीना कठिन होने लगा। फिर भी लोग मैनिनका मुँह देखकर स्थिर रहे। किन्तु मैनिनका हृदय भविष्यपर विचार करके काँपने लगा। जब रक्षाका कोई उपाय नहीं, तब व्यर्थ नगर-वासियोंकी जानें क्यों गँवायी जायँ। मैनिनका दिल टूटने लगा, उसे निराशा होने लगी। जिस उद्देश्यकी लब्धिके लिये तनकी पर्वा न की, जानको हथेलीपर रखा, और अतुल स्वार्थत्याग दिखलाया, अवस्थाओंके वशीभूत होकर उसे त्यागना पड़ा। निस्सन्देह मैनिनने उसे त्याग दिया। उसका अकृतकार्य यत्न अधूरा ही रह गया, किन्तु उस अकृतकार्य

कधूरे-यत्नने मैनिनके नामको वेनिस और इटलीके इतिहासमें अमर कर दिया।

२४ अगस्त १८४९ के दिन छिले हुए दिलोंसे वेनिस-वासियोंने हथियार रख दिये।



चौथा परिच्छेद

रोमका स्वर्णदिन ।

"चार दिनोंकी चाँदनी, फिर अन्धेरा पाख"

सन् १८४८ का नवम्बर मास था। रोमका इतिहास प्रसिद्ध नगर आवेशके मदमें मस्त था । सारे नगरवासी स्वाधीनताके रंगमें रंगे हुए थे। दिनको और रातको, गली और कूचेमें स्वाधीनताके राग गाते हुए इटालियन-वीरोंके समूह दिखायी देते थे। बूढ़े लोगों की रगोंमें भी लहूकी लहर दौड़ रही थी। ऐसा प्रतीत होता था, मानो अनन्त-कीर्तिकी क़बरमें किसी औषधके प्रयोगसे फिर चेष्टा उत्पन्न हुई है।

प्रजा जाग रही थी और गा रही थी, उधर रोमके अधिपति और ईसाइयोंके गुरुदेवता पोपके भवनके किसी गुप्त मार्गमेंसे एक जर्मन राजदूत एक बुजुर्गसे दीखनेवाले सज्जन को स्त्री सहित भगाये लिये जा रहा था । ऐसा प्रतीत होता था। मानो ये तीनों धर्माचार्य पोपके घरमें चोरी करके भागे

आ रहे हैं। महलोंकी रक्षिका पुलिस सोयी हुई प्रतीत होती थी। रात ही रातमें वे तीन गुप्त राही लम्बा सफ़र कर गये। पौ फटते २ रोमकी सीमा पार करके नेपल्सके राज्यमें घुसने- में किञ्चिन्मात्र भी अन्तर न रह गया। सीमापर पहुँच कर वह अर्मन दोनों साथियोंको वहीं छोड़कर आगे चला गया। छोड़े हुए साथियोंका वेष साधारण-राहियों जैसा था, किन्तु ज़रा ध्यानसे देखनेसे ज्ञात होता था कि यह उनका वास्त- विक वेष नहीं था। यह वेष अपने आपको छिपानेके लिये बनाया गया है। इस जोड़ेको अधिक-समय प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी, शीघ्र ही उन्हें समाचार मिला कि नेपल्सका राजा फर्दिनएड बड़ी सज-धजके साथ इस गुप्त-युगलके स्वागतके लिये आ रहा है। इस समाचारके पहुँचते ही उस जोड़ेने अपने बनावटी पंख उतार डाले और रातके चोर प्रभातके पोप बन गये। शाबाश! भगोड़े चोर नहीं, यह अपने महल- से भागे हुए धर्मपत्नी सहित महाराज पोप हैं, जो अपनी प्रजासे पिंड छुड़ाकर नेपल्सके राजाकी शरण आये हैं। बात यह हुई कि रोमके इस नये पोपने अपने सिंहासनारोहणके समय अपनी प्रजाको बड़ी २ आशाएँ दिलायीं थीं। लोगोंने इसके 'स्वतन्त्रता-दायक पोप'' 'बन्धनोंसे छुड़ानेवाले पोप' इत्यादि नाम रख लिये थे। कुछ दिन लोक प्रिय होनेमें पोपको भी आनन्द आता रहा, किन्तु शीघ्र ही पुराने संस्कार जाग

उठे, आस्ट्रियाका त्योरीदार चेहरा सामने घूमने लगा और पोप अपनी पहली उदारतापर पछताने लगा। पोपका दिल बेईमान होने लगा और प्रजाकी जागी हुई चाह प्रतिदिन बढ़ने लगी। ऐसी दशामें झगड़ेका होना स्वाभाविक था। अविश्वासका बाज़ार गर्म हो गया, पुलिस और प्रजाके झगड़े नियमके रूपमें परिणत होने लगे।

ऐसी दशामें तंग आकर पोपने लोकमतके विरोधी अभिमानी कौएट टाउसीको अपना मुख्य-सचिव बनाया। मुख्य सचिव बननेके दो मास पीछे यह गर्वमूर्ति कौएट कैपीटलकी सीढ़ियोंपर एक जोशीले हाथका शिकार हुआ। यह हत्या रोमके लिये क्रान्तिकी घोषणा थी। प्रजाने आनकी आनमें पोपके महलको घेर लिया और प्रजासत्तात्मक-राज्यका शोर मचा दिया। इसी झमेलेमें सेना और प्रजामें गोलियाँ चलगयीं और प्रजाके क्रोधका पारा सीमाको पार करने लगा। भय बढ़ता देख कर पोपने प्रजाकी इच्छा माननेका वादा किया यह वादा भी पहले बीसियों वादोंकी तरह झूठा था और केवल समय बितानेके लिये किया गया था। पोप भी जानता था और प्रजा भी जानती थी कि वादेकी कीमत उतनी भी नहीं है जितनी उस काग़ज़की है, जिसपर कि वह वादा लिखकर सुनाया गया है। प्रजाका जोश कम न हुआ और वह वादा पूरा करानेके लिये राजद्वारपर डटी रही। उस

समय पोपका हृदय हार गया। पादरीके बनावटी सैनिक वेषमेंसे वही लम्बा चोला दिखाई देने लगा, और आधे ईसाई-जगत्‌का आचार्य वेष बदलकर कैसे चोरीसे भाग गया, यह ऊपर लिखा जा चुका है।

दूसरे दिन प्रातःकाल पोपके भागनेका समाचार रोम-में फैल गया। समाचार सुनकर सारी नगरीने मानो सुख साँस लिया। बँधा हुआ हिरना फाँस छूटनेपर जैसा प्रसन्न होता है, रोमवासी पोप के बन्धन से छूट कर वैसेही प्रसन्न हुए। पोप के जाते ही रोम-वासियोंने रोममें रिपब्लिक (प्रजातन्त्रशासन) की घोषणा कर दी। प्रतिनिधि-सभा ही सर्व प्रधान होगयी। उसके नये चुने हुए प्रतिनिधियोंमें हमारे दो चिरकालसे परिचित व्यक्ति भी थे, एक मेज़िनी और दूसरा गेरीवाल्डी। रोममें हलचलका समाचार सुनते ही वे देशभक्त दौड़ते हुए इटलीकी प्राचीन राजधानीमें आ पहुँचे। गेरीवाल्डीको हमने मिलानके मामलोंसे असन्तुष्ट छोड़ा था। स्विज़रलैण्डमें जाकर वह कुछ समय बीमार रहा, फिर स्वस्थ होकर वेनिसके देशभक्तोंकी सहायताके लिये रवाना हुआ। रास्तेमें ही उसे रोमकी हलचलका समाचार मिला। वेनिसकी अपेक्षा रोमके नामका आकर्षण अधिक प्रबल था। गेरीवाल्डी उसे न रोक सका और मार्ग बदलकर रोममें पहुँच गया।

वह ठीक समयपर पहुँचा। पोपने नेपल्समें पहुँचकर सारी यूरोपियन शक्तियोंको धर्मरक्षाके नामपर सहायताके लिये आमन्त्रित किया और ईश्वरके नामपर रोमकी रिपब्लिकपर शापोंकी बौछार की। पोपकी पुकारके उत्तरमें फ्रांस, नेपल्स और आस्ट्रिया ये तीन जबरदस्त शक्तियाँ एक रोमकी नगरीका मानमर्दन करनेके लिये सन्नद्ध होने लगीं।

आस्ट्रिया अन्य जातियोंकी पराधीनताका ठेकेदार था, नेपल्सका राजा अपने देशमें स्वाधीनताके प्रवेशसे डरता था, इसलिये इन दोनों शक्तियोंका रोमपर क्रुद्ध होना समझमें आ सकता है, परन्तु फ्रांस स्वयं प्रजातन्त्र-शासनका दम भरता हुआ रोमके प्रजा-मतका ध्वंस करनेपर क्यों उतारू हुआ, यह एक प्रश्न है, जिसका उत्तर पाठक अवश्य चाहेंगे। सुनिये:—

इन दिनों फ्रांसमें तीसरा नैपोलियन शासन करता था। महान् नैपोलियनका नाम धारण करनेवाला यह चतुर व्यक्ति चतुराईसे ही फ्रांसका सिंहासन लेनेमें कृतकार्य हुआ था, वीरतासे नहीं। किन्तु केवल चतुराईसे इतनी भारी शक्तिको स्थिर रखना कठिन था। फ्रांस-वासियोंके उत्तेजना-पूर्ण हृदयोंको खँचे रखनेके लिये आवश्यकता थी कि नैपोलियन अपनी चतुराईको युद्ध-कीर्तिकी पीठपर स्थापित करता। वह युद्ध-कीर्ति कहाँ मिले। उसे और नहीं तो यही

एक स्थान मिल गया। पोपकी दोस्ती भी मिले और उसके हथियार भी यश पायें, "एक पन्थ दो काज" फिर क्या था, तीसरे नैपोलियनने अपने सेनापति औडिनो (Oudinot) को थोड़ी सी चुनी हुई सेनाके साथ रोमकी ओर रवाना किया।

इसी समय इटलीकी आशाओंकी एक और स्थानपर भी परीक्षा हो रही थी। पहले युद्धकी समाप्ति ऐसी अपूर्ण हुई थी कि आस्ट्रिया और पीडमौएट दोनों ही समझते थे कि शीघ्र ही फिर युद्ध होगा। युद्ध हुआ और चार्लस एल्बर्टने अपने अनिश्चय, अविश्वास और दुर्भाग्यका फल पाया। नोवाराके प्रसिद्ध युद्धमें इटलीकी स्वाधीनताको एक ज़बरदस्त धक्का मिला। किसी अगले परिच्छेदमें इस पराजय का वृत्तान्त आवेगा। इस पराजयने रोम-वासियोंको सहायता से और सहायताकी आशासे हीन कर दिया।

रोम कुछ समयके लिये स्वर्गीय-युग का सुख अनुभव कर रहा था। वह स्वतन्त्र था, परतन्त्रताकी, अत्याचारकी ज़ंजीरें उसने काट दी थीं। आह—क्या ही आनन्दमय विचार था। वह रोम जिसने किसी दिन एक शब्दसे सारे भूमण्डलको कँपाया था, आज फिर अपने आपेमें आया था, वह आज फिर स्वाधीनताकी ध्वजा लेकर खड़ा हुआ था। एक छिपा हुआ मोतियोंका ढेर था, जो निकल आया। संसारमें

चकित आँखोंसे उस ढेरको देखा, और आशंकाभरे साधुवादसे आकाशको गुँजा दिया। सारा सभ्य-संसार तमाशाई हो गया। तमाशेमें कार्यका सारा भार तमाशा करने वालोंपर होता है—तमाशाइयोंका काम केवल ताली पीटना और वाह वाह करना होता है। इस पवित्र-युद्धका सारा भार भी मुट्ठी भर रोम-वासियों और बाहरसे आये हुये कुछ जोशीले इटालियनोंपर ही पड़ा। साहसिक शेरकी भाँति कमरें कसकर ये वीर भी सन्नद्ध हो गये और 'करें या मरें' का दृढ़-संकल्प करके इन वीरोंने फ्रांस, आस्ट्रिया और नेपल्सके गरम आवभगतकी तय्यारियाँ प्रारम्भ कीं। रोमके शासनके लिये एक त्रिमूर्ति चुनी गयी, जिसका केन्द्र और जीवन्त जीव मेज़िनी था। लोग कहते हैं, क्रान्तिके समय देशों या नगरोंमें नियम नहीं रहते। आँखों देखी कहने वाले कहते हैं, कि उस स्वाधीनताके छोटेसे युगने रोममें नियम और प्रबन्धकी वह व्यवस्था देखी जो पहले न देखी थी। हर एक व्यक्ति स्वयं अपना शासक था, मानो स्वाधीनताने नगर-वासियोंके अन्दर उत्तरदायिता कूट कूट कर भर दी थी।

शत्रुओंका मुँह तोड़नेका काम हमारे नायक गेरीबाल्डीके हाथोंमें आया। चलिये पाठक, अपने नायकके साथ साथ चलकर देखें, उसे इस कार्यमें कैसी कृतकार्यता होती है।



स्वतन्त्राकी ढाल।

"अभीदमेकमेकोऽहमस्मि किमु द्वा किमु त्रयः करन्ति ।"

(ऋग्वेद)

एक के बराबर तो मैं एक हूँ ही—दो या तीन भी मेरा नहीं बिगाड़ सकते।

पहला शत्रु फ्रांस था। सेनापति औडिनो मुँहपर मीठे शब्दोंकी नक़ाब चढ़ाये, रोमकी ओर बढ़ रहा था। पग २ पर वह यही घोषणा देता था कि 'हमारी सेना रोमपर आक्रमण करने नहीं, बल्कि उसे बचाने आयी है' किन्तु औडिनोके कार्य उसके वाक्योंको झूठ साबित कर रहे थे। वह जहाँ पहुँचता था वहाँ प्रेस बन्द करा देता था और जातीय-सेनाके हथियार रखा देता था। रोमन-रिपब्लिकके कर्ता धोखेमें नहीं आये, वे कपड़ेके अन्दर छिपी हुई छुरीकी धारको देख रहे थे। रिपब्लिकने निश्चय किया कि फ्रेंच फ़ौजोंका सामना किया जाय और इसकी सूचना

प्रजाको देते हुए कर्ता लोगोंने परमात्मा और सत्यके नामपर जनतासे एकता और सहायताके लिये अपील की। वह हृदयोंसे निकली हुई अपील हृदयोंमें लगी, व्यर्थ नहीं गयी। रोमकी छोटीसी रिपब्लिककी प्रजा मर कर भी स्वाधीनताकी रक्षा करनेके लिये उतारू हुई। प्रजा तय्यार थी, आवश्यकता एक ही वस्तुकी थी। नेता कहाँ था? शासनका नेता मैज़िनी विद्यमान था, किन्तु रक्षाका नेता कहाँ था?

अकस्मात् रोमके बाज़ारोंमें शोर मच गया कि 'वह आगया, वह आगया' वह कौन आगया, यह पूछनेकी आवश्यकता नहीं रही, सब देश भक्तोंके हृदय जान गये कि स्वतन्त्रताकी ढाल गेरीबाल्डी आ पहुँचा! बाज़ार दर्शनाभिलाषियोंसे भर गये। प्रजाके हृदय आशासे उछलने लगे और उन्हें स्वाधीनताकी रक्षाका कार्य उस नरसिंहकी उपस्थितिमें एक खिलवाड़ प्रतीत होने लगा। एक दर्शक उस समयके दृश्यका यों वर्णन करता है :—

"यह रहस्य-मय-विजेता, कीर्तिकी अद्भुत चमकसे घिरा हुआ था। वह न राजसभाके विवादोंको जानता था और न जानना चाहता था। जिस दिन रिपब्लिकपर आक्रमण होने वाला था, उसी दिन वह रोममें घुसा। रोमन लोगोंके आत्माओंने स्वयं ही जान लिया कि एक वही व्यक्ति है जो शत्रुके आक्रमणोंको रोक सकता है। बस, उसका सामने आना था

कि सारा जन-समूह आशा और रक्षाका एक-मात्र आधार समझ कर उसीकी ओर झुक पड़ा"

दृढ़ हृदय और स्थिर हाथसे, गेरीबाल्डीने शत्रुके प्रहार रोकनेके लिये अपनी ढाल पकड़ी। जोशीले देश भक्त उसके चारों ओर एकत्र होने लगे। उनके जोशका कोई अन्त न था। किन्तु फ्रांसकी शिक्षित और प्रसिद्ध सेनाके सम्मुख मुट्ठी भर रोमन-देशभक्तोंका खड़ा होना असम्भव प्रतीत होता था। क्या कहीं तोपका सामना बन्दूक कर सकती है? हाँ एक दशामें यह भी सम्भव है। यदि बन्दूक शेरके हाथमें हो, तो पाँसे पलट सकते हैं। यहाँ भी यही दशा हुई।

औडिनोके पास सेना थी-लड़ाईका सामान था, किन्तु विजयका मूल कारण जोश नहीं था। केवल दूसरी रिपब्लिकका ध्वंस करनेके लिये सिपाहियोंको कोई जोश नहीं हो सकता। लड़ाईका प्रारम्भही उसके लिये अनिष्ट हुआ। उसने शत्रुकी देख रेख करनेके लिये कुछ सेनाके साथ अपने भाईको आगे भेजा। उसकी एक रोमन सेनासे भेंट हो गयी। औडिनोके भाईने रोमका रास्ता माँगा, रोमनोंने इनकार किया। इसपर फ्रेंच सेनाने गोलियाँ चलायीं। जवाब में रोमन सिपाहियोंने गोलियों की वर्षा कर दी। औडिनोका भाई एक ही वारमें दुम दबाकर भाग गया।

फ्रेंच-सेना भाग गयी। यह बड़ी बेइज़्ज़तीकी बात थी। औडिनो अभी आक्रमणके लिये तय्यार नहीं था, किन्तु भागनेके कारण फ़्रांसके नामपर धब्बा लग गया था। उसे न धोना भी असम्भव था। औडिनोने दूसरे दिन धावा बोल ही दिया। एक सेनापति बड़ीसे बड़ी भूल जो कर सकता था, औडिनोने वही की। शत्रुके बलको थोड़ा समझना और तय्यारीके बिना केवल भाग्यपर भरोसा करके आक्रमण करना, सेनापतिके लिये घातक भूल होती है, औडिनोने वही की। उसने यह न समझा कि रोम अपने प्राणोंको लिये, अपनी स्वाधीनता और अपने देशके लिये लड़ रहा है। रोमका बच्चा बच्चा सिपाही है। उसने यहभी न सोचा कि रोमके देशभक्तोंको समरमें चलाने वाला मुखिया कौन है। गेरीबाल्डी अपने प्रभावसे अपाहिजोंको भी युद्धभूमिमें लड़ा सकता था। औडिनो ने उसके बलका विचार नहीं किया।

औडिनोने आक्रमण किये, किन्तु वे आक्रमण जीवनसे रहित थे। गेरीवल्डीने जो प्रत्याक्रमण किये, वे उत्साह और जीवनसे भरे हुए थे। औडिनोके सिपाहियोंके केवल शरीर आक्रमण कर रहे थे, रोमन लोगोंकी आत्मा और शरीर दोनों ही आक्रमण कर रहे थे। परिणाम वही हुआ जो होना चाहिये था। एकही दिनमें-फ्रेंच सेनाके दम उखड़ गये, कई हज़ार मरवा कर और कई हज़ार क़ैद करा कर, औडिनोने समझा

कि शत्रु तुच्छ नहीं है। उसे लेनेके देने पड़ गये और यह सन्देह होने लगा कि कहीं सारी सेनाको ही भू-शायी न होना पड़े। युद्धके तीसरे प्रभात जब गेरीबाल्डी अपनी सेनाओं को युद्धके लिये तय्यार करने लगा तो उसे पता लगा कि औडिनोने युद्धकी शान्तिके लिये सफ़ेद झण्डी भेज दी है।

गेरीबाल्डीने शत्रुको पराजित किया था। पराजित शत्रु-का ध्वंस कर देना युद्ध-कलाका पहला नियम है। गेरीबाल्डी-ने भी तीव्र-गतिसे औडिनोका पीछा किया। किन्तु अव-स्थाओंने उसकी इच्छा पूर्ण न होने दी। वह भागती हुई फ्रेंच-सेनाको पाकर आक्रमणकी तय्यारियोंमें लगा हुआ था, उसी समय रोमसे युद्ध बन्द करके लौट आनेकी आज्ञा हुई। विजयी सेनाका सेनानी गेरीबाल्डी रोमन लोगोंका साधुवाद लेता हुआ रोममें लौट आया।

किन्तु वीरको विश्राम कहाँ? जब तक संसारमें अँधेरा है, तब तक सूर्य्यको आराम नहीं मिल सकता। जहाँ राक्षस हों, वहाँ अधरको पहुँचना पड़ता है। गेरीबाल्डी अभी रोममें पहुँचा ही था, जब उसे समाचार मिला कि नेपल्सका राजा सोलह हज़ार सिपाहियोंके साथ रोमन रिपब्लिक पर आक्रमण करनेके लिये बढ़ता आ रहा है। राज-सभाकी ओरसे, गेरीबाल्डीको आज्ञा हुई कि वह नेपल्सकी सेनाको रिपब्लिकसे बाहर कर दे। गेरीबाल्डीकी मनोकामना पूरी

हुई। शेरको दाढ़ हिलानेके लिये मानो शिकार मिला। वह स्वतन्त्रताकी ढाल, अभी फ्रेंच-तलवारको तोड़ चुकी, नेपल्स-की निर्बल बर्छीकी नोककी ओर झुकी।

नेपल्सकी सेना बहुत थी। नेपल्सके राजाको अपनी सेना का भरोसा था और साथही उसे फ्रांसकी सेनाओंका भी विश्वास था। जिनपर विश्वास था, वे मुँहकी खाकर वापस हो गये। अब फ्रेंच सेनाके पराजयका हाल सुना तो नेपल्सके सिपाहियोंमें सनसनी सी फैल गयी। मारीचको सब जगह राम ही राम दिखायी देता था। अच्छी लड़ाई होनेसे पूर्वही आक्रमणकारी सिपाहियोंके दिमागमें गेरीबाल्डी-की विचित्र-मूर्ति भयंकर भूतकी भाँति घूमने लगी।

इस समय गेरीबाल्डीके जीवनमें एक महत्वपूर्ण घटना उपस्थित हुई। वह नेपल्सकी सेनाको बाहर निकालनेकी तदबीरें सोच रहा था। उसी समय वह रोममें बुलाया गया और रोज़लीको उसके ऊपरका अधिकार दिया गया। गेरी-बाल्डीके मित्रोंको वह बुरा लगा और उन्होंने इसे अपमान समझा। गेरीबाल्डीने जो उत्तर दिया वह सभी देश भक्तोंको याद करने योग्य है। उसने कहा :—

"मैं केवल आत्मप्रेमसे सम्बन्ध रखने वाली बातोंसे प्रभावित नहीं होता। जो मनुष्य मुझे शत्रुके सामने तलवार खींचनेका अवसर देता है, चाहे फिर मुझे एक साधारण

सिपाहीकी तरह लड़ना पड़े, वह मेरे धन्यवादोंका पात्र है। मैं राष्ट्र-रक्षककी हैसियतसे भी देशसेवाको उद्यत था और इसी लिये डिवीज़नके जनरलके पदको धन्यवाद-सहित स्वीकार करता हूँ।"

जो लोग ज़रासी बातमें आत्मापमान समझ कर देश सेवासे मुँह मोड़ लेते हैं, उन्हें इस वीरोक्तिपर विचार करना चाहिये।

रोमकी दस हज़ार सेना नेपल्सकी सोलह हज़ार सेनाको बाहर निकालनेके लिये नगरसे बाहर हुई। इस देशभक्त-सेनाका जीवन-प्राण और वास्तविक अगुआ गेरीवाल्डी आगे आगे चला।

नेपल्सका कायर राजा सिंह-सेनाका सामना करनेका साहस न करके पीछेको लौटने लगा। गेरीवाल्डीके जोशीले सिपाही रात दिन उस भागती सेनाको तंग करने लगे। आख़िर बहुत पीछे हट कर नेपल्सका राजा विले ट्री नामके ग्राममें दुर्ग बना कर बैठ गया। वहाँ उसने अपने आपको कुछ सुरक्षित समझा और रोमनसेनाकी प्रतीक्षा करनी प्रारम्भ की।

गेरीवाल्डीने भी निश्चय किया कि चाहे कुछ हो, वह इसी दुर्गमें नेपल्सकी सेनाकी समाप्ति करेगा। नेपल्सके कमसे कम पाँच हज़ार सिपाही विले ट्रीमें पड़े हुए थे, गेरीवाल्डीके पास

केवल उन्नीस सौ आदमी थे। नेपल्सकी सेना दुर्गमें थी, गेरीवाल्डी मैदानमें था। फिर भी भगवानका नाम लेकर गेरीवाल्डीने इसी ग्रामको शत्रुकी श्मशान-भूमि बनानेका निश्चय किया। किलेमें बन्द शत्रुको मारना कठिन जानकर गेरीवाल्डीने उसे दीवारसे बाहर खींचनेके लिये कुछ थोड़ेसे सिपाही भेजे। शत्रुने जब थोड़ेसे आदमियोंको पास आये देखा तो वह लोभ संवरण न कर सका। हाथ आये शिकारको कौन छोड़ना चाहता है ? नेपल्सकी सेनाका कुछ भाग किलेकी दीवारसे निकलकर आगे बढ़ने लगा, गेरीवाल्डीके सिपाही पीछे लौटने लगे। सहजमेंही जीत होते देख नेपल्सकी सेना धीरे २ किलेसे बाहर हो आक्रमण करने लगी। शत्रुकी सेना बढ़ती आयी, रोमकी सेना उनका रास्ता छोड़ने लगी। अहो ! यह तो बड़ा सरल मार्ग है। नेपल्सके सिपाही आगे ही आगे बढ़ने लगे। बढ़ते हुए उन्हें यह ख्याल नहीं आया कि वे मृत्युकी दाढ़ोंमें घुस रहे हैं।

आध घंटा युद्धके पीछे शत्रुके सेनापतिने ५०० घुड़सवारोंको आक्रमण करनेकी आज्ञा दी। गेरीवाल्डीने शत्रुके घुड़सवारोंको अनिवार्य वेगसे आते हुए देखा और क्षणभरमें फ़ैसला कर लिया कि अब 'मारेंगे या मरेंगे'। उसके पास केवल ५० घुड़सवार थे, उसने इस मुट्ठी भर सेनासे ५०० शत्रुके सवारोंका सामना करनेका विचार किया। ५०० से ५० भिड़

गये। यह भिड़ना एक पत्थरका पहाड़के साथ टकरानेके समान था। ५०० के समूहका बल ही ५० को चितकर देनेके लिये पर्याप्त था। क्षण भरमें शत्रुके सवारोंका धक्का रोमन सिपाहियोंपर लगा। औरोंका क्या कहना था, स्वयं गेरी-बाल्डी घोड़ेके साथ भूमिपर जा रहा, किन्तु यह दशा क्षण भर ही रही। झट गेरीबाल्डी खड़ा हो गया और अपनेको शत्रुसे घिरा देखकर चारों ओर तलवार बरसाने लगा। थोड़ी ही देरमें उसका घोड़ा भी सावधान हो गया और अपने सवारको पीठपर लेकर बिजुलीकी तरह सेनामें निर्भय विचरने लगा।

नेपल्सके सवार मुट्ठी भर रोमन सवारोंको मरा जान आगे बढ़ गये। उनके पीछे ही पीछे पैदल सेना भी बढ़ी। बढ़ते गये पर चारों ओरसे घिर गये। इधर उनके गुज़र जाने-पर रोमके सवार सावधान हो गये, उधर दोनों ओर बिखरे हुए रोमन सवारोंने गोलियोंकी बाढ़ झोंकी। अनुकूल अवसर जान गेरीबाल्डीने अपने सेनापति रोज़लीके पास दूत भेजा और सेनाकी सहायता माँगी। रोज़ली सारी सेनाके साथ पास ही था। उसने उत्तर भेजा कि "अभी सहायता, नहीं भेज सकता क्योंकि सिपाहियोंने भोजन नहीं किया" यह उत्साह-हीन कोरा जवाब सुनकर भी गेरीबाल्डीका दिल नहीं टूटा। उसने शत्रुका क्षय जारी रखा।

इसी समय दैवने सहायता दी। रोमका सेनापति मनारा दो मीलसे लड़ाईका शब्द सुन रहा था। यह सेनापति गेरीवाल्डीका भक्त था। उसने रोज़लीसे आज्ञा माँगी और युद्ध स्थलपर आ पहुँचा।

इस नयी सेनाने युद्धका फ़ैसला कर दिया। रोमन सेनाका वेग असह्य हो गया। नेपल्सकी सेना धीरे २ किलेकी दीवारोंमें घुसने लगी। मैदान गेरीवाल्डीके हाथ रहा। दूसरे दिन प्रातःकाल जब गेरीवाल्डीने बिलेट्रीमें अपने कुछ सिपाही समाचार लेनेके लिये भेजे, तो गाँव ख़ाली पाया। नेपल्सका कायर राजा, दो हज़ार सिपाहियोंकी मारसे डरकर अपनी १५,००० सेनाको समेट लम्बा हो गया।

इस विजयसे स्वतन्त्रताकी वज्रमय ढालका यश चारों ओर फैल गया।



छठां परिच्छेद

दीपक बुझ गया

"मरणं जीवितोपमम्"

वह मरना भी जीनेके समान था।

यदि रोमन-रिपब्लिककी कथा यहीं समाप्त हो जाती तो हमारा चित्त प्रसन्न होता, पाठकवृन्द भी आनन्द पूर्वक इस कथाको समाप्त करते, किन्तु दैवको कुछ और ही अभीष्ट था। दैवको अभीष्ट था कि रोमन रिपब्लिकका नाटक सुखान्त न हो, दुःखान्त हो। हम हँस चुके और अपने नायककी सफलतापर अभिमान भी करचुके, अब कहानी हमें रुलावेगी, पर नायककी सफलतापर नहीं, वीरतापर अभिमान करवाएगी।

नेपल्सकी सेनाएं भाग गयीं, किन्तु इसी समयमें फ्रांसकी सेनाको बहुत सी सहायता पहुँच गयी। औडिनोने जो शान्ति की थी, वह केवल सहायता पानेके लिये ही की थी। फ्रांससे सेनाकी और सहायता पाते ही औडिनोकी तोपोंके मुँह खुल गये; रोमन लोगोंको सूचना मिल गयी कि 'शत्रु आरहा है'।

जहाँ शत्रु था, वहाँ गेरीवाल्डी था। अपने बाँके वीरोंकी सेनाको लिये हुए नरसिंह रोमकी रक्षाके लिये आ उपस्थित हुआ। इतिहास साक्षी है कि थोड़ी सी सेनासे गेरीवाल्डीने रक्षाका वह कार्य किया जो असम्भव था। फ्रांसकी भयंकर तोपें रात-दिन रोमन दिवारोंपर गोले बरसाती रहीं, फ्रांसकी सेनाएँ आक्रमणपर आक्रमण करके स्थान छीनने लगीं, गेरीवाल्डीके वीर-योद्धा कम होने लगे, पर गेरीवाल्डीने हिम्मत नहीं हारी। शत्रुका सामना बढ़िया था। उसके पास सिपाही बहुत थे और साथ ही गेरीवाल्डी सेनापतित्वमें रोज़लीके अधीन था। इन सब प्रतिकूल दशाओंके होते हुए यह पहलेसे ही स्पष्ट था कि रोमकी सेनाएं हारेंगी। हारसे बचनेका एक ही उपाय था, कि रोमके सारे योग्य निवासियोंको सिपाही बनना पड़ता। परन्तु यह कार्य बिना आज्ञाके नहीं हो सकता था। गेरीवाल्डीने इस समय प्रस्ताव किया कि रोमकी रक्षाका भार किसी एक ही आदमीको सौंप दिया जाय और शेष सब निवासी उसकी आज्ञाका पालन करें।

गेरीवाल्डीका विचार था कि ऐसा प्रबन्ध हो जानेपर रोमकी रक्षाके लिये कमसे कम एक लाख सिपाही तय्यार हो सकते हैं। एक लाख सिपाहियोंकी लाशों परसे गुज़रना फ्रेंच सेनाके लिये टेढ़ी खीर होता। यह प्रस्ताव ज़रा चौंकाने वाला था, किन्तु इसे माने विना कार्यसिद्धि भी तो असम्भव थी। स्वतन्त्रताकी रक्षाका काम जितना पवित्र है, वह उतना ही दुष्कर है, और स्वार्थत्यागापेक्ष है। रिपब्लिकके कर्ता लोग जिस समय इस अद्भुत परन्तु आवश्यक प्रस्तावको न मान सके। उसी समय रोमका पतन निश्चित हो गया था। गेरीवाल्डी इस बातको जानता था—पर साहस-हीन होना किसे कहते हैं यह वह नहीं जानता था। तोपों और बन्दूकोंकी दिन-रातकी बौछारमें बैठकर भी गेरीवाल्डी रोमकी रक्षाके उपाय करने लगा।

जहाँ शक्तिमें इतना भेद हो, वहाँ रक्षाका काम कितने दिनों तक हो सकता है। फ्रांसकी सेनाका भयंकर बादल दिन प्रति दिन पास ही पास आने लगा; शत्रुके क्षयकारी गोलोंकी बाढ़ रोमके घरोंकी छतोंपर फट २ कर प्रलयकाल मचाने लगीं, और रक्षाका काम क्षण क्षणमें कठिनसे कठिन होने लगा। तो भी रोज़लीकी आज्ञारूपी ज़ंजीरोंसे बँधी हुई स्वतन्त्रताकी ढाल अपने स्थानपर डटी रही, और रिपब्लिककी कार्यकर्तृ-सभा दिन रात सभाभवनमें बैठ कर आती हुई आपत्तिके समाचार सुनने लगी।

आख़िर वह समय आ गया। २६ जून (१८४६) के सायं-काल रोमके सेनापतियोंको ज्ञात हो गया कि अब शत्रु सिपाही नगरमें प्रवेश करेंगे। शत्रुकी तोपोंने रोमकी तोपोंके मुँह बन्द कर दिये थे, नगरकी कोटमें कई स्थानोंपर छेद हो गये थे, और गोला बारूद समाप्त हो चुका था। भयंकर रात आयी, उस रात भर सारे नगरमें कोई भी न सोया। सायं-कालसे ही फ्रेंच सेनाकी सारी तोपोंने भयंकर आग बर-साना प्रारम्भ कर दिया था। अधी राततक भूमि और आकाशमें गोले ही गोले दिखाई देते थे। अकस्मात् वर्षा बन्द हुई और रातकी भयानक-शान्तिमें टूटी हुई दीवारके रास्ते फ्रेंच सेनाने रोममें प्रवेश किया।

वह घड़ी आ गयी, जिसमें असली और नक़ली वीर पहिचाने जाते हैं। गेरीवाल्डी इसी घड़ीकी प्रतीक्षा कर रहा था। जब आपत्ति सिरपर आती है तब महापुरुषोंके हृदय और भी महत्व-पूर्ण हो उठते हैं। शत्रु घरमें घुस रहा हो, उस समय सोच विचारका काम नहीं रहता। उस समय वीरका काम दीवारके पीछे छिप कर गोली मारना नहीं है, अपितु, या तो शत्रुको मार भगाना, या स्वयं धराशायी होना है। म्यानसे नंगी तलवार निकाल, इटलीकी स्वतन्त्रताका गीत गाकर, और एक छलांग मार कर गेरीवाल्डी अपने वीर देशभक्तोंके आगे २, अन्दर घुसते हुए शत्रुओंपर बिजुली

की तरह टूट पड़ा। उस समय 'कहाँ और क्या' का प्रश्न नहीं रहा, उस समय मरने और मारनेका प्रश्न था। वीरके हृदयमें एक ही विचार था कि रोमकी स्वतन्त्रता तो नहीं रही, पर नाम रह जाय। कोई यह न कहे कि गेरीवाल्डी जीवित था और फिर शत्रुने रोमको ले लिया। भूखे बाघकी भाँति गेरीवाल्डी फ्रेंच सेनापर जा पड़ा। जिन्होंने उस समय गेरीवाल्डीको देखा, वे कहते थे कि उन्होंने सेनापतिको इतना महान् पहले कभी नहीं देखा। उसकी तलवार बिजुलीकी तरह चमक रही थी, वह जिसपर पड़ती थी यमाज्ञाका काम करती थी। नया शिकार पिछले शिकारका लहू धो देता था। न जाने उस दिन गेरीवाल्डीने कितने मारे। उसके मित्र इसी प्रतीक्षामें थे, कि उसपर कब किसी शत्रुका वार हो, और उसके सिरको धड़से जुदा करे, किन्तु ऊपरसे कोई हाथ उसकी रक्षा कर रहा था। तलवारोंकी मार काटमेंसे भी गेरीवाल्डी विना किसी बड़े घावके निकल आया।

इसी समय गेरीवाल्डीको आज्ञा मिली कि वह राज-सभामें आकर सभाको युद्धकी दशा समझावे। लहूसे भरी तलवार म्यानमें थी, सारा शरीर लहूसे तरबतर हो रहा था, कपड़े गोलियों और प्रहारोंसे छिदे पड़े थे, इसी दशामें गेरीवाल्डी सभामें प्रविष्ट हुआ। सेनापतिको इस रूपमें देखकर सारी राजसभा खड़ी हो गयी और देर तक तालियों द्वारा उसका

आदर करती रही। गेरीवाल्डीने उस समय सभाको समझाया कि "अब नगरकी रक्षाका कोई उपाय नहीं है, हाँ, स्वतन्त्रताकी रक्षाका एक उपाय है। वह यह कि रोमको फ्रांसके हाथोंमें छोड़कर हम लोग अन्यत्र चले जायँ। जहाँ हम जायँगे वहीं रोम होगा। इस प्रकार रोमका नगर जायगा, पर स्वतन्त्रता नहीं जायगी।"

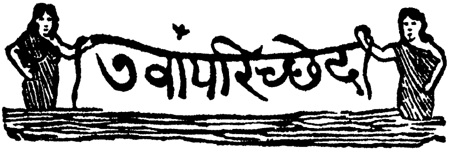
गेरीवाल्डी यह राय देकर फिर अपने सिपाहियोंमें जा मिला और जहाँ तक हो सका, फ्रेंच सेनाकी बढ़ती रोकने लगा। किन्तु, एक नाला महानदीका रास्ता काट कर उसे नहीं रोक सकता। रोमके सिपाही वीरतासे लड़े, पर फ्रेंच सेनाके प्रवाहको न रोक सके। फ्रेंच सेना बढ़ती गयी, गेरीवाल्डी और उसके साथी मरते और मारते हुए इंच इंच भर स्थान छोड़ते गये।

अन्तमें राज-सभाने समझ लिया कि युद्ध हो चुका, अब लड़ना अपनी हत्या करना है। रोते हुए प्रतिनिधियोंने हथियार रख देनेका प्रस्ताव स्वीकार किया, और फ्रेंच सेनापतिके पास भेज दिया। रोमने हथियार रख दिये और स्वतन्त्रताका जलता हुआ दिया कुछ समयके लिये फिर बुझ गया।

दिया बुझ गया। पर, अपनी स्मृति पीछे छोड़ गया। जब तक संसारमें स्वतन्त्रता और स्वार्थत्यागका आदर है तब तक रोमकी स्वतन्त्रताके उन दिनोंके गीत गाये जायँगे, तब

तक तक मेज़िनी और गेरीबाल्डीकी देशभक्तिका स्तोत्र दिग्दिगन्तमें उच्चरित होगा और तब तक लोग फ्रांस, औडिनो और तीसरे नैपोलियनकी स्मृतिपर सौ सौ धिक्कार दिया करेंगे।





आपत्तिमें धैर्य ।

" विपदि धैर्यम् "

महापुरुषोंका स्वभाव है कि वह विपत्ति में धैर्य रखते हैं ।

पुराने कथक्कड़ोंने कथाएँ गढ़ते हुए एक बात कभी नहीं भुलायी । जो वस्तु जितनी अधिक मूल्य वती है, उसके पानेके लिये उतना ही अधिक कष्ट होता है । उससे फलका महत्व जाँचा जाता है । सुन्दरी स्त्री को प्राप्त करना होगा तो बड़े कष्ट सहने पड़ेंगे । मोतीको पाने के लिये कई दैत्य दानवोंका सामना करना पड़ेगा । वस्तुतः यह नियम सत्य है । संसारके वास्तविक सुख और असली रत्न पानेके लिये शरीरको और मनको खपाना पड़ता है । इतिहासने यह स्पष्ट कर दिया है । कोई अनूठा आविष्कार बिना दो चार बलिदानोंके नहीं हुआ और किसी जातिको

रुधिरकी आहुतियाँ दिये विना स्वतन्त्रता नहीं मिली। सबसे उत्तम सुख मोक्ष या मुक्ति है, वह अपना तन त्याग किये विना नहीं मिलता। जो मनुष्य फूलोंकी सेजपर सोकर उन्नति चाहे, और जो जाति गद्देलोंपर आराम करके स्वतन्त्रता चाहे, उस जैसी भूल किसीने नहीं की। लोरीका सुख तत्काल होता है परन्तु कड़वी दवाई पीछेसे सुख पहुँचानेवाली होती है। गेरीवाल्डी और मेज़िनी आदि देशभक्त अपनी जातिको अत्याचारोंकी शृङ्खलाओंसे छुड़ाया चाहते थे। अतः उनके भाग्योंमें क़ैदख़ाना, निर्वासन, भूख और दरिद्रता लिखे थे। इस बातको वे भी जानते थे, और जानकर भी मोक्षके मार्गको नहीं छोड़ना चाहते थे। महात्माओंका यही तो महत्व है।

रोम पराजित हो गया, किन्तु नरकेसरी पराजित नहीं हुआ।

जब रोमका झंडा गिर गया, तब गेरीवाल्डीने चौकमें अपने अनुयायियोंको इकट्ठा किया। अभी वह घावोंसे घिरा हुआ था। स्वाधीनताका लाल टीका अभी उसके माथेपर दिखाई दे रहा था, और उसके कपड़े अब भी मानो स्वाधीनताको शरीरमें प्रवेश करनेका सरल मार्ग देनेके लिये मुँह खोले हुए थे। उसकी आखोंमें क्रोधका खून था, और शोकके आँसू थे। एकत्रित वीरोंमेंसे एक भी ऐसा नहीं था जिसकी आँखें सूखी हों और हृदय शोकाग्निसे दग्ध न हो रहा

हो। उन्हें सामने देखकर नायकने कहा—"मैं तुम्हें नये युद्ध और नये यश दिखाऊँगा। जो मेरे साथ चलना चाहे वह अपना होगा, किन्तु उसका मूल्य परिश्रम और ख़तरा है। मैं तुमसे मातृभूमिसे प्रेमके सिवाय कुछ नहीं माँगता, और बदलेमें न वेतन दे सकता हूँ, न आराम दे सकताहूँ, और न नियम पूर्वक खाने को भोजन ही दे सकता हूँ। जो इस भाग्यसे सन्तुष्ट न हो वह पीछे रह सकता है। रोमके दरवाज़ेमें अब हम तब तक नहीं घुस सकते जब तक फ्रैंच लोग यहाँ हैं। हम फ्रैंच सेनाके लहूमें अपनी अँगुलियाँ भिगो चुके, अब चलो, चलकर आस्ट्रियन लोगोंके रुधिरमें अपने हाथ डुबोएँ"।

चारों ओरसे जोश और उत्साहके शब्दोंमें उसका उत्तर मिला। लगभग पाँच हज़ार अनुयायी उसके घोड़ेके पीछे हो लिये। उसकी सहधर्मिणी एनिटा पुरुष वेष में उसके साथ थी।

यह स्वतन्त्रताकी सेना रोमसे बाहर निकल कर एक ओर को चल दी। इस सेनाके पास न धन था, न अन्न था, न भावी समय विभाग था, बस, एक नायक था, और दूसरा देश प्रेम था। यह दो ही शक्तियाँ उन्हें खींच कर ले चलीं।

इस सेनामें भरती होनेके लिये नायकमें भक्ति और देश-प्रेम ही पर्याप्त थे, परन्तु उसमें स्थिर रहनेके लिये अतुल सहन शक्ति और असीम स्वार्थत्यागकी आवश्यकता थी न खाना, न पीना और सिरपर दिन रात जानका ख़तरा। यह सेना रोमसे

निकली और दोनों ओरसे भेड़ियोंके झुंड उसे नोचनेके लिये रवाना हुए। ओडिनोकी सेना एक ओरसे और आस्ट्रिया-की सेना दूसरी ओरसे स्वतन्त्रताके मुसाफ़िरोंको घेरनेका यत्न करने लगीं। उनके भयसे भोजनके अभावके साथ विश्राम-का अभाव हुआ। दिन रात भागना ही भागना उनका काम था। इस अतिशय कष्टके आनेपर स्वाधीनताकी सेना छँटने लगी, प्रतिदिन सौ सौके जत्थे जुदा होने लगे। एक स्थानपर अकस्मात् रातको यह सेना आस्ट्रियन सिपाहियोंसे घिर गयी, उस समय सबका भागना कठिन था। नायकको केवल दो सौ सिपाही लेकर ही भाग जाना पड़ा। धीरे २ उनमेंसे भी कई थक कर, कई बीमार होकर या निरुत्साहित होकर पृथक् होते गये। अन्तमें एनिटा और दो तीन साथियों को साथ लिये हुए गेरीवाल्डी आस्ट्रियाके शिकारी कुत्तोंसे प्राण बचाता हुआ भागने लगा।

यह कष्ट ही पर्याप्त था, परन्तु दैव इतनेसे ही सन्तुष्ट न हुआ। एनिटाको कई महीनोंका गर्भ था। रात दिनके अन-वरत कष्टप्रद सफ़रने उसकी तबीअत बहुत ख़राब कर दी। प्रतिदिन वह यात्राके अयोग्य होने लगी, उसका घोड़ेपर सवार रहना भी कठिन हो गया। पर एनिटा वीरांगना थी, सच्ची सती थी। उसने जिस वीर पतिको हृदय दिया था, उसके योग्य बनना वह अपना कर्त्तव्य समझती थी। आपत्ति

और ख़तरेमें वह सदा पतिके साथ रहती थी। गेरीवाल्डी अपनी मातृ-भूमिसे उतर कर यदि किसी वस्तुको चाहता था, तो एनिटा को। वह उसे कभी आँखोंसे ओझल नहीं होने देता था। दोनोंका प्रेम आदर्शभूत था। एनिटाका कष्ट गेरीवाल्डी-को दुःखित करने लगा। रोमकी दीवारोंमें घुसे हुए आक्रमण-कारी शत्रुकी भयंकर तोपें जिसके हृदयको नहीं हिला सकी थीं, एनिटाके दुःखने उसे हिला दिया, किन्तु उपाय कोई नहीं था। आस्ट्रियन कुत्ते बू लेते हुए पीछा कर रहे थे और एक रात भी विश्राम नहीं लेने देते थे।

आख़िर दशा बहुत बिगड़ने लगी। गेरीवाल्डीका हृदय काँपने लगा। जब गेरीवाल्डीने रोमकी रक्षाके लिये तलवार पकड़ी और आगकी भट्टीमें छलाँग लगायी, तब एनिटाने उसकी मंगल कामनाकी, उसका हाथ पकड़ कर रोका नहीं। जब रोमका पतन होनेपर एक व्यक्तिने फ़्राँस, आस्ट्रिया और नेपल्स, तीनोंको खुला चैलेंज देकर जंगलका रास्ता लिया, तब किसीने उसे मूर्ख कहा और किसीने कम समझ पुकारा, किन्तु एनिटा—सती एनिटाके मुँहसे एक शब्द नहीं निकला। स्वतन्त्रताकी देवीकी भाँति मनुष्य बेषमें घोड़ेपर सवार हो पतिकी छाया बनना ही उसने अपना कर्तव्य समझा। गेरी-वाल्डीके चित्तमें भी एनिटा और स्वतन्त्रतामें कोई भेद भाव न रहा था। वह एनिटाको शरीरधारिणी स्वतन्त्रता समझने

लगा था। वही एनिटा दिन प्रतिदिन, क्षण प्रतिक्षण निर्बल होने लगी। उसने इशारा करके बतला दिया कि उसमें आगे जानेकी शक्ति नहीं है। यह स्पष्ट प्रतीत होने लगा कि समयसे पूर्व ही प्रजनन-काल उपस्थित हुआ है।

अब कहीं लेटानेके स्थानकी खोज हुयी। पासही एक किसानकी कुटिया थी, उसमें एनिटा लेटायी गयी, परन्तु अब कुछ नहीं हो सकता था। नवजात बालक और उसकी माताकी आयुका समय शेष नहीं था। इस भूमिपर स्वतन्त्रता न पाकर सती एनिटा उस लोकको पधारी जहाँ अत्याचारीके बन्धनोंकी पहुँच नहीं है, जहाँ सच्चे आत्माओंको दुःख झेलने नहीं पड़ते और जहाँ सिरपर ताज रखे हुए डाकू सती स्त्रियों और सत्पुरुषोंको देशनिकाला नहीं दे सकते। एनिटा वहीं चली गयी और अपने प्यारे पतिके हृदयमें अमिट वेदना और मुखपर दुःखकी रेखाएं छोड़ गयी।

प्यारी हृदयेश्वरी मर गयी, पर गेरीवाल्डीको उसके गाड़ने मात्रका समय मिला, उसकी क़ब्र पर आँसू बहाने तकका अवसर न मिला। आस्ट्रियाके सिपाही सिरपर आ पहुँचे। गेरीवाल्डीको भागना पड़ा। शिकार हाथसे गया देख, आस्ट्रियनोंने अपना क्रोध उस किसानपर निकाला, जिसने मरते हुए रोगीको आश्रय दिया था। उस बेचारेको फाँसी दी गयी और उसकी लाश उसके घरपर लटका दी

गयी। अधिकारके पर्देमें पापके निवासका क्या इससे अच्छा उदाहरण मिल सकता है ?

दुःखकी पराकाष्ठा हो चुकी, अब और क्या था ? गेरीवाल्डी दम तोड़ आस्ट्रियनोंके पञ्जेसे भाग निकला और पीडमौएटके स्वतन्त्र-राज्यकी सीमामें पहुँच गया। गेरीवाल्डीके नाम और तेजको सराहनेकी शक्ति पीडमौएटमें भी नहीं थी, वहाँसे उसे इशारा दिया गया कि उसका इटली छोड़ जाना ही अच्छा है। देशका सच्चा पुत्र देशसे निकाला जाकर दूसरी बार अमरीका पहुँचा और न्यूयार्कमें मोमबत्तीका काम करके दिन बिताने लगा। देशभक्तोंकी यही दशा होती है। मेज़िनीको भी लण्डनमें लड़के पढ़ाकर जीवन बिताना पड़ा था।

कुछ दिन अमरीकामें रहकर गेरीवाल्डी दक्षिण अमरीकामें चला गया। वहाँ उसके कई पुराने मित्र और भक्त थे। लगभग दो साल वहींपर बिताकर गेरीवाल्डी समुद्रके सफ़रके लिये चल पड़ा। वह व्यापारी कम्पनियोंके एजण्टका काम करके अपना पेट भरने लगा।

इधर इटलीकी भी अवस्थायें कुछ बदलने लगीं, पीडमौएटके राजा पुरानी दब्बू नीतिको त्याग स्वतन्त्र आकाशमें उड़ारी लगाने लगे। इस लिये गेरीवाल्डी इन्हीं समुद्र यात्राओंमें इटलीके बन्दरगाहोंपर भी उतरने लगा। १८५४ में उसने मातृभूमिमें लौट आनेका निश्चय कर लिया और सार्डीनिया

कैपररा नामक द्वीपमें एक छोटा सा खेत खरीद लिया । तल-
वारके धनीने समय विपरीत देखकर तलवारके स्थानमें हल
पकड़ लिया ।

तीसरा भाग

स्वाधीनताकी लब्धि

पहला परिच्छेद

दो नये व्यक्ति

"सूर्याचन्द्रमसाविव"

नोवाराका युद्ध क्षेत्र था। आस्ट्रियाकी सेनासे हार कर चार्लस एलबर्टकी सेनाएँ निरुत्साहकी दशामें पड़ी थीं। चार्लस एलबर्ट भी चिन्ताके सागरमें गोते खा रहा था।

मामला यों हुआ। पहिली हारके पीछे पीडमौएट और आस्ट्रियाके अन्दर कुछ समयके लिये शान्ति हो गयी थी। शान्तिकी बात चीत होने लगी परन्तु शान्ति होती कैसे? आस्ट्रिया चाहता था कि वह इटलीका स्वामी हो, पीडमौएट यह आपत्ति स्वीकार नहीं कर सकता था। कुछ समयके पीछे फिर सेनाएँ हिलने लगीं और युद्ध आरम्भ हो गया। दैव पीडमौएटके विरुद्ध ही रहा और २३ मार्च (१८४९) को नोवाराके मैदानमें आस्ट्रियाकी पूरी जीत हुई; पीडमौएटकी लड़ाकू सेनाका बड़ा भाग नष्ट हो गया।

एक योद्धाके लिये जो सबसे बड़ा अपराध है, वह चार्लस एल्बर्ट कर बैठा, वह हार गया। आस्ट्रियाने जो शर्तें पेश कीं, उन्हें मानना एक मानी राजाके लिये असम्भव था। हारा हुआ राजा सोचता रहा। देर तक सोचनेपर भी वह अपने आपको अपमान जनक शर्तें माननेके लिये तैयार न कर सका। एक बार फिर जोश आया और चार्लस एल्बर्ट अपने मन्त्रियोंसे पूछ उठा 'क्या अब भी हम आस्ट्रियासे लड़ाई कर सकते हैं?' चारों ओरसे यही उत्तर मिला कि 'नहीं' चार्लस एल्बर्टने फ़ैसला कर लिया। उसके हृदयने पुकार कर कह दिया कि 'तुम देशको स्वतन्त्र नहीं करा सकते। यह काम तुम्हारे बसका नहीं।' चार्लस एल्बर्टने राज्यसे त्यागपत्र दे दिया और अपने पुत्र विक्टर इम्मैनुअलको गद्दीपर बैठा दिया।

चार्लस एल्बर्टकी इच्छाएँ अच्छी थीं, वह इटलीको स्वतन्त्र करना चाहता था, वह अपना शरीर इटलीके नामपर वारनेको तय्यार था—किन्तु दो दोष उसका साथ न छोड़ते थे। उसके अन्दर स्थिरता नहीं थी और आत्मविश्वासका अभाव था। ये दो दोष उसके सब गुणोंको निकम्मे बना देते थे। उसने अपने यत्नोंको विफल होता देखा और चिरपरिश्रमसे तय्यारीकी हुई सेनाका संहार होते देखा। इन दृश्योंने उसका जी तोड़ दिया। अपने ऊपर भाग्यका प्रकोप समझ कर उसने यही उचित समझा कि पुत्रको गद्दी पर बिठा दे।

उसने सोचा कि यदि मेरे दुर्भाग्य ही इटलीके स्वतन्त्र होनेमें बाधक हैं, तो उन्हें रास्तेसे हटा देना ही अच्छा है।

विक्टर इम्मैनुअल राजा बनाया गया। राज्यारोहणके समय वह अभी युवक था। २६ वर्षकी आयु, गठा हुआ शरीर, चढ़ी हुई मूछें, मध्यम क़द और स्थिर तेजस्वी आँखें उस नवयुवकको स्वतन्त्रता देनेके कार्यके सर्वथा योग्य बनाती थीं। आस्ट्रियन सेनापतिका उसने निर्दयतासे सामना किया। जब विजयीने उसे अपमान-जनक शर्तें माननेके लिये दबाना चाहा तो उसका उत्तर उसके समान वीरके योग्य था। उसने कहाः—

"इन शर्तोंके माननेसे पूर्व मैं एक सौ राजमुकुट खोनेके लिये तय्यार हूँ। जो मेरे पिताने कहा, उसपर मैं दृढ़ हूँ। यदि तुम चाहते हो कि मौत देने वाला युद्ध करो तो ऐसा ही हो। मैं जातिको युद्धके लिये जगा दूँगा और तुम देखोगे कि मेरा देश भी जाग सकता है। यदि मुझे गिरना ही होगा, तो मैं विना शर्त के गिरूँगा। मेरा कुल देश-निकालेका रास्ता जानता है, पर बेइज़्ज़तीका रास्ता नहीं जानता"

वे ही मनुष्य संसारमें कृतकार्य हो सकते हैं जो हारके समय भी ऐसा उत्तर दे सकें। जो मनुष्य गिरकर चकनाचूर हो जानेकी सम्भावनाका बोझ सिरपर उठाता है, वह ऊँचे पहाड़की चोटीपर चढ़ सकता है। वह कायर है, जो चोट या

ख़तरेसे डरता है, वह कभी बड़े कार्यके या भारी बोझ उठानेके लायक़ नहीं। देशके वे हितैषी देशके मध्यम दर्जेके मित्र हैं, जो उसे राजमार्गपर दौड़ाना चाहते हैं। उन्नतिका मार्ग सीधा साफ़ सपाट राजमार्ग नहीं है। वह गढ़ोंसे, टीलोंसे, खोहोंसे और झाड़ियोंसे भरा हुआ पहाड़ी रास्ता है। उसमें अग्रसर होना उनका काम नहीं जो आराम कुर्सीपर लेट कर स्वतन्त्रताकी स्कीमें बनाते हैं। राष्ट्रीय उन्नति करनेवाले वे लोग होते हैं जो लेख लिखनेसे पहले जेलमें जानेकी तय्यारी कर लेते हैं और हथियार उठानेसे पूर्व अपना कफ़न तय्यार रखते हैं। विकृर इम्मैनुअल वैसे ही पुरुषोंमेंसे था। आस्ट्रि-यन सेनापतिको इस नयी शक्तिके सामने झुकना पड़ा और ऐसी शान्ति हो गयी जो पीडमौएटके लिये वैसी अपमान-जनक नहीं थी।

शान्ति हो जानेपर नये राजाने उदारताका आदर्श सामने रखकर राज्य करना प्रारम्भ किया। मेस्सिमो डी. एज़-ग्लिओ प्रधान सचिव बनाया गया। यह देशभक्त अब आयुमें बड़ा हो गया था, और सारे देशमें अपनी अनेक प्रकारकी शक्तियोंके लिये पूजनीय समझा जाता था। वह योद्धा था, विद्वान् था, लेखक था और राजनीतिज्ञ था। राजाने इस उदार विद्वान्को महामन्त्री बनाकर जातिका विश्वास कमा लिया।

नये मन्त्रि-मण्डलने जातिके घावोंपर मरहम पट्टी करना आरम्भ किया। चिरकालसे देशभक्तोंकी शिकायत थी, कि धर्माधिकारियोंका राज्यके कार्यमें अनुचित अधिकार है। पादरी-मण्डलके महाविरोध होनेपर भी राजा और मन्त्रि-मण्डलने राजनियमसे ये अधिकार उड़ा दिये। सारे देशमें इससे हलचल सी मच गयी। इसी समय एक शक्तिशाली मन्त्रीका देहान्त हो गया। डी. एज़ग्लिओने उसके स्थानमें कावूर नामके एक सज्जनको मन्त्रि-मण्डलमें नियुक्त कर लिया।

जब कावूरका नाम राजाके सामने आया तो उसने डी. एज़ग्लिओको ये शब्द कहे—"जरा सावधान रहना। यह कावूर तुम सबका शासन करेगा, वह तुम्हारा फैसला कर देगा और स्वयं मुख्य-सचिव बन जायगा।" सचमुच विक्टर इम्मैनुअल भविष्य-वादी था। पाठको! तुम भी ज़रा सावधान रहना, यह नया महापुरुष कहीं हमसे विना पहचाने ही न निकल जाय। चलो देखें यह कौन था।

कावूर एक उच्च घरानेमें पैदा हुआ था, किन्तु छोटा भाई होनेके कारण अपना मार्ग स्वयं ही बनाता रहा। छोटी उम्रसे ही उसकी वृत्तियाँ विलक्षण हो रही थीं। वह पहले सेनामें भरती हुआ, उस दशामें वह देशकी स्वतन्त्रताके युद्धके लिये इतना उतावला होरहा था कि सेनाविभाग उसे नहीं सह सकता था। सेनासे जुदा होकर उसने अपने पितासे कह कर

लेरीमें कुछ भूमि ख़रीद ली और वहीं एकान्तजीवन बिताने लगा। इस एकान्त स्थानमें खेती करता हुआ कावूर एक ही चिन्तामें मग्न था। देशकी राजनीतिक दशा कैसे सुधारी जाय? जातिका आलस्य कैसे तोड़ा जाय? ये प्रश्न उसके चित्तमें निरन्तर घूम रहे थे। पीडमौण्टके राजपक्षको वह बहुत अनुदार और संकुचित विचारोंवाला समझता था, और मेज़िनी आदिके प्रजातन्त्र-वादको वह अक्रियात्मक मानकर त्याज्य समझता था। इस प्रकार उस समय विद्यमान दोनों ही शक्तियोंको वह देशके उद्धारमें असमर्थ पाता था। राज-नीतिक प्रश्नोंका अनुशीलन करनेके लिये इन्हीं दिनों उसने इंगलैण्ड और फ्रांसकी सैरें भी की थीं इन्हीं दिनों अपने मित्रको पत्रमें लिखा था "मैं जानता हूँ कि मैं एक दिन इटलीका मुख्य राज-सचिव हूँगा।"

चार्लस एल्बर्टने स्वतन्त्र-राज्य-संस्थाकी स्थापना की, तो समाचार पत्रोंको भी कुछ स्वाधीनता मिली। अवसर अच्छा जान कावूर पीडमौण्टकी राजधानी ट्यूरिनमें आगया और वहाँ 'जागृति' के नामसे एक समाचारपत्र निकाल दिया। शीघ्र ही यह पत्र तेज़ और उदार विचारोंका पक्षपोषक समझा जाने लगा और राजा तथा प्रजा इसकी शक्तिको मानने लगे।

इसी बीचमें नोवाराका युद्ध, चार्लस एल्बर्टका सिंहासन त्याग और विक्टर इम्मैनुअलका राज्यारोहण हो गया। कावूर एक सम्पादककी हैसियतसे इन सब घटनाओंका अनुशीलन करता रहा। युद्धके प्रारम्भमें वह युद्धका भारी पक्षपाती था। हार होनेपर अपने पाठकोंके सामने उसे भी कुछ लज्जित होना पड़ा, किन्तु शीघ्र ही उसे वह लज्जा धोनेका अवसर मिलगया। एज़ग्लिओने कावूरको मन्त्रिमण्डलमें बुला लिया।

इस समयसे पीडमौण्टका इतिहास नयी चालसे चलने लगा। पहली चाल बदल गयी। अभी तक लोगोंकी आशाओं-का केन्द्र भला किन्तु निर्बल चार्लस एल्बर्ट था, अब उनका केन्द्र एक ऐसा युवक बना, जो जहाँ एक ओर अपनी सचाईके लिये राजाओंमें नमूना था, वहाँ साथ ही वह दृढ़ता और निर्भयतामें भी लासानी था। किन्तु वह तो केवल भुजाका काम कर सकता था। सिरकी जगह पूरी करनेके लिये एक और व्यक्तिकी आवश्यकता थी। केन्द्रभूत राजा था, स्वतन्त्रताका हृदय मेज़िनी था, स्वतन्त्रताकी ढाल और तलवार गेरीबाल्डी था, परन्तु इन सबको मिलाकर एक कार्यमें चलानेके लिये किसी राजनीतिज्ञकी आवश्यकता थी। वह भी आगया। अब सारे अंग पूरे हो गये। किसी भी चीज़की कमी नहीं रही। सर्वांग पूर्ण मेशीन भला कार्यसिद्धि क्यों न कर सकेगी?

दूसरा परिच्छेद

राजनीतिके दाँव

"नह्यर्थं विना स्वप्नेऽपि चेष्टते चाणक्यः"

चाणक्य मतलबके विना स्वप्नमें भी नहीं हिलता।

कावूर राजनीतिज्ञ था। उसका पेशा ही राजनीति था। राजनीतिके प्रत्येक अंगमें वह चतुर था। मन्त्रिमण्डलमें आनेके कुछ ही देर बाद उसके साथियोंको ज्ञात होने लगा कि "हम किसी ज़बरदस्त प्रवाहमें बह रहे हैं गतिमें स्वतन्त्रता नहीं है।" कावूरकी शक्तिका अन्त नहीं था। स्टीम एंजिनकी भाँति वह अर्थ सचिवोंको अपने पीछे घसीटता जाता था।

कावूर मुख्य मन्त्रीका भी अधिक ध्यान नहीं रखता था। किसी प्रस्तावको पास करानेमें बहु सम्मतिका होना आवश्यक है। कावूरने देखा कि मन्त्रिमण्डलके साथ सभाकी अधिक सम्मतियाँ नहीं हैं। सभामें उस समय कई दल थे। कावूरने उन्हीं

मेंसे दलके नेता रैटज़ीके साथ गुप्त सन्धि कर ली, जिसके द्वारा उस वर्षके लिये दोनों दलोंकी एकता हो गयी। यह प्रबन्ध ऐसी गुप्तरीतिसे किया गया कि मुख्य सचिवको भी पता न लगा। जब एक दिन सभामें विवाद होते २ यह बात अनायास ही प्रकाशित हो गयी तो मुख्य सचिवको बड़ा रोष हुआ। थोड़े ही दिनों बाद कावूरने रैटज़ींको कौंसिलका सभापति चुनवा दिया, इससे उसकी मुख्य सचिवसे और भी बिगड़ गयी। इन दशाओंमें कावूरने त्यागपत्र देना ही उचित समझा।

त्यागपत्र देकर वह इंग्लैंड और फ्राँसका दौरा लगाने चला गया। उस दौरेमें उसने इन दोनों देशोंकी राजनीतिक अवस्थाओंका खूब अनुशीलन किया और राजनीतिज्ञोंसे भी भेंट की। इस दौरेने उसके विचारोंको और भी विस्तृत और उदार कर दिया।

जब कावूर दौरेसे लौटा तो एज़्गिलओका मन्त्रिमण्डल डाँवाडोल हो रहा था। वह युद्धमें लगे हुए एक घावसे पीड़ित हो रहा था। राजाको उसने यही सलाह दी कि कावूरको मन्त्रिमण्डल बनानेके लिये कहा जाय। कावूरको इन्कार करनेकी आवश्यकता न थी।

इस समय उस राजनीतिक जीवनका प्रारम्भ हुआ जो वर्षों तक इटलीवासियोंकी आशाओंका केन्द्र रहा, जिसे प्रजा

प्रेम और भक्तिकी दृष्टिसे देखती रही और जिसका अन्त होने-से पूर्व इटलीका जातीय झंडा तीन चौथाई देशपर फहराने लगा। सूर्यके दमकते हुए बिम्बकी भाँति वह आकाश मण्डल में आया और तभी अस्त हुआ जब दिनका काम हो चुका।

कैवूरके मुख्य सचिव बननेसे कुछ समय पश्चात् ही यूरोप-में एक बड़ा राजनीतिक भूकम्प उपस्थित हुआ फ्रांस और इंग्लैंडने मिलकर क्रीमियामें रूससे युद्ध करनेकी ठानी। टर्की-के राज्यमें ईसाइयोंके पूजास्थान झगड़ेके कारण बन रहे थे…। झगड़ा कई रूपोंमें बदलता रहा, अन्तमें वह इस रूपमें परि-वर्तित हो गया कि टर्की स्वयं अपना राज्य करे, या रूसके ज़ारकी आज्ञाका वशवर्ती हो। इंग्लैंड और फ्रांस चाहते थे कि टर्कीकी स्वाधीनता नष्ट न की जाय। रूसने टर्कीको धम-काया और इंग्लैंड और फ्रांसने उसे सहारा दिया। परिणाम यह हुआ कि युद्ध छिड़ गया, और इंग्लैंड और फ्रांसकी फौजें मित्रदलके नामसे क्रीमियामें रूससे जा भिड़ीं।

इस समय पीडमौण्टकी बागडोर कावूरके हाथोंमें थी। उसे इस घटनासे नीतिकी एक चाल सूझी। उसने सोचा कि दो प्रबल शक्तियोंसे मित्रता करनेका यह अच्छा अवसर है। उसका यह भी विचार था कि शायद आस्ट्रिया भी कुछ दिनों पीछे युद्धमें रूसका साथ दे। आस्ट्रियाके विरुद्ध इंग्लैंड और फ्रांससे मिलना पीडमौण्टके लिये बहुत लाभ दायक था।

ज़रा पीडमौण्टका आकार तो देखिये, यूरोपके समुद्रमें बिन्दुके समान है। इस समय यह सोचकर हँसी आती है कि पीडमौण्ट इंग्लैण्ड और फ़्रांसकी सहायता करनेको तैय्यार हो, उस समय भी लोग हँसते थे, परन्तु मित्र दलके नेताओं-को आदमियोंकी आवश्यकता थी। वे नहीं हँसे और पीड-मौण्ट भी मित्रदलमें शामिल होगया। क्रीमियाके युद्धमें इटालियन सिपाहियोंने वीरताके लिये ख़ूब नाम पाया।

युद्ध समाप्त हुआ और हेगमें सन्धिसभा संगठित हुई। उस समय कावूरकी कार्यनीति फल दिखाने लगी। पीडमौण्ट-की ओरसे कावूर प्रतिनिधि होकर गया था। उसने सभामें ऐसी चतुराईसे काम किया कि अधिकतर सभ्योंकी सहानु-भूति इटलीवासियोंके साथ होगयी। आस्ट्रियाके साथ जो दुर्व्यवहार था, उसकी कहानी इस सभामें सारे यूरोपके प्रतिनिधियोंके कानोंसे गुज़र गयी। इतना काम नहीं था। इंग्लैण्ड और फ़्रांस पीडमौण्टके द्वारा इटलीके विशेष हित-चिन्तक समझे जाने लगे।

धीरे २ कावूरके कार्य फल लाने लगे। फ़्रांसमें इस समय तीसरा नैपोलियन राज्य कर रहा था। युद्धमें साथी होनेसे विचार मिलने लगे। कावूरने नैपोलियनसे इटलीकी बात कही। नैपोलियनके हृदयमें कोई आकांक्षा थी तो यूरोपके भाग्यविधाता होनेकी थी। वह भी कावूरसे पूछने लगा कि—

"मैं इटलीके लिये क्या कर सकता हूँ"। बातचीत होती रही और मेल बढ़ता गया, अन्तको १८५८ ई० में वह दिन आगया जब आश्चर्यित संसारने सुना कि पीडमौएट और आस्ट्रियामें युद्ध होगा और फ्रांस पीडमौएटकी सहायता करेगा।

जिस दिनसे कावूरने राज्यकी बागडोर ली थी, उस दिनसे वह इसी युद्धकी तय्यारियाँ कर रहा था। वह मानता था कि इटलीकी सफलताका शत्रु आस्ट्रिया ही है। वह यह भी जान गया कि शीघ्र या विलम्बसे पीडमौएटको आस्ट्रियासे युद्ध करना पड़ेगा। इसी अवसरके लिये उसने सारी जाति-का विश्वास कमाया था, इसी अवसरके लिये उसने क्रीमियन युद्धमें इटलीके सिपाहियोंका व्यय किया था, इसी अवसरके लिये उसने नैपोलियन जैसे अविश्वासपात्र मनुष्यको काबू किया था। अवसर समीप आया जान, कावूरने एक ऐसा काम किया जिसने देशभक्त इटालियनोंके हृदयोंको एक दम जीत लिया। उसने देशभक्तोंके शिरोमणि नरकेसरी गेरीवा-ल्डीको बुलाया और उसे एक सेनापतिका पद पीडमाएटकी सेनामें दिया।

युद्धके लिये दोनो ही उतावले थे। सार्डीनिया चाहता था कि जितना शीघ्र हो सके, आस्ट्रियाके पंजेसे इटलीको छुड़ावें, और आस्ट्रिया चाहता था कि यथा सम्भव जल्दी इस नये उठते हुए शत्रुका मानमर्दन किया जाय। भूखे बाघोंकी

न्याई दोनों ही देश एक दूसरे पर टूट पड़े। अकेला सार्डीनिया आस्ट्रियाके सामने निर्बल होता, परन्तु फ्रांसकी सेनाओंके साथ मिलकर इटालियन वीर आस्ट्रियाको पराजित करनेके लिये तैयार हुए।

युद्ध पहले दिनसे ही आस्ट्रियाके विपरीत पड़ने लगा। मित्रदलकी सेना गाँवपर गाँव और नगरपर नगर जीतने लगी। इस जीतमें गेरीवाल्डीके स्वच्छन्द सिपाहियोंका भी बड़ा हाथ था। वे अपनी शेष सेनासे एक या दो पड़ाव आगे रहते थे। अभी आस्ट्रियाके सेनापति सुदूरवर्ती शत्रुसैन्यके समाचार ही सुन पाते थे, कि गेरीवाल्डीके सैनिक उनकी सेनापर छापा जा मारते थे। जहाँ शत्रुको शत्रुकी बू भी नहीं आती थी वहाँ गेरीवाल्डीके भाले जा चमकते थे।

दो बड़े २ युद्ध हुए, उनमें मित्र दलको विजय प्राप्त हुई। सौलफरीनोके युद्धमें स्वयं आस्ट्रियाका सम्राट आया था, परन्तु कुछ न कर सका। उसके आगे देखनेमें मित्रोंका मार्ग निष्कण्टक प्रतीत होता था। इटालियन देशभक्त समझ रहे थे कि अब शीघ्र ही इटलीका शेष भाग आस्ट्रियाके पंजेसे छूट जायगा। परन्तु तीसरे नैपोलियनके दिलका हिसाब किसीने नहीं लगाया था। न जाने उसके हृदयमें क्या भाव घूम रहे थे। वह इटलीको स्वतन्त्र नहीं करना चाहता, केवल अपने गौरवका सिक्का जमाना चाहता था। इस अन्तिम विजयके पीछे

विस्मित यूरोपने सुना कि नैपोलियनने युद्ध बन्द कर दिया है और शान्तिकी शर्तें तय करनेके लिये आस्ट्रियाके सम्राटको निमन्त्रण दिया है। विजयके समयमें यह युद्धावसान कैसा? और फिर अभी आस्ट्रियाकी सेनाएँ इटलीकी भूमिसे तो नहीं हटीं, फिर शान्ति कैसी? सबके सामने यही प्रश्न घूमने लगे।

सार्डीनियाकी सलाह भी नहीं ली गयी और फ्रांस तथा आस्ट्रियाके सम्राटोंने सन्धि भी कर ली। सन्धिकी शर्तोंसे इटलीकी स्वतन्त्रता एक क़दम भी आगे नहीं बढ़ी। इटली-वासियोंने युद्ध इस लिये प्रारम्भ किया था कि हमारा देश स्वतन्त्र होगा, किन्तु नौका मँझधारमें ही रह गयी। देशभक्तोंने निराश होकर देखा कि उनके सिपाहियों और पैसोंका व्यय व्यर्थ ही हुआ। कावूरको जो कार्य प्रारम्भमें ऐसा सफल होता प्रतीत होता था, वह एक सम्राट्की विश्वास-घातितासे केवल चनेके कूदनेके समान निरर्थक और साहस-मात्र प्रतीत होने लगा। लेनेके देने पड़ गये। विक्टर इम्मैनुअल और कावूर लज्जित हुए और गेरीबाल्डी जैसे देशभक्त झूठे राजाओं और विश्वासघाती सम्राटोंको भूमण्डलपर नाम शेष कर देनेकी प्रतिज्ञा करने लगे।

तीसरा परिच्छेद

कल्पनाशक्तिसे भी दूर

"तत्समं केनचिल्लोके न दृष्टं नादि च श्रुतम्"

उसके समान संसारमें न किसीने देखा औरन सुना।

अब हम गेरीबाल्डीके जीवनकी उस घटनाका वर्णन करते हैं, जो कल्पना शक्तिकी दौड़से भी दूर है। गुरुगोविन्दसिंहने कहा था कि वह एकको लाखसे लड़ा सकता है। गेरीबाल्डीमें भी यही शक्ति विद्यमान थी। वह बालकको युवासे और युवाको सेनासे भिड़ा सकता था। उसने अब तक कई काम किये, जो विचित्र थे, परन्तु उनमेंसे कोई भी ऐसा अद्भुत न था, जैसा अब आरम्भ-में इस कार्यको मूर्खता या जल्दबाज़ी कहते थे, आज हम उसे साहस और वीरताकी पराकाष्ठा समझते हैं।

कार्य क्या था ? पीडमौएटने फ़्रांसकी सहायतासे युद्ध किया, गेरीवाल्डीने एल्प्स पहाड़के शिकारियोंकी सहायतासे शत्रुके दाँत खूब खट्टे किये, और इटालियन वीरोंने वीरताके नमूने दिखाये, किन्तु तीसरे नेपोलियनकी विश्वासघातिता-ने सारी शूरता और सारे स्वार्थत्यागपर पानी फेर दिया। इटली निराश और थकी हुई सी दशामें होकर उदास हो गया। लोगोंकी हिम्मतें टूटने लगीं। इस घटनाके पीछे एक दूसरी घटना हुई। नेपोलियनके साथ सुलहनामा करके कावूरने मध्य इटलीका बहुत सा भाग पीडमौएट राज्यके साथ मिला लिया, परन्तु उसके बदलेमें सैवाय और नाईस नामके दो नगर फ़्रांसको दे दिये। गेरीवाल्डी नाईसका रहने वाला था। इस सौदेसे गहरा खेद हुआ। कावूरको इटलीके नगर फ़्रांस को दे देनेका क्या अधिकार था ? सारा देश इस घटना-से विचलित सा हो गया। गेरीवाल्डीके चित्तमें दिन प्रतिदिन निश्चय होने लगा कि इटलीकी स्वतन्त्रताका यह मार्ग नहीं है ! इस तरह धीरे २ राजनीतिकी चालोंसे प्यारा देश अत्या-चारियोंसे न छूटेगा। कार्यसिद्धिके लिये कुछ और भी चाहिये।

इटलीके दक्षिणमें सिसली नामका एक द्वीप है। वह उस समय नेपल्सके बोरबोन वंशीय राजाके अधीन था। नेपल्सका अपना राज्य भी इटलीके दक्षिण भागमें था, और

काफ़ी बड़ा था। इस समयका नेपल्सका राजा फ्रांसिस आदर्श अनुदार राजा था। उसकी न प्रजासे कोई सहानुभूति थी और न वह कोई सहानुभूति चाहता था। बोरबौन राजाओं-के दिमाग़ पत्थरके बने होते हैं, उनपर बाहरकी छोटी मोटी चोटका कोई असर नहीं होता। हाँ जब कोई बड़ी सी ज़बर-दस्त चोट लगे तो उनपर प्रभाव होता है, और प्रभाव भी ऐसा वैसा नहीं, पत्थरके टुकड़े २ हो जाते हैं। राजा फ्रांसिस-पर भी इटलीमें बहती हुई स्वाधीनताकी लहरोंका कोई असर नहीं हुआ था। उसकी प्रजा विदेशी अत्याचारके नीचे कराह रही थी, सारे इटली देश और यूरोपके कान नेपल्ससे उठते हुए आर्तनादकी ओर लगे हुए थे, किन्तु मन्द चार्लस न हिलता था, न डोलता था, बस, पोपके चरणोंमें सिर नवाकर अपने आपको सुरक्षित समझ रहा था और सुखकी नींद सोता था।

अचानक उसकी सुख नींद टूट गयी। जो समाचार उसने सुना, उसपर पहले विश्वास न किया। समाचार यह था कि गेरीवाल्डी केवल एक हज़ार सेना लेकर सिसिलीके किनारेपर आ उतरा है। फ्रांसिसके पास हज़ारों फ़ौजें थीं, सैकड़ों तोपें थीं, बड़ा भारी जहाज़ी बेड़ा था और भरा हुआ ख़ज़ाना था। यह निर्धन सिपाही केवल एक हज़ार सिपाहियों-को लेकर सिसिलीमें क्या कर सकेगा? अवश्य ही यह समाचार झूठा है। ज़रूर ही समाचार भेजने वालोंने धोखा दिया है।

किन्तु लोग धोखा देनेपर तुले हुए हैं। नित्य ऐसे ही अविश्वसनीय समाचार राजाके पास पहुँचने लगे। ११ मई (१८६०) को गेरीबाल्डी मर्सीला नामक नगरमें आ उतरा। किसीको सपनाभी नहीं था कि वह सिसिलीपर आक्रमण करना चाहता है। जब यह विचार समाचार यूरोपमें फैला तो पहले किसीको विश्वास न हुआ। जब विश्वास हुआ तो सबने वीर गेरीबाल्डीकी मूर्खतापर सर्द आह भरी, और समझा कि अब शीघ्र ही उसका अन्त हो जायगा। भला इस दुस्साहस का भी कहीं ठिकाना है ?

धीरे २ नये समाचार आने लगे और लोगोंको विस्मयमें डालने लगे। फ्रांसिसने और सारे यूरोपने शीघ्र ही सुना कि गेरीबाल्डीने सिसिलीकी राजधानी पालेमोंकी ओर पयान किया है। द्वीपमें नेपल्सके कमसे कम ५० हज़ार सिपाही थे। द्वीपमें आनेके समय गेरीबाल्डीके साथ केवल एक हज़ार सिपाही थे। द्वीपपर पहुँचते ही उसने वहाँके निवासियोंके नाम घोषणापत्र जारी किये। घोषणापत्रोंमें गेरीबाल्डीने सिसिलीवासियोंको बतलाया कि वह उन्हें अत्याचारीके फन्देसे छुड़ाकर आदर्श इटालियन राजा विक्टर इम्मैनुअलके सुपुर्द करने आया है। विक्टर इम्मैनुअल इटलीका भावी राजा होगा, सिसिली सारे देशसे मिलकर उसीके अधीन होगा। उसके घोषणापत्रोंकी टेक यही थी कि 'हथियार लो, हथियार लो,

हथियार लो, और अत्याचारीको मार भगाओ'। नित्यप्रति सिसिलीनिवासी गेरीवाल्डीकी सेनामें भर्ती होनेके लिये आने लगे।

दोनों सेनाओंकी मुठभेड़ कलाराफीमी नामके गाँवमें १५ मईको हुई। प्रारम्भमें प्रतीत होता था कि देशभक्तोंका दल ऐसे पिघल जायगा, जैसे धूपके आनेपर बर्फ़ पिघल जाती है। शत्रुकी सेना कमसे कम चार हज़ार थी, गेरीवाल्डीके बहादुर एक हज़ार थे। मैदान साफ़ था, इसलिये किसी विशेष चतुराईके लिये अवसर नहीं था। गेरीवाल्डीके लिये एकही रास्ता खुला था। वह रास्त सीधे वार का रास्ता था। देशभक्त शेरोंका दल संगीनकी मारसे दुश्मनकी क़तार काटकर पालेर्मोकी ओर बढ़ सकता था, इसके बिना नहीं। सीधेकी लड़ाईमें संख्या बड़ी चीज़ होती है। जब मरने मारनेका ही प्रश्न हो तो फिर चार जने एकको मार ही सकते हैं। देशभक्त मरने लगे, पर रास्ता निकलता नज़र न आया। गेरीवाल्डीके महारथियोंमें से एक बिक्सियो भी था। बिक्सियो युद्धके आरम्भसे ही घनी मारकाटमें लड़ रहा था, ऐसा पेचदार मामला देखकर वह गेरीवाल्डीके पास आया और कहने लगा—"सेनापते! शायद हमें पीछे हटना पड़े"।

ये शब्द गेरीवाल्डीके कानोंमें तीरकी तरह लगे। उसने बिक्सियोको ऊपरसे नीचे तक देखा, और थोड़ी देर तक

कुछ न बोल सका। पीछे उसने कहा—'बिक्सियो ! ऐसा मत कहो। हम लोग इसी जगह मरेंगे'। बिक्सियोके लिये ये शब्द पर्याप्तसे भी अधिक थे। वह तो मानो लज्जाके मारे कोसोंकी गहराईमें जा रहा।

कठिनाईका हल करना आवश्यक था। नरकेसरीने अपने वीरोंकी ओर दृष्टि उठायी और आकर्षक स्वरमें कहा—"मेरे लड़को ! मैं चाहता हूँ कि अब एक अन्तिम धावा कर दो। पाँच मिनट आराम करो और फिर आगे बढ़ जाओ।" आरामके पाँच मिनट कठिनाईसे बीते। उसके पीछे गेरी· वाल्डीने चिल्लाकर कहा—"संगीनोंका वार करो" इटली और गेरीवाल्डीका जयजयकार करते हुए देशभक्तोंने संगीनोंका वार किया। तीव्र रविकी किरणें जैसे क्षणभरमें अन्धकारके भयंकर कार्य को काट देती हैं, इसी प्रकार आनकी आनमें नेपल्सके सिपाहियोंको देशभक्त महावीरोंने परास्त किया। १५ मिनटमें मैदान शत्रुसे ख़ाली हो गया। उस दिनसे बिक्सियोने प्रतिज्ञाकी कि अब आगेसे पीछे लौटनेकी बात कभी जिह्वापर न लाऊँगा।

इस जीतके पीछे गेरीवाल्डीका मार्ग राजमार्गकी भाँति सरल होगया। नगर २ और ग्राम २ में स्वागत और कृतज्ञताकी मालाएँ ग्रहण करता हुआ विजयी वीर पालेर्मोके पास ही पास आने लगा, इस समय उसने राजपक्षकी सेनाओं

के नाम भी घोषणाएँ निकालीं, जिनमें उन्हें बतलाया कि "तुम भी इटली-माताके पुत्र हो, मैं तुम्हें भी अत्याचारीकी जंज़ीरोंसे छुड़ाने आया हूँ। आओ और हमसे मिल जाओ।" इस अपीलका त्वरित प्रभाव हुआ। राजपक्षके सिपाही समूह बना बना कर अपनी सेनासे भाग, गेरीवाल्डीके देशभक्त दलमें शामिल होने लगे।

गेरीवाल्डी मईकी २७ तारीख़के दिन पालेमौके पास पहुँच गया। पालेमौमें इस समय राजपक्षके ३२ हज़ार सिपाही क़िला बाँधे हुए पड़े थे। गेरीवाल्डीके पास इसका पाँचवाँ भाग भी नहीं था। तो भी उसने निश्चय कर लिया, कि हो न हो, कलतक अवश्य राजधानीमें इटलीका जातीय-झण्डा गाड़ना है। उसने थोड़ीसी सेनाओंको पालेमौपर सामनेसे आक्रमण करनेके लिये भेजा। शत्रु इसी आक्रमणकी आशा कर रहा था। शत्रुको सामने देख उसपर टूट पड़ा। पहले सोचे हुए कार्यक्रमके अनुसार धावा होनेपर गेरीवाल्डीके अनुयायी पीछे लौटने लगे। अच्छा मौक़ा हाथ आया समझ नेपल्सकी लगभग १८ हज़ार सेनाएँ क़िलेसे निकल पीछा करने लगीं।

इस प्रकार शत्रुका ध्यान दूसरी ओर बाँटकर गेरीवाल्डी चुने हुए सहायकोंको साथ लेकर, दूसरे द्वारसे राजधानीमें घुस गया। राजधानीके देशभक्त उसका स्वागत करनेके

लिये पहलेसे ही उद्यत थे। अन्दर घुसते ही स्वतन्त्रताका अग्रदूत भक्त देशभक्तोंसे घिर गया। इधर धोखा खायी हुई शत्रु-सेनाएं गेरीबाल्डीका नगरमें घुसना सुनकर कदम पीछेको मोड़ने लगीं। द्विविधामें फँसकर उन्हें बहुत हानि सहनी पड़ी।

राजधानीमें पहुँचे हुए गेरीबाल्डीने घोषणापत्रसे नगर-वासियोंको सूचना दी कि—"सिसिली द्वीप नेपल्सकी अधीनतासे निकलकर आज इटलीके भावी राजा विक्टर इम्मैनुअलके अधीन होता है, और इस समय राजाके प्रतिनिधि रूपमें मैं उसका स्वच्छन्द शासक बनता हूँ"। इस घोषणापत्रसे सारे द्वीपमें एक विद्युत सी फैल गयी और प्रत्येक देशभक्त हथियार उठाकर गेरीबाल्डीकी सेनामें भर्ती होनेके लिये तय्यार होने लगा।

पालेमो दो सेनाओंसे भर गया। एक ओर राजसेनाएँ जमी हुई थीं और दूसरी ओर स्वतन्त्रताका झण्डा लहरा रहा था। तीन दिन तक नगरके दोनों भाग एक दूसरेपर गोलों की अनवरत वृष्टि करते रहे, तोपोंका भयंकर-नाद स्वाधीनता के सन्देशको जल और थलसे पार पहुँचाता रहा, उसके पीछे राजसेनाने हथियार रख दिये। सिसिली स्वतन्त्र हो गया।

गेरीबाल्डीने यह ऐसा काम किया, जिसकी किसीको आशा नहीं थी। कार्य इतना शीघ्र सम्पूर्ण हो जायगा, इसकी तो स्वयं आशाकी मूर्ति गेरीबाल्डीको भी आशा नहीं थी।

असम्भव सम्भव हो गया। यूरोप सोचने लगा कि अब आगे क्या होगा?

राजनीतिज्ञोंके दिमाग़ अभी तक आश्चर्यसे स्तम्भितसे हो रहे थे, अब उनमें फिर गति उत्पन्न होने लगी। इंग्लैण्ड की पहिले दिनसे ही गेरीवाल्डीके इस कार्यके साथ गुप्त सहमति थी, उसके राजनीतिज्ञ प्रसन्न चित्तोंसे समयकी प्रतीक्षा करने लगे। फ्रांसकी घबराहटका ठिकाना नहीं था। तीसरा नैपोलियन अपनेको इटलीका हितचिन्तक कहता था, किन्तु इससेभी अपनी लोकप्रियता बढ़ानेकी फ़िक्रमें था। उसकी यह अभिलाषा कभी नहीं थी कि इटली एकदम स्वतन्त्र हो जाय या उसके सिवा किसी और पुरुषका नाम भी यूरोपमें प्रसिद्धि पावे। वह कावूरको जले कटे चिट्ठे भेज रहा था, और प्रेरणा कर रहा था कि गेरीवाल्डीको आगे बढ़नेसे रोको। कावूर विचित्र दशामें था। यद्यपि गेरीवाल्डी उसकी या विक्टर इम्मैनुअलकी सम्मति लेकर सिसिलीमें नहीं गया था, तो भी जब वह वहाँ चला गया तो कावूरने गुप्त रीतिसे उसकी सहायता करनेमें कसर नहीं की। परन्तु अब दशा बदल गयी थी। सिसिलीसे गेरीवाल्डी नेपल्समें उतरना चाहता था और नेपल्सके राज्यका नाम निशान उड़ा देना चाहता था। ऐसा होनेसे सम्भव था कि फ्रांस या आस्ट्रिया बीचमें कूद पड़ते। उस समय गेरीवाल्डी कठिनाईमें पड़ता।

पीडमौएट सीधी तरह से गेरीवाल्डीकी कुछ भी सहायता न कर सकता।

यही सब सोचकर इस समय विकृर इम्मैनुअलने गेरीवाल्डीको अपने हाथसे एक चिट्ठी लिखी। चिट्ठीमें उस प्रेमभावका वर्णन करके, जो गेरीवाल्डी सदा राजाके लिये दिखलाता रहा, उसने सेनापतिको बधाई दी और साथ ही उसे सिसिलीसे आगे जानेसे रोका। गेरीवाल्डीने उसके उत्तरमें जो पत्र लिखा वह पढ़ने योग्य है। पत्र इस प्रकार था :—

"देव ! श्रीमान् उस भक्ति और श्रद्धाको जानते ही हैं, जो मैं आपके लिये रखता हूँ। मैं चाहता था कि आपकी आज्ञा पालन कर सकता, किन्तु इटलीकी वर्तमान दशाएं मुझे रोकती हैं। मुझे नेपल्सके लोग जबरदस्त प्रेरणा कर रहे हैं। मैंने बहुत यत्न किया कि वे रुक जायँ, और किसी अच्छे समयकी प्रतीक्षा करें; किन्तु मेरा यत्न व्यर्थ हुआ है। यदि मैं इस समय आगा पीछा करूँ तो इटलीका अहित होगा और मैं अपने कर्तव्यसे च्युत हूँगा। क्या श्रीमान् मुझे आज्ञोल्लंघन करनेकी आज्ञा देंगे ? जब बोरबोनोंके अत्याचारोंसे पीड़ित प्रजाको छुड़ा लूँगा, तब मैं अपनी तलवार श्रीमानों के चरणोंमें रख दूँगा और फिर जन्मभर आपकी आज्ञामें रहूँगा"।

गेरीवाल्डी।

गेरीवाल्डीने नेपल्समें जाकर भेड़ियेको उसकी गुफामें ललकारनेका निश्चय कर लिया। नेपल्सके राजाने भी समझ लिया था कि परीक्षाका समय पास है। सिसिलीसे गेरीवाल्डी नेपल्सके जिस किनारेपर शीघ्र पहुँच सकता था वहाँ तोपों, सेनाओं और जहाजोंका ऐसा भयंकर दुर्ग बनाया गया था कि स्वतन्त्रताकी सेनाका नेपल्समें उतरना असम्भव दिखाई देता था। फिर असम्भव बात सम्भव हो गयी। एक अँधेरी रातमें चुपकेसे गेरीवाल्डीकी सेनाएँ सिसिलीसे नेपल्समें जा उतरीं। नेपल्सकी सरकार 'क्या हुआ' 'कैसे हुआ' का कोई उत्तर न पा सकी, उसे केवल इतना ज्ञात हुआ कि आँधी प्रतिदिन समीप ही समीप आ रही है और उससे बचना दुष्कर है।

अब युद्धके नये ही सामान निकलने लगे। गेरीवाल्डीका नाम ही कई नगरोंसे राज-सेनाओंको भगानेके लिये पर्याप्त होता था। एक नगर लेनेके लिये गेरीवाल्डीने अद्भुत चतुराई खेली। एक पासके पोस्टआफ़िससे उस नगरमें तार देदी कि 'गेरीवाल्डी नगरके पास ही है और शीघ्र ही धावा करेगा'। प्रातःकाल तक नगर शत्रुकी सेनाओंसे ख़ाली हो गया। कई नगरोंमें गेरीवाल्डीके घोषणापत्रोंने राजपक्षकी सेनाओंमें ऐसा राजद्रोह फैला दिया कि सेनापतियोंको अपनी सेनाएँ छोड़कर भागना पड़ा। युद्ध करना गेरीवाल्डीके

लिये ढूँढनेपर भी असम्भव प्रतीत होने लगा। राजा फ्रांसिस-की सेनामें भांजड़ पड़ गयी। ग्राम और नगर सहज ही में वशीभूत होने लगे।

ये सब समाचार जब नेपल्सके राजाके पास पहुँचे तो वह किंकर्तव्य-विमूढ होगया। अकस्मात् उसने क्या सुना कि गेरीबाल्डीकी सेनाएँ नेपल्सके बहुत पास ही हैं। अभी वह समाचार उसकी समझमें भी नहीं आया था कि उसे दूसरा समाचार मिला कि गेरीबाल्डी राजधानीमें प्रविष्ट होगया है। अत्याचारी कायर हुआ ही करते हैं। कायर फ्रांसिसने घबरा कर अपने मन्त्रियोंसे पूँछा कि 'मेरे सिपाही मुझे त्याग कर दुश्मनसे क्यों मिल रहे हैं? उन्होंने मेरे लिये लड़नेकी प्रतिज्ञा की थी।' मन्त्रियोंने उत्तर दिया कि यह सारा दोष उस मनुष्योंके जादूगर गेरीबाल्डीका है, उसका जादू जिसपर चल जाता है वह अपना मालिक नहीं रहता। राजाने जब देखा कि न वह अपनी प्रजापर भरोसा कर सकता है और न सेनापर तब उदारताका ढोंग रचने लगा। कभी स्वतन्त्रता-पूर्ण राज्यसंस्था देनेकी घोषणा देने लगा। और कभी अनुदार मन्त्रिमण्डलके परिवर्तनका प्रसन्नता-दायक-समाचार देशमें घुमाने लगा। पर यह सब कुछ पानीपर लकीर डालनेके समान व्यर्थ हुआ। जिसने दसवार प्रतिज्ञा भंग की हो, उसकी प्रतिज्ञापर कौन विश्वास कर सकता है। प्रजाने

महावीर गेरीवाल्डी



नीति धुरन्धर—कावूर

महावीर गेरीवाल्डी



वीर छत्रपति राजा विक्टर इम्मेनुअल

(पृष्ठ संख्या १६१)

आदर्श प्रेस, काशी।

फ्रांसिसकी घोषणाओंका उस काग़ज़ जितना भी मूल्य नहीं समझा, जिनपर वे लिखी हुई थीं।

गेरीवाल्डी राजधानीमें घुसेगा। यह समाचार नगरमें पहले ही फैल चुका था। लोग पाशोंके काटनेवाले देवताके देखनेकी आशा और प्रतीक्षामें टकटकी लगाये हुए थे। उस दिन घर घरमें विवाहोत्सव प्रतीत होता था। नगरवासियोंके गृहोंके द्वार सुन्दर २ वाक्यों, फूलों, पत्रों और बन्दनवारोंसे ख़ब सजाये हुए थे। दोपहरके समय जो रेलवे ट्रेन आयी, उसमें गेरीवाल्डीके बहुतसे लाल जाकटोंवाले अनुयायी भी आये थे। यह समाचार कानोंकान नगरमें फैल गया। बस फिर क्या था? सारा नगर मानो स्टेशनपर टूट पड़ा। गेरीवाल्डी अपने सिपाहियोंसे भिन्न वेष नहीं पहनता था, जनता उसे ढूंढने लगी। जिसकी आकृति कुछ भी गेरीवाल्डीसे मिलती थी, लोगोंने उसीके गलेमें मालाएँ पहरानी प्रारम्भ कीं। जोशमें नगरनिवासियोंने उस दिन न जाने कितने गेरीवाल्डी बना दिये। बेचारे सिपाही इन्कार करते २ तंग आगये।

इतनेमें समाचार फैल गया कि गेरीवालडी अपने मुख्य अफ़सरोंके साथ दूसरे द्वारसे नगरमें पहुँच गया है। लोग उधर ही को दौड़े, वहाँ सचमुच ही जनता-लोचन-चातकोंका मेघ उमड़ रहा था। गेरीवाल्डी गाड़ीमें लोगोंके अभिनन्दनों और स्वागतोंका उत्तर देता हुआ आगेको बढ़ रहा था। लोगोंके

जोशका कोई ठिकाना नहीं था। स्त्रियाँ और पुरुष सब एक ही आवेशसे पूर्ण थे। जिन बूढ़ोंकी आँखोंमें शोक और हर्षके जलबिन्दु वर्षोंसे सूख चुके थे, वे मानो कहींसे माँगकर आँसू ले आये। हर्षके आँसू आँख आँखमें दिखाई दे रहे थे। नवयुवकोंका जोश और भी बढ़ा। गेरीवाल्डीकी गाड़ीके घोड़े खोल दिये गये और दर्शकोंने गाड़ी खींच कर राजकीय भवन तक पहुँचायी।

शामको लोगोंने ऐसा शब्द सुना, मानो कोई सेना नगरसे जा रही है, राजा फ्रांसिस वास्तविक नरेशके आनेपर राजधानी छोड़कर जा रहा था। राजधानीसे नक़ली राजा चला गया और उसी समय नेपल्स स्वतन्त्र हो गया। दूसरे दिन राजा विक्टर इम्मैनुअलके नामपर गेरीवाल्डी नेपल्स और सिसिलीका शासक आघोषित होगया।

यूरोपने आश्चर्य भरे हर्षके साथ यह समाचार सुना। फ्रांस और आस्ट्रियाकी छातीपर साँप लोट गया और पीडमौण्टका मुख्य सचिव कावूर सोचने लगा कि अब न जाने आगे क्या होगा। नेपल्सके आगे रोमके पोपका राज्य था। गेरीवाल्डी कई बार घोषणा कर चुका था, कि वह तब तक म्यानमें तलवार नहीं डालेगा जबतक रोमको भी पोपके पंजेसे नहीं छुड़ा लेगा। सब देशभक्त सेनाके हितैषी रोमकी सीमाको लाँघ जानेके समाचारकी ही प्रतीक्षा कर रहे थे,

परन्तु हितैषियोंको इसमें भय भी था। रोम इस समय फ्रांस और आस्ट्रिया दोनोंकी रक्षामें समझा जाता था। रोमकी सीमामें पाँव रखते ही गेरीबाल्डीको दोनों महाशक्तियोंका सामना करना पड़ेगा। कावूर जानता था कि उस समय सम्भव है, सिसिली और नेपल्स भी हाथसे निकल जावें, इस लिये उसने गेरीबाल्डीकी दिग्विजयको यहीं समाप्त करनेका निश्चय किया।

गेरीबाल्डी पहले ही दिनसे विक्टर इम्मैनुअलके नामपर सारा कार्य कर रहा था। उसे समाचार भेजा गया कि राजा विक्टर इम्मैनुअल उससे नेपल्समें मिलनेके लिये आ रहा है। यह सूचना स्वतन्त्रताके दूतके लिये पर्याप्त थी। उसने भी राजाके इस आदेशमें जो आज्ञा भरी हुई थी, उसे सिर झुकाकर स्वीकार किया। नेपल्समें इटलीके भावी राजाके स्वागतकी तय्यारियाँ होने लगीं।

१६ अक्तूबरके दिन गेरीबाल्डीको समाचार मिला कि राजा आ रहा है। गेरीबाल्डी अपने मुख्य २ अफ़सरोंके साथ राजाका स्वागत करनेके लिये आगे बढ़ा। राजा दूरबीन लगाकर लाल कुर्तीके जवानोंमें उनके नेताको पहिचानता आ रहा था। ज्योंही उसने गेरीबाल्डीको पहिचाना, त्योंही घोड़ेको एड़ी लगायी। थोड़ी देरमें दोनों वीर एक दूसरेके सामने पहुँच गये। दोनों ओरके सिपाही एकस्वरसे 'राजा विक्टर

इम्मैनुअलका जयजयकार' पुकार उठे। गेरीवाल्डी एक क़दम आगे बढ़ा और उसने अपनी टोपी उठाकर काँपते हुए स्वरमें कहा 'इटलीके राजा' उत्तरमें राजाने टोपी तक हाथ उठाकर गेरीवाल्डीकी ओरको बढ़ा दिया और कहा 'धन्यवाद्'। दोनों मातृभूमिके भक्तोंके हाथ मिल गये। दोनों के हृदय ही जानते थे कि सच्ची देशभक्तिका आदर किसे कहते हैं।

दूसरे दिन गेरीवाल्डीने नेपल्सका राज्य विक्टर इम्मैनुअल को सौंप दिया और स्वयं छुट्टी चाही। राजाने उसे बहुत मना किया परन्तु उसने यही उत्तर दिया कि इस समय मेरा काम हो चुका, अब मैं जाऊँगा ही। राजाने उसे प्रिंस या कुँवरकी पदवीसे विभूषित करना चाहा, इटलीकी सेनामें पहले मार्शल (सेनानी) का पद देना चाहा और पाँच लाख सालाना भेंट करनी चाही। किन्तु गेरीवाल्डी इन चीज़ोंका भूखा नहीं था। एक सच्चे राजनीतिक संन्यासीकी भाँति उसने सब चीज़ोंसे इन्कार कर दिया और केवल अपने कपररा द्वीपमें जानेकी छुट्टी माँगी। अन्तमें उसने राजाको इतना दिलासा अवश्य दिया कि "अब मैं जाता हूँ, किन्तु जब देश-पर ख़तरा होगा तब अपने पुराने योद्धाओंके साथ सेवाके लिये हाज़िर हूँगा।"

राजनीतिक संसारमें ऐसे त्यागके उदाहरण विरले ही हैं। उन उदाहरणोंमेंसे भी गेरीवाल्डीका उदाहरण अनूठा ही

है। यह परिच्छेद एक और आवश्यक घटनाका वृत्तान्त लिखे बिना पूरा नहीं हो सकता। अपने भाग्योंका अन्तिम निश्चय करनेके लिये राजधानीसे कुछ दूर नेपल्सके राजाने कैपुआ नामक नगरमें लगभग एक लाख सिपाही एकत्र किये और नेपल्सको फिर वापिस लेनेका निश्चय हुआ। जो युद्ध हुआ, उसमें देशभक्त सेनाका विजय हुआ। नेपल्सके राजाकी सारी सेना कैपुआ नगरमें घिरगयी। इस समय कैपुआ जीतनेका सरल मार्ग यह था कि कैपुआपर गोले बरसाये जाते, किन्तु गेरीवाल्डी इसे स्वीकार नहीं करता था। वह कहता था कि नगरपर गोले बरसानेमें निरपराधी इटालियन भी मरेंगे और मेरे लिये एक भी निरपराधी इटालियनका रुधिर नहीं बह सकता। देर तक वह इसी निश्चयपर जमा रहा, किन्तु नेपल्सकी सेनाके सेनापतिकी ढिठाईने कोई और मार्ग ही न देखा। आखिर नगरपर गोले बरसाने पड़े, किन्तु उस दिन गेरीवाल्डीका चित्त अन्दर ही अन्दर रोता रहा। वह खिड़कीमेंसे जलते हुए कैपुआ नगरको देखकर सर्द आहें भरता रहा। अन्तको कैपुआसे तो सफ़ेद झण्डा खड़ा हो ही गया, परन्तु गेरीवाल्डीके हृदयमें भी बड़ा गहरा घाव लगा।

चौथा परिच्छेद

अपमान और मानके दृश्य

"ज्ञातयो नो भयावहाः।"

हमें अपने जातिवालोंसे ही भय है।

कपररामें पहुँचकर गेरीवाल्डीने विचित्र दृश्य देखा। वह द्वीपको पथरीले जंगलके रूपमें छोड़ गया था, अब उसके स्थानमें रम्य नन्दन-वन दिखाई देता था। जहाँ वह केवल झोपड़ी छोड़ गया था, वहाँ आराम देने वाला बँगला खड़ा था। द्वीपकी काया ही पलट गयी थी। गेरीवाल्डी यह परिवर्तन देखकर बड़ा आश्चर्यित हुआ और उस मित्रकी ढूँढ करने लगा, जिसके प्रेमका सारा नमूना था। उसे अधिक नहीं ढूँढना पड़ा। बीचके बड़े कमरेमें पहुँचकर देखा तो सामने राजा विक्टर इम्मैनुअलका एक बड़ा चित्र लटक रहा है। समस्या हल हो गयी। उसे ज्ञात हो गया कि राजा का उससे कितना प्रेम है।

गेरीवाल्डी कपररामें किसानका स्वर्गीय जीवन बिताने लगा। तलवार छोड़ हल और खुर्पेका आनन्द भोगने लगा। इस दशामें भी वह सारे यूरोपकी आँखोंका केन्द्र सा बना हुआ था। उसका नाम इटलीमें पूज्य देवताकी भाँति और यूरोपमें स्वतन्त्रताके अग्रदूतकी भाँति पूजा जाता था। नेपल्सके लोगों-ने तो गेरीवाल्डीकी मूर्तियां स्थान स्थानपर स्थापित कर ली थीं और जिस दिन उसने सिसिलीकी ओर यात्राकी थी वह दिन भी मनाया जाने लगा था।

इस विश्राममें भी गेरीवाल्डीका हृदय निश्चल नहीं था। उसके हृदयमें एक बात खटक रही थी। इटली स्वतन्त्र हो गया, परन्तु उसकी पुरानी राजधानी रोम अभी तक स्वतन्त्र नहीं हुआ। उसपर अभी तक पोपका राज्य बना हुआ था। रोमराज्यके अन्तर्वर्ती नगरोंके वासी रात दिन गेरीवाल्डीको प्रेरित कर रहे थे कि 'आओ और हमारी रक्षा करो'। इटली के अन्य देशभक्त भी रोमके विना इटलीको सिर विहीन धड़की भाँति समझते थे। जब तक विक्टर इम्मैनुअल रोममें न बैठ सके, तब तक इटलीकी स्वतन्त्रताका क्या अर्थ हो सकता है?

गेरीवाल्डीके चित्तमें रोमको स्वतन्त्र करानेका विचार चिरकालसे उठ रहा था। अब वह विचार प्रतिदिन प्रबलसे प्रबल होने लगा। समझानेवालोंने उसे बहुत समझाया और रोमपर आक्रमण करनेके ख़तरे बताये, किन्तु प्रजाके शब्दको

वह नहीं सह सका। यह ठीक था कि राजनीतिक दृष्टिसे रोम-पर आक्रमण करना बुद्धिमत्ताका कार्य नहीं था। गेरीवाल्डी और उसके स्वयंसेवक मिलकर फ़्रांस और आस्ट्रियासे नहीं लड़ सकते थे, किन्तु गेरीवाल्डीकी विशेषता यह थी कि वह राजनीतिसे ऊपर उठा हुआ था। रोम स्वतन्त्र होना चाहिये, बस, इतना उसके लिये पर्याप्त था, आगेका ईश्वर स्वामी है। गेरीवाल्डीको अपनी स्वयंसेवक सेनापर इतना विश्वास था कि वह उनकी सहायतासे फ़्रांस और आस्ट्रियाकी सम्मिलित शक्तिको पराजित करना एक साधारण बात समझता था। पाठको! गेरीवाल्डीके कामको आप साहसिक कार्य कहें तो कहें—अचिन्तित कार्य कहें तो कहें, परन्तु इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि उसका कार्य एक वीर, एक ईश्वरविश्वासी और एक मनुष्यके योग्य कार्य था, मूर्खताका नहीं।

उसने घोषणा कर दी, और हज़ारों स्वयंसेवक इटलीके नगरों और ग्रामोंसे इकट्ठे होने लगे। शीघ्र ही हज़ारोंकी स्वाधीनता-सेना एकत्र हो गयी। पुरानी ही रीतिके अनुसार गेरीवाल्डी सिसिली पहुँचा और वहाँ प्रजाके स्वागतों और अभिनन्दोंके उचित उत्तर देता हुआ आगे बढ़ने लगा। यह समाचार यूरोपमें बिजलीकी तरह फैल गया। फ्रांस-आस्ट्रिया और पीडमौण्टकी राजधानियोंमें सनसनी फैल गयी। इनके राजमन्त्रियोंमें तार दौड़ने लगे। विक्टर इम्मैनुअल अपने आपको

बड़ी कठिन-दशामें अनुभव करने लगा। देशके दुर्भाग्यसे इस समय इटलीकी बागडोर उस राजनीति-विशारदके हाथोंमें नहीं थी, जो गेरीवाल्डी जैसे शेरको पिँजरेमें बाँध सकता था। कावूरका देहान्त हो चुका था। मृत्युसे कुछ दिन पूर्व पार्लमेण्ट में गेरीवाल्डोने कावूरपर दोष लगाया था कि उसने नेपल्सके जीतने वाले स्वयंसेवकोंसे अच्छा व्यवहार नहीं किया। इसपर इन दोनों महापुरुषोंमें वैमनस्य सा हो गया था। वह वैमनस्य हटानेके लिये राजाने इन दोनोंको अपने महलमें बुलाकर परस्पर मिला दिया था और वैमनस्य दूर कर दिया था। इस मेलके कुछ दिन बाद ही कावूरका देहान्त होगया। वह जीवित रहता तो शायद इस कठिनाईको सरल करनेका कोई उपाय ढूँढ लेता। किन्तु इस समय यह कठिन था। राजाने गेरीवाल्डीको रोम-यात्रासे रोकनेके लिये एक पत्र लिखा, उसका गेरीवाल्डीने वही उत्तर दिया जो नेपल्सकी ओर बढ़नेसे पहले दिया था। राजमन्त्रियोंने उसे रोकनेके लिये पत्र भेजे, उन पत्रोंको उसने पढ़ा तक नहीं। इस प्रकार सारी उलटी सलाहोंका तिरस्कारकरके गेरीवाल्डी नेपल्सके दक्षिणमें जा पहुँचा।

वहाँ पहुँचनेपर ज्ञात हुआ कि पीडमौण्टकी सरकारने उसके विरुद्ध घोषणापत्र निकाला है। उसे यह भी ज्ञात हुआ कि राजकीय सेनाएं उसके स्वयं सेवकोंको और उसे बन्दी करनेके लिये पीछा कर रही हैं। इन समाचारोंसे उसे आश्चर्य

हुआ पर निराशा नहीं हुई। वह पीडमौएटकी सेनासे झगड़ना नहीं चाहता था। उसने यही निश्चय किया कि उसके स्वयंसेवक आँख बचाकर निकल जायँ। राजकीय-सेनाएँ सीधे रास्तेपर उसका पीछा कर रही थीं, गेरीवाल्डी ने पहाड़ोंका रास्ता पकड़ लिया। राजकीय-सेनाओंने वहाँ भी उसका पीछा किया। गेरीवाल्डीकी सेनाएँ एस्प्रोमौएट नामके ऊंचे भूतलपर पड़ी हुई थीं। वहाँ समाचार मिला कि राजकीय सेनाएँ आरही हैं। अब बिना इन सेनाओंको मिले निकल जाना कठिन था। सेनापतिने अब राजकीय सेनाओंकी प्रतीक्षा करने का ही विचार किया। अपनी सारी सेनाको उसने आज्ञा दी कि कोई गोली न चलावे। राजकीय सेनाएँ बन्दूकें ताने हुए उसकी ओर बढ़ने लगीं और स्वयंसेवकदलको घेरने लगीं। तब भी गेरीवाल्डी शान्त भावसे खड़ा रहा और यही आज्ञा देता गया कि 'गोली मत चलाओ, गोली मत चलाओ, इतनेमें राजकीय सेनाओंने गोलियाँ चलानी प्रारम्भ कीं। गेरीवाल्डीने फिर पुकार कर कहा— 'मेरे सिपाहियो! गोली मत चलाओ' इतनेमें दो गोलियाँ आकर उसकी टाँगोमें लगीं। चोटसे वह गिरा नहीं, परन्तु अपने आपको ऊँचा करके, टोपी उतार कर फिर उसने कहा कि 'इटली दीर्घायु हो। कोई गोली मत चलाना' उसके कई साथियोंने उसे सहारा देकर एक वृक्षके नीचे बैठाया।

उसे वहाँ बैठे देर न हुई थी कि उसका पुत्र मोनही भी एक गोली की चोट खाकर लेट गया। फिर भी गेरीवाल्डीकी वही आज्ञा रही कि 'गोली मत चलाओ'। विधाता की माया देखिये। जिस गेरीवाल्डीने राजा विक्टर इम्मैनुअलको गत वर्ष दो देश जीत कर दिये, वह आज उसीके सिपाहियोंकी गोलीसे आहत होकर शय्या-शायी हुआ।

राजाकी आज्ञाके अनुसार सब स्वयंसेवकोंके हथियार ले लिये गए और वह गेरीवाल्डी जिसे दस-गुने शत्रुभी नीचा नहीं दिखा सकते थे, विना वार किये अपने देशवासियोंके हाथ क़ैदी हो गया

यह समाचार वायु वेगसे दिग्दिगन्तरोंमें फैल गया। गेरीवाल्डी इटलीमें ही नहीं, सारे यूरोपमें पूजा जाता था, उसके क़ैदी और घायल होनेके समाचारने यूरोपको कँपा दिया। इङ्गलैण्ड, फ्रांस और इटलीके बड़े २ डाक्टर बिना बुलाये ही घाव देखनेके लिये पहुँचने लगे। सारे इटली देशमें तो मानो भूकम्प आ गया। जहाँसे क़ैदी गेरीवाल्डीकी सवारी निकलती थी वहाँ गलियाँ और सड़कें निवासियोंसे भरी नज़र आती थीं। ग्राम २ और नगर २ में पीडमौण्टके इस कामसे असन्तोष प्रकट करनेके लिये सभाएँ होने लगीं।

घाव पहले बहुत भयंकर जान पड़ता था। गोलीको टटोलना कठिन प्रतीत होता था। बहुत परिश्रमसे डाक्टर

लोगोंने उसे निकाला और हमारे नायककी तबीअत अच्छी होने लगी। लोगोंके असन्तोष और विरुद्ध मतसे डर कर पीडमौएटकी सरकारको रोमके आक्रमणमें योग देनेवाले सब स्वयंसेवकोंको क्षमा करनी पड़ी। उस क्षमाके अनुसार गेरीवाल्डीभी कारागारसे मुक्त हो गया। ऐसा कठिन क़ैदी शायद आज तक किसी सरकारने नहीं-किया होगा। देशभक्त क़ैद हो, और वहभी देशभक्त द्वारा। फिर क़ैदी भी कैसा? जिसके नाम पर हज़ारों लोग जान देनेको तय्यार हों। इस क़ैदीको छोड़ कर सचमुच पीडमौएटकी सरकारने अपने आपको धन्य माना। यह घटना १८६२ में हुई।



जीवनके अन्तिम दृश्य और दीप निर्वाण

"निर्वीरमुर्वीतलम्"

पृथ्वी वीर शून्य हो गयी।

क्या इस घटनासे यूरोपमें गेरीवाल्डीका गौरव कुछ कम हुआ? कई लेखकोंका ऐसा विचार है, किन्तु वह अशुद्ध विचार है। इस दुर्घटनाने उसे लोकमतमें और भी ऊँचा चढ़ा दिया, प्रजाके चित्तमें उसके लिये प्रेमभाव और भी बढ़ा दिया। केवल इटलीमें ही नहीं, अन्य देशोंमें उसकी स्वर्गीय देवताकी भाँति पूजा होने लगी।

इस पूजा-भावकी परीक्षाका समय भी शीघ्र ही आ गया। १८६४ की बसन्त ऋतुमें बहुतसे मित्रोंकी सलाहसे गेरीवाल्डीने इङ्गलैण्डकी यात्राका विचार किया। वह यात्रा मानो विजय की सवारी थी। गेरीवाल्डी अब साधारण पुरुष नहीं समझा

जाता था। वह सभ्य-संसारमें देशभक्ति, स्वतन्त्रता, शुद्धता और साहसका आदर्श समझा जाता था। सारा देश उसका स्वागत करनेके लिये तय्यार हो गया। जिन्होंने गेरीबाल्डीका इङ्गलैण्डमें और विशेषतया लन्दनमें स्वागत देखा, वे लिखते हैं कि ऐसा समारोह किसी राजा महाराजाके स्वागतमें नहीं देखा गया। जवान और बूढ़े, पुरुष और स्त्री, सभी उस स्वागतमें भाग लेते थे। प्रातःकालसे सायंकाल तक इटलीके स्वतन्त्रता-दाताका समय अभिनन्दन पत्र लेने और उनके उत्तर देनेमें बीत जाता था। लोगोंके जोशोंका कोई ठिकाना न था।

गेरीबाल्डीका पहले विचार था कि वह सारे देशमें दौरा लगावे, किन्तु इस समय अंग्रेजी-सरकार उसके इस शानदार स्वागतसे घबरा गयी। सरकारको यह भी भय हुआ कि शायद कोई राजनीतिक दल गेरीबाल्डीके नामका फ़ायदा उठाना चाहता है। चुपकेसे गेरीबाल्डीको सुझा दिया गया कि वह अपना दौरा बन्द करदे तो अच्छा है।

उसे यह सलाह नापसन्द नहीं थी। उसका स्वास्थ्य अब दिनों दिन अवनतिपर था। पिछले दिनोंके कष्टों और उपवासोंका प्रभाव शरीरपर अब पड़ने लगा था। इंग्लैण्डमें अभिनन्दनोंकी भरमारके मारे वह तंग हो रहा था। सरकार-की इस सूचनाको उसने अपने लिये पुण्यागत समझा, और बीचमें ही यात्रा छोड़कर कपरराकी ओर प्रयाण कर दिया।

जीवनके अन्तिम दृश्य और दीप-निर्वाण

वहाँ आकर गेरीबाल्डीको सेहत ठीक करनेके लिये बहुत समय लगा। उसका स्वास्थ्य बहुत ही गिर गया था। वर्ष का अन्त होते होते उसका स्वास्थ्य ठीक हो गया। कुछ दिनों फिर इटलीके जीवनमें समय आया जब जातिको गेरीबाल्डीकी आवश्यकता हुई। १८६६ का जर्मनी और आस्ट्रियाका युद्ध प्रसिद्ध है। इस युद्धमें प्रशियाकी सेनाओंने आस्ट्रियाका मान मर्दन करके जर्मन-साम्राज्यकी नीव डाली थी। इटलीने प्रारम्भसे ही प्रशियाका पक्ष लिया था। युद्ध प्रारम्भ होनेपर राजा विक्टर इम्मैनुअलने गेरीबाल्डीको बुलाया और एक वृहती सेना देकर आस्ट्रियापर धावा करनेके लिये रवाना किया। यह युद्ध पूर्व युद्धों जैसा नहीं था। इसमें गेरीबाल्डीकी नयी बनी हुई स्वयंसेवक-सेनाओंको आस्ट्रिया की सुशिक्षित-सेनाओंका सामना करना था। कार्यक्रम ऐसा बनाया गया था कि आस्ट्रियापर जल और स्थल दोनों भागोंसे धावा किया जाय। धावा किया गया, परन्तु जलीय धावेको भारी अकृतकार्यता हुई। इस अकृतकार्यताने स्थलीय धावेपर भी प्रभाव डाला और गेरीबाल्डीको इस धावेमें सफलता न हुई। उसके एक और घाव लग गया, उसने भी युद्धकी सफलतामें रुकावट डाली।

गेरीबाल्डीको कृतकार्यता न हुई, परन्तु इटलीका कार्य सिद्ध होगया। प्रशियाने सैडोवाके मैदानमें आस्ट्रियाको

ऐसा पछाड़ा कि आस्ट्रियाको जर्मनीकी गद्दी तो छोड़नी ही पड़ी, साथ वेनिस भी इटलीको वापिस देना पड़ा।

इस लड़ाईमें गेरीवाल्डीकी असफलताका कारण क्या था? कारण यह था कि शेरको जंज़ीरोंमें बांधकर हिरनोंपर छोड़ा गया था। अबतक गेरीवाल्डी हमेशा स्वतन्त्रतासे युद्ध करता रहा था। यह पहला ही अवसर था कि उसे युद्ध विभागके मन्त्रीकी आज्ञामें रहकर युद्ध करना पड़ा। वह अपनी इच्छाके अनुसार काम नहीं कर सकता था। वह एक नगरकी ओर बढ़ता था, तो मन्त्रीकी आज्ञा उसे दूसरी ओर भगा देती थी। वह आक्रमण करना चाहता था, तो युद्ध सचिव उसके रक्षापरक होनेका निर्देश करता था। इस पराधीनतामें स्वतन्त्रतासे लड़ना गेरीवाल्डीके लिये सम्भव नहीं था। और सेनापति गेरीवाल्डीसे ईर्ष्या करते थे और उसके सिपाहियोंके भोजनादि तकका प्रबन्ध अच्छी तरह नहीं किया गया था।

इस युद्धके पीछे कुछ दिन विश्राम करके अनथक गेरी-वाल्डी नयी धुनमें मस्त हो गया। उसका पुराना रोमका सपना जाग उठा और बहुत सी स्वयंसेवक-सेना तय्यार करके उसने १८६७ में रोमपर धावा करनेका विचार किया। गेरीवाल्डीके आह्वानपर सहस्रों इटालियन वीर एकत्र होने लगे। रोमका नाम इटलीके देशभक्तोंके लिये जादूका असर रखता था। उसके पानेके लिये वीरोंकी भुजाएँ फड़क उठती

थीं। इतना ही नहीं कि केवल आवेश मात्र था, राजनीतिक परिणामोंकी दृष्टिसे भी रोमका शेष इटलीसे मिलना आवश्यक था। गेरीवाल्डीकी घोषणासे रोमपर आक्रमण करनेके लिये एक महती सेना तय्यार हो गयी।

इधर पीडमौएटकी राजसभा फिर घबराहटमें पड़ी। फ्रांसने यद्यपि अपने सिपाही रोमसे हटा लिये थे, पर उसे यह सह्य नहीं हो सकता था कि इटलीका जातीय झण्डा रोमपर फहराए। नैपोलियनके दमख़म अभी बाक़ी थे और वह अपनी प्रधानताको नहीं छोड़ सकता था। अभी तक नैपोलियन और विक्टर इम्मैनुअलकी नाममात्रकी सन्धि भी विद्यमान थी, टूटी नहीं थी। प्रधान-सचिव रैटज़ीको फिर पुराना अपराध करना पड़ा। गेरीवाल्डी क़ैद कर लिया गया और कपरराके द्वीपमें नज़रबन्द कर दिया गया। इसके पीछे उसका बड़ा पुत्र और अन्य सेनापति उसके कार्यको करते रहे। उधर वह भी कपररामें शान्त नहीं था। चार जहाज़ रात दिन कपररापर पहरा देते थे, तिसपर भी उसके निकाले हुए घोषणापत्र इटली द्वीपके कोने कोने तक पहुँच कर लोगोंको रोम जीतनेके लिये उत्साहित कर रहे थे। इसपर सरकार प्रसन्न थी, पर हवाको कौन रोक सकता है। एक दिन समाचार मिला कि रातके अँधेरेमें एक छोटी सी नौकापर चढ़कर गेरीवाल्डी निकल भागा है और स्वयंसेवकोंकी सेनाको रोमकी ओर बढ़ा रहा है।

बहुतोंका तो ख्याल है कि सरकारने यह काम जानबूझ कर किया था। सेनापतिको क़ैद करके अपनी उत्तरदायिता भी कम कर दी, और उसे चुपकेसे भागनेका अवसर देकर धावा भी करा दिया।

इधर धावेमें भी गेरीवाल्डीको कृतकार्यता नहीं हुई। कारण वही था। फ्रांसके सिपाही सुशिक्षित थे और उनके पास नये प्रकारकी बन्दूकें थीं, जिनका सामना इटलीकी पुराने ढरेंकी बन्दूकें नहीं कर सकती थीं। प्रारम्भ तो अच्छे लक्षणोंसे हुआ, किन्तु शीघ्र ही स्वयंसेवक सेनाका मार्ग रुक गया। फ्रेंच सेनाने उन्हें थोड़ा पीछे हटनेपर मजबूर किया। लोगोंके कहनेपर उसने यही उत्तर दिया कि "अब मेरे सामने दो ही चीज़ें हैं, रोम या मृत्यु, अब इटलीके वीरोंकी कब्रें रोमकी दीवारोंके नीचे बनेंगी" पीछे हट कर उसने मैंटना पर युद्ध करनेका निश्चय किया। यह युद्ध बड़ा प्रसिद्ध है पोपकी और फ्रांसकी सेनाएं एक ओर थीं, और इटलीकी स्वयंसेवक सेनाएं दूसरी ओर थीं। उनसे पीछे पीडमौण्टकी सेनाएं उनका रास्ता रोकनेके लिये चली आ रही थीं। गेरीवाल्डी ऐसी कठिन दशामें था कि एक जबर्दस्त जीत ही उसे बन्धनोंसे मुक्त करा सकती थी। गेरीवाल्डीने इस समय युद्धमें बारूद और सिपाहियोंके व्ययमें कोई संकोच नहीं किया। इतिहास साक्षी है कि उस लड़ाईमें स्वयंसेवक शेरोंकी भाँति लड़े, किन्तु शत्रु

की सेनाएं बहुत थीं और उसका बारूद अपरिमित था। बड़ा घोर संग्राम हुआ। इटालियन वीरोंने संगीनोंके कई धावे किये, किन्तु फ्रांसकी नयी बन्दूकोंने हत्याका भयंकर कार्य करके उनकी एक न चलने दी। मैदान शत्रुके हाथ रहा, हज़ारों इटलीके वीर योद्धा मण्टनामें खेत रहे। जब गेरीवाल्डीकी सेनाएं वहाँसे पीछे हटीं तब उसके पास बारूदका एक थैला भी नहीं था और वीरतम सेना समाप्त सी हो चुकी थी।

अब कोई आशा न रही। इधर शत्रु और उधर राजकीय-सेनाएँ, गेरीवाल्डीके लिये कोई उपाय नहीं रहा। आगे बढ़ने या लड़ सकनेकी कोई आशा न देखकर गेरीवाल्डीने सेनाओंको तितर-बितर कर दिया और स्वयं फ़्लोरन्स जाने वाली रेलमें बैठ गया। रास्तेमें वह फिर बन्दी बना लिया गया।

विक्टर इम्मैनुअलने गेरीवाल्डीको रोम जानेसे रोका था, बन्दी भी किया था, किन्तु उसका देशभक्त-हृदय मैण्टनाकी हारको और वहाँ मरे हुए इटालियन वीरोंको न भुला सका। उसे असीम दुःख हुआ। मैण्टनाकी हारसे चाहे उसका कोई सम्बन्ध नहीं, तो भी वीर और सच्चा इम्मैनुअल उसका सच्चा वृत्तान्त सुनकर सचमुच रो पड़ा और उस समय उसने जो पत्र नैपोलियनको लिखा वह स्मरणीय रहेगा। उसने लिखाः—

"इटलीके दिलमें फ़ांसके पिछले कार्योंकी जो कुछ भी अच्छी सम्मतियाँ थीं, मैएटनाकी घटनाने उन्हें दूर कर दिया है। अब हमारी सरकारके लिये फ़ांससे मित्रता रखना सम्भव नहीं है। मैएटना पर फ़ांसकी चसपोर्ट बन्दूक़ने उस मित्रतापर घातक चोट लगा दी है।"

उस दिनसे विक्टर इम्मैनुअल और नैपोलियनकी कोई मित्रता नहीं रही।

जो कार्य इतने आश्रयसे नहीं हुआ, वह दैवेच्छासे हो गया। १८७० में फ़ांस और जर्मनीमें वह भयंकर संग्राम हुआ, जिसने १६१४ के सर्वसंहारी-संग्रामकी नींव डाली थी। उस समय फ़ांसकी हार हुई। उसमें सामर्थ्य नहीं था कि राजा विक्टर इम्मैनुअलके शानदार रोम-प्रवेशके जुलूसको रोक सकता। विना एक भी गोली चलाए १८८० में रोम इटलीकी राजधानी बन गया।

रोमकी इस अन्तिम-विजयमें गेरीवाल्डीका कोई भाग नहीं था। हाँ, युद्धमें नैपोलियनके क़ैदी हो जानेपर फ्रेंच-रिपब्लिककी सहायता करना उसने अपना कर्तव्य समझा और स्वयंसेवकोंकी एक सेना लेकर जर्मन लोगोंको वौस्जसमें खूब तंग किया। जर्मनीकी जीत हो गयी, पर गेरीवाल्डीने फ़ांसकी नयी सरकारका धन्यवाद कमा लिया।

दीपनिर्वाण

अब गेरीवाल्डीको थकान और बीमारियोंने घेर लिया। कभी २ उसे गठियाके आक्रमण भी होने लगे। वह बहुत समय तक कपररामें ही रहता था, परन्तु इटलीकी राजनीतिक उन्नति की चालसे वह कभी अनभिज्ञ नहीं रहता था। कभी २ राजप्रतिनिधि-सभामें भी जाता था, परन्तु उसका काम प्रायः विद्यमान शासनकी आलोचना करना ही होता था। धीरे २ वह उसके भी अयोग्य होने लगा और चलना फिरना भी उसके लिये कठिन होने लगा।

घास आते आते आखिर अन्तिम दिन भी आगया। १८८२-के जून मासकी दूसरी तारीख़ थी, साढ़े आठ बजेका समय था। उस समय बड़ी शान्ति और धीरताके साथ नयी इटलीके जन्मदाता, अपने समयके पूज्यदेव और स्वतन्त्रतापर प्राण-अर्पण करने वाले स्वाधीनता-भक्त गेरीवाल्डीने इस भूलोकको छोड़ कर परलोककी यात्रा की।

गेरीवाल्डी भूमिपर आया और चला गया। उसने बड़ी विजय प्राप्तकी और कई बार परास्त भी हुआ। उसने कीर्ति भी पायी और कहीं २ लोगोंने उसे अपकीर्ति भी दी। वह देवतुल्य पूजा गया और अपने ही देशवासियों द्वारा उसकी अवहेलना भी सहनी पड़ी। यह सत्य

दैवी नियमके अनुसार समय पाकर शरीरका घर छोड़ दिया किन्तु इन सब अनुकूल बातोंके मध्यमें एक स्थिर बात विद्यमान रही। गेरीवाल्डी अपने जीवनसे एक दृष्टान्त स्थापित कर गया, जो युग युगान्तरोंमें भी भुलाया नहीं जायगा। किसी भी देश और किसी भी समयके सच्चे पुरुष उसके जीवनको पढ़ेंगे और चतुराईसे युक्त सत्यताका, साहससे युक्त बुद्धिमत्ताका और सबसे बढ़कर स्वार्थत्यागसे युक्त ज्वलन्त देशभक्तिका पाठ पढ़ेंगे। जब तक संसारमें मनुष्यताका और दिव्यशक्तियोंका आदर है, तब तक गेरीवाल्डीका नाम आदर और सम्मानसे लिया जायगा। जब तक आकाशमें चाँद और सूर्य प्रकाश दे रहे हैं, तबतक मनुष्य-सूर्य गेरीवाल्डीका यश धूमिल नहीं हो सकता।

इति ओ३म्

खूब
फ़ांसकी नधा। सन..